SHARMA HARDWARE
Sharma Gali, SJ Road
Athgaon, Guwahati-01
98648-02947
70025-06581



E-Paper : www.goodluckpublications.com, • www.vbslive.in
हिंदी दैनिक
गुवाहाटी, नई दिल्ली, शिमला और जम्मू से एकसाथ प्रकाशित

राष्ट्र निर्माण में प्रयत्नशील

# विकसित भारत समाचार

वर्ष : 09 | अंक : 326 | गुवाहाटी | रविवार, 25 जून, 2023 | मूल्य : 10 रुपए | पृष्ठ : 12 | VIKSIT BHARAT SAMACHAR | Regd. RNI No. ASSHIN/2014/



परिसीमन प्रस्तावों पर गठबंधन के सहयोगियों के साथ-साथ विपक्षी... पेज 3
मोदी को बाइडन ने उपहार में दी खास टी शर्ट, लिखा है द फ्यूचर इज एआई ... पेज 4
कुशीनगर में स्मृति ईरानी ने गिनाईं नौ साल की उपलब्धियां पेज 5
विपक्ष ने माना, तीसरी बार प्रधानमंत्री बनेंगे मोदी : दलाल पेज 8


## नुमुलीगढ़ और गोहपुर के बीच बनेगी पहली अंडर वाटर सुरंग : सीएम

**गुवाहाटी।** मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने शनिवार को कहा कि असम सरकार 6,000 करोड़ रुपए की लागत से नुमुलीगढ़ और गोहपुर के बीच पहली पानी के नीचे सुरंग का निर्माण करने जा रही है। ब्रह्मपुत्र के नीचे बनने वाली सुरंग के टेंडर अगले महीने खुलेंगे। सीएम शर्मा ने कहा कि असम की पहली अंडरवाटर सुरंग नुमुलीगढ़ और गोहपुर के बीच 6000 करोड़ रुपए की लागत से बनाई जाएगी और अगले महीने टैंडर खुलेंगे। गुरुवार को सीएम शर्मा ने शोणितपुर जिले में छह नवनिर्मित चाय बागान मॉडल स्कूलों का उद्घाटन किया। जिन चाय बागानों में मॉडल स्कूलों का उद्घाटन किया गया उनमें ढेकियाजुली में अरुण चाय बागान, रांगापारा में आदाबारी और सोनाबील चाय बागान, बेहाली में केटला और जिंगिया चाय बागान और जिले के बिश्वनाथ निर्वाचन क्षेत्र के पामोई चाय बागान भी शामिल हैं। सीएम शर्मा ने कहा कि भारत की आजादी के 75 वर्षों में राज्य के चाय बागान क्षेत्रों में केवल प्राथमिक विद्यालय और सीमित संख्या में एमई स्कूल स्थापित किए गए थे। उन्होंने उल्लेख किया कि चाय बागान क्षेत्रों में स्कूलों की अनुपलब्धता के कारण छात्रों को अपनी पढ़ाई छोड़नी पड़ी, जिससे स्कूल छोड़ने की दर में वृद्धि हुई। चाय बागान क्षेत्रों में हाई स्कूल की अनुपलब्धता के कारण, कई छात्रों ने बीच में ही स्कूल छोड़ दिया, जिसके कारण ड्रॉप-आउट दर में वृद्धि हुई। इसलिए, राज्य सरकार ने 2-3 चाय बागानों को कवर करते हुए एक हाई स्कूल स्थापित करने का निर्णय लिया। मुख्यमंत्री ने कहा कि पिछले साल शोणितपुर जिले में कई चाय बागान मॉडल स्कूल खोले गए थे। सीएम शर्मा ने यह भी कहा कि इनमें से प्रत्येक संस्थान में बड़ी संख्या में छात्रों ने दाखिला लिया। चाय बागान क्षेत्रों के छात्रों की उन्नति के लिए राज्य सरकार द्वारा उठाए गए विभिन्न कदमों को रेखांकित करते हुए मुख्यमंत्री ने बताया कि असम के मेडिकल कॉलेजों में अध्ययन के लिए चाय समुदाय के छात्रों के लिए 30 सीटें आरक्षित की गई हैं। उन्होंने कहा कि चाय बागान समुदाय की छात्राओं के लिए नर्सिंग पाठ्यक्रमों की पढ़ाई के लिए सीटें भी आरक्षित की जाएंगी।

## असम में बाढ़ का कहर, 1,118 गांव के लोग प्रभावित

**गुवाहाटी ( हि.स. )।** असम में बाढ़ की स्थिति में धीरे-धीरे सुधार होता नजर आ रहा है। राज्य आपदा प्रबंधन विभाग के मुताबिक बाढ़ प्रभावित 22 जिलों की संख्या घटकर आज 15 हो गई है। बाढ़ से 4 लाख 07 हजार 771 से अधिक नागरिक प्रभावित हुए हैं। राज्य में ब्रह्मपुत्र नद तेजपुर और निमातीघाट में खतरे के निशान से ऊपर बह रही है। कई नदियों के तटबंध टूट गए और सड़कों को भी नुकसान हुआ है। प्रशासन बाढ़ प्रभावित लोगों को राहत पहुंचाने के लिए जरूरी कदम उठा रहा है। असम राज्य आपदा प्रबंधन विभाग की ओर से आज बाढ़ प्रभावित जिलों के आंकड़े जारी किए गए हैं। बाढ़ से 15 ग्रामीण और एक शहरी इलाका प्रभावित है। बाढ़ प्रभावित ग्रामीण जिलों में बजाली, बाक्सा, बरपेटा, चिरांग, दरंग, धुबड़ी, डिब्रूगढ़, गोलाघाट, जोरहाट, कामरूप (ग्रामीण), लखीमपुर, नगांव, नलबाड़ी और तामुलपुर शामिल हैं। वहीं दरंग जिले का शहरी क्षेत्र में भी बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो गई है। बाढ़ से 42 राजस्व सर्किल अंतर्गत 1,118 गांवों के 4 लाख 07 हजार 771 लोग प्रभावित हुए हैं। बाढ़ से कुल 8469.56 हेक्टेयर फसल प्रभावित हुई है। बाढ़ प्रभावितों के लिए कुल 101 राहत शिविर स्थापित किए गए हैं, जबकि 119 राहत वितरण केंद्र खोले गए हैं। राहत शिविरों में कुल 81,353 लोग आश्रय लिए हुए हैं। बाढ़ से आज तीन व्यक्तियों की मौत हो गई। बाढ़ से राज्य के कुल 410055 पशु धन प्रभावित हुए हैं। इनमें बड़े पशुओं की कुल संख्या 201880 और छोटे पशुओं की 144890 है जबकि 63285 कुक्कुट भी प्रभावित हुए हैं। बाढ़ के पानी में कुल 964 कुक्कुट बह गए हैं। आज बाक्सा जिले में तीन कच्चा घर पूरी तरह से तबाह हो गया। आंशिक रूप से 290 कच्चा घर तबाह हो गए। जिसमें बाक्सा ने 183,

-शेष पृष्ठ दो पर

## मणिपुर : उपद्रवियों ने मंत्री के गोदाम में लगाई आग

**इंफाल।** मणिपुर में 3 मई को भड़की हिंसा के बाद से राज्य में शांति बहाल करने की तमाम कोशिशें फेल होती नजर आ रही है। राज्य में हिंसा थमने का नाम नहीं ले रही है। कई इलाकों से गोलीबारी और आगजनी की खबरें सामने आ रही हैं। इस बीच अब एक मंत्री के प्राइवेट गोदाम में आग लगा दी गई है। जानकारी के मुताबिक शनिवार को उपद्रवियों ने पूर्वी इंफाल जिले के चिंगारेल में मणिपुर के मंत्री एल सुसिंद्रो के निजी गोदाम में आग लगा दी। दमकल गाड़ियों ने आग पर जबतक काबू पाया, तब तक पूरा गोदाम जलकर खाक हो चुका था। इसके अलावा शुक्रवार रात को भी उपभोक्ता एवं खाद्य मामलों के मंत्री की एक अन्य संपत्ति और उसी जिले के खुरई में उनके आवास में आग लगाने की कोशिश की गई थी। मणिपुर में तनावपूर्ण स्थिति को देखते हुए गृह मंत्री अमित शाह ने सर्वदलीय बैठक बुलाई है। इसमें टीएमसी और एनसीपी के प्रतिनिधि भी शामिल होंगे। बता दें, मणिपुर में भड़की हिंसा को 50 दिन से ज्यादा बीत गए हैं लेकिन अभी भी कई इलाकों में

-शेष पृष्ठ दो पर

## मणिपुर हिंसा : सर्वदलीय बैठक संपन्न, सीएम को हटाने की मांग उठी

**नई दिल्ली।** मणिपुर में मौजूदा हालात पर चर्चा के लिए केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शनिवार को सर्वदलीय बैठक बुलाई थी। ये बैठक संपन्न हो गई है, जो 3 घंटे चली है। इस बैठक में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा), कांग्रेस, तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी), राजद (आरजेडी), वामदलों समेत विभिन्न राजनीतिक दलों ने हिस्सा लिया। इस बैठक कई मुद्दों पर बातचीत हुई है। विपक्ष ने राज्य के मौजूदा सीएम एन बीरेन सिंह को हटाने की मांग उठाई है, जबकि कई विपक्षी नेताओं ने प्रदेश में ऑल पार्टी डेलिगेशन भेजने के लिए कहा है। अमित शाह ने मई की शुरुआत में हिंसाग्रस्त राज्य की अपनी 4 दिनों की यात्रा के दौरान शांति की अपील की थी और उपद्रवियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की चेतावनी दी थी। बैठक खत्म होने के बाद मणिपुर के प्रभारी व भाजपा प्रवक्ता संबित पात्रा ने बताया है

-शेष पृष्ठ दो पर

पूर्वांचल केশরী
(असमीया दैनिक)
PURVANCHAL KESARI
(ASSAMESE DAILY)
GOOD LUCK PUBLICATIONS
House No. 30, D. Neog Path,
ABC, Guwahati - 781005
Mob: 94350 14771, 97070 14771



door graph
Premium Quality Hinges
S.S. Traders
Suppliers in : All kinds of Door Fittings Modular Kitchen & Accessories, etc.
D. Neog Path, Near Dona Planet ABC, G.S. Road, Guwahati - 05
97079-99344


## मुर्शिदाबाद में विस्फोट एक की मौत

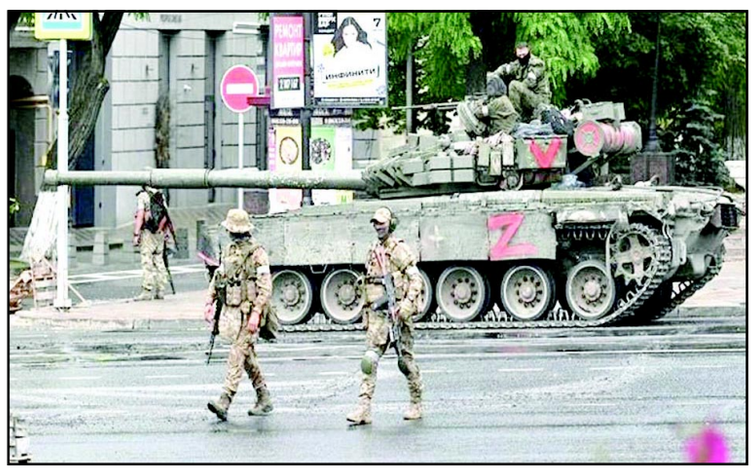



**कोलकाता।** मुर्शिदाबाद जिले में शनिवार को आम के एक बाग में देसी बम विस्फोट होने से एक व्यक्ति की मौत हो गई और तीन अन्य घायल हो गए। पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि एक अन्य घटना में मुर्शिदाबाद के रानीनगर में तृणमूल और कांग्रेस कार्यकर्ताओं के बीच झड़प के दौरान देसी बम फेंके जाने से तीन लोग मामूली रूप से घायल हो गए। पुलिस ने बताया कि विस्फोट में गंभीर रूप से घायल अलीम शेख (26 वर्षीय) को स्थानीय अस्पताल ले जाया गया जहां उसे मृत घोषित कर दिया गया। पुलिस ने बताया कि तीन

-शेष पृष्ठ दो पर

## पुतिन की प्राइवेट आर्मी ने ही किया रूस पर हमला



**मॉस्को।** रूस के रक्षा मंत्री को पद से हटाने के विरोध में सशस्त्र विद्रोह का आह्वान करने वाले निजी सेना वैग्नर के प्रमुख येवेनी प्रीगोझिन ने शनिवार सुबह दावा किया कि वह और उनके लड़ाके यूक्रेन की सीमा पार कर रूस के एक अहम शहर पहुंच गए हैं। प्रीगोझिन ने एक वीडियो पोस्ट किया, जिसमें वह रोस्तोव-ओन-डॉन में स्थित रूसी सैन्य मुख्यालय में खड़े नजर आ रहे हैं। यह मुख्यालय यूक्रेन में युद्ध पर नजर रखता है। प्रीगोझिन ने दावा किया कि उनके बलों ने शहर में स्थित सैन्य प्रतिष्ठानों को अपने कब्जे में ले लिया है, जिसमें एक हवाई पट्टी भी शामिल है। सोशल मीडिया पर जारी एक अन्य वीडियो में दिख रहा है कि सड़कों पर सैन्य वाहन और

-शेष पृष्ठ दो पर

### सैन्य विद्रोह को कुचल देंगे : पुतिन

**मॉस्को।** रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने निजी सेना वैग्नर ग्रुप के प्रमुख येवेनी प्रीगोझिन द्वारा सशस्त्र विद्रोह के ऐलान को *विश्वासघात* और रूस की *पीठ में छुरा घोंपने* वाला कदम करार दिया। टेलीविजन पर प्रसारित राष्ट्र के नाम संबोधन में पुतिन ने रूस की रक्षा करने का संकल्प लिया। उन्होंने यह भी कहा कि विद्रोह की साजिश रचने वाले सभी लोगों को कठोर सजा भुगतनी होगी। सशस्त्र बलों और अन्य सरकारी एजेंसियों

-शेष पृष्ठ दो पर

## आतंकवाद के खिलाफ एकजुट हुए भारत और अमेरिका

**नई दिल्ली।** राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने शुक्रवार को 13 पाकिस्तानी नागरिकों के खिलाफ आरोप पत्र दायर किया, जिनमें से 10 को पिछले साल गिरफ्तार किया गया था। ये सभी आतंकी भारत में आतंकवादी गतिविधियों को वित्त पोषित करने के लिए गुजरात तट के माध्यम से पाकिस्तान से हथियारों और प्रतिबंधित दवाओं की तस्करी की साजिश में शामिल थे। पिछले साल दिसंबर में ओखा तट पर एक मछली पकड़ने वाली नाव से 40 किलोग्राम ड्रग्स (हेरोइन), छह विदेशी निर्मित पिस्तौल, छह मैगजीन और 120 9मिमी जीवित कारतूस, दस्तावेज, पाकिस्तान पहचान पत्र, मोबाइल फोन और पाकिस्तानी मुद्रा जब्त करने के साथ 10 पाकिस्तानी

-शेष पृष्ठ दो पर

### महंगाई को लेकर आरबीआई की रिपोर्ट पर जवाब दे सरकार : खड़गे

**नई दिल्ली।** कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा है कि सरकार आसमान छूती महंगाई पर पर्दा डालने को लेकर तरह-तरह के बहाने बनाती रही है लेकिन अब खुद रिजर्व बैंक ने महंगाई को लेकर जो प्रतिक्रिया दी है उस पर मोदी सरकार को जवाब देना चाहिए। खड़गे ने कहा कि सरकार के मंत्री कहते हैं कि महंगाई दिखती नहीं है और सरकार भी महंगाई को लेकर बहानेबाजी करती रही है लेकिन अब सरकार को बताना चाहिए कि क्या महंगाई

-शेष पृष्ठ दो पर

## अब रात में एसी चलाने पर देना होगा ज्यादा बिल, सरकार ने नए टैरिफ प्लान को दी मंजूरी



**नई दिल्ली।** अप्रैल, 2024 के बाद अगर आप रात में एयर कंडीशनर ज्यादा चलाते हैं तो आपको ज्यादा बिजली का बिल देना होगा। हालांकि दिन में बिजली का बिल कम आएगा, क्योंकि दिन में सौर ऊर्जा चालित बिजली की आपूर्ति की जाएगी। विद्युत मंत्रालय द्वारा तैयार नए बिजली टैरिफ को सरकार ने शुक्रवार को मंजूरी प्रदान कर दी। इसके तहत दिन में बिजली की दर मौजूदा कीमत से 20 फीसदी तक कम होगी, लेकिन रात में (पीक आवर में) बिजली की दर 10 से 20 फीसदी तक ज्यादा होगी। बिजली (ग्राहकों के अधिकार) नियम, 2020 में संशोधन करते हुए दिन के समय (टीओडी) टैरिफ व्यवस्था लागू की गई है। बिजली मंत्री आरके सिंह ने

-शेष पृष्ठ दो पर

### सुप्रभात

*किसी लक्ष्य की सिद्धि में कभी शत्रु का साथ न करें।*
– **आचार्य चाणक्य**

### न्यूज गैलरी

## दो दिवसीय दौरे पर काहिरा पहुंचे पीएम

**नई दिल्ली।** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तीन दिवसीय अमेरिका की राजकीय यात्रा के बाद दो दिवसीय यात्रा पर मिस्र की राजधानी काहिरा पहुंच चुके हैं। मिस्र के प्रधानमंत्री ने पीएम मोदी को एयरपोर्ट पर रिसीव किया। प्रधानमंत्री को गार्ड ऑफ ऑनर दिया जाएगा। मोदी राष्ट्रपति अब्देल फतह अल-सीसी के निमंत्रण पर मिस्र की दो दिवसीय राजकीय यात्रा कर रहे हैं। यह 1997 के बाद किसी भारतीय प्रधानमंत्री की पहली आधिकारिक मिस्र यात्रा होगी। मोदी राष्ट्रपति बाइडन और प्रथम महिला जिल बाइडन के

-शेष पृष्ठ दो पर

## समाज परिवर्तन और राष्ट्र निर्माण ही संघ का ध्येय : प्रो. व्यास

**नई दिल्ली ( हि.स. )।** दिल्ली के शाहदरा जिला स्थित शंकर नगर के आर.ए. गीता स्कूल में संघ शिक्षा वर्ग के प्रथम वर्ष के प्रशिक्षण शिविर का आज समापन हो गया। समापन कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के तौर पर संघ के उत्तर क्षेत्र के संघचालक प्रोफेसर सीताराम व्यास ने अपने विचार रखे। समापन कार्यक्रम में जानी-मानी पत्रकार एवं टीवी एंकर ऋचा अनिरुद्ध भी मुख्य अतिथि के तौर पर शामिल हुईं। इस अवसर पर प्रो. सीताराम व्यास ने कहा कि संघ के दिल्ली प्रांत द्वारा आयोजित इस प्रशिक्षण वर्ग में भाग लेने वाले स्वयं सेवक राष्ट्र एवं समाज की उन्नति के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। उन्होंने कहा कि आज देश आजादी की 75 वीं वर्षगांठ मना रहा है। देश को आजादी दिलाने वाले क्रांतिवीरों लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी, सुभाषचंद्र बोस, लाला लाजपत राय और सरदार पटेल जैसे लोगों ने अपना संपूर्ण जीवन देकर इस राष्ट्र को स्वतंत्र कराया। उन्होंने कहा कि देश को वैभवशाली और उन्नति की ओर ले जाने का दायित्व केवल राजनेताओं और प्रशासनिक अधिकारियों की ही नहीं है बल्कि देश की उन्नति और संपन्नता के लिए प्रत्येक नागरिक को व्यवहारिक रूप से काम करना होगा। प्रो. सीताराम ने कहा कि दुनिया के बहुत से देश हमारे बाद स्वतंत्र हुए। मगर वह आज हमारे से अधिक संपन्न और शक्तिशाली हैं। द्वितीय विश्व युद्ध में अणुबम के हमले से बिखरने वाला जापान आज

-शेष पृष्ठ दो पर

## लव जिहाद को राजनीतिक सरंक्षण मिलने से राष्ट्र हो रहा कमजोर : सुधांशु त्रिवेदी



**जोधपुर( हि.स. )।** भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी ने लव जिहाद के बढ़ते प्रकरणों पर कहा कि ऐसे मामलों मे राजनीतिक संरक्षण मिलने के कारण राष्ट्र कमजोर हो रहा है। वे शनिवार को यहां सर्किट हाउस में पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। उन्होंने कहा कि लव जिहाद या रोमियो जिहाद संघ या भाजपा का शब्द नहीं है। यह सबसे पहले केरल में देखने सुनने में आया था। शाहजहां बनाम केरल स्टेट मामले का हवाला देते हुए उन्होंने बताया कि टारगेट योजनाबद्ध तरीके से किया जाता है। यह

-शेष पृष्ठ दो पर

**CLASSIFIED**

For all kinds of classified advertisements please contact

**97070-14771**
**86382-00107**

**MURTI AVAILABLE**

Available all kinds of Marble & White Metal Murties, Ganesh Laxmi, Radha Krishna, Bishnu-Laxmi, Hanuman, Maa Durga, Saraswati, Shivling, Nandi etc. **ARTCLE WORLD,** S-29, 2nd Floor, Shoppers Point, Fancy Bazar, Guwahati-01, **Ph. : 94350-48866, 94018-06952**

# तेरापंथ महिला मंडल, गुवाहाटी ने किया *मंजिलें* कार्यशाला का आयोजन



**गुवाहाटी ( विभास )।** अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल गुवाहाटी द्वारा मंजिलें कार्यशाला का आयोजन साध्वी श्री स्वर्णरेखा के सानिध्य में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से किया गया। महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण का सगानकिया गया महिला मंडल के पदाधिकारियों द्वारा एक स्वागत गीत के माध्यम से महामंत्री मधु देरा सरिया का स्वागत किया गया। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडलकी महामंत्री मधु देरासरीया के अध्यक्षता में यह कार्यशाला का आयोजन किया गया। इन्होंने अपने वक्तव्य में मंजिल के बारे में बहुत ही अच्छे ढंग से बताया और उन्होंने कहा कि जिनके हौसले बुलंद होते हैं वह अपने मंजिल को पा ही लेते हैं। साध्वी श्री ने फरमाया की एक्टिव वह होता है जो स्वयं अपने उस मंजिल की ओर जाना चाहता है जो नाम के लिए नहीं काम के लिए चलेंगे तो नाम अपने आप हो जाएगा। राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य सुचित्रा छाजेड़ एवं बबीता भूतोड़िया की गरिमामय उपस्थिति रही। बबीता जी भुतोड़िया ने पॉजिटिविटी के बारे में अपने भाव को रखें एवं सुचित्रा जी छाजेड़ ने मंजिल को पाने के लिए कुछ आयाम बताएं और हमें समझाया। सभा के अध्यक्ष बजरंग सुराणा ने इस कार्यशाला की भूरी भूरी प्रशंसा की। युवक परिषद के अध्यक्ष मनीष जी सिंघी ने फुलाम गमछा से महामंत्री महोदय का स्वागत एवं सम्मान किया। अध्यक्ष मंजू भंसाली ने भी सभी पदाधिकारियों के साथ फुलाम गमोछा से स्वागत एवं सम्मान किया। जैन समाज के श्रावक ने भी अपने भावों को व्यक्त किए। इस कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री सुशीला मालू ने किया बहनों और भाइयों की सराहनीय उपस्थिति से यह कार्यशाला सफल हुई संगठन मंत्री वनिता सुराना ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया। इस आशय की जानकारी प्रचार प्रसार मंत्री श्वेता सिंघीने दी।

# मणिपुर हिंसा को लेकर नहीं सुनी गई उनकी पूरी बात : इबोबी

**नई दिल्ली ( हि.स. )।** मणिपुर के पूर्व मुख्यमंत्री ओकराम इबोबी सिंह ने आरोप लगाया कि गृह मंत्री अमित शाह की ओर से शनिवार को दिल्ली में मणिपुर हिंसा के संबंध में बुलाई गई सर्वदलीय बैठक में उनकी पूरी बात नहीं सुनी गई। जब उन्होंने अपनी बात रखने के लिए अतिरिक्त समय मांगा तो उन्हें मना कर दिया गया। यह बात इबोबी ने शनिवार शाम को एक प्रेसवार्ता के दौरान कही। इबोबी ने कहा कि मणिपुर उनका गृह राज्य है। वो सर्वदलीय बैठक में अनेक मुद्दों पर बात रखना चाहते थे लेकिन उन्हें 7 से 8 मिनट ही दिया गया। उन्होंने कहा कि वह अपनी बात पूरी करने के लिए 05 मिनट और मांग रहे थे लेकिन उन्हें नहीं बोलने दिया गया। इस मुद्दे पर प्रेसवार्ता के दौरान कांग्रेस के वरिष्ठ नेता जयराम रमेश ने कहा कि इबोबी एक वरिष्ठ नेता हैं। वह लंबे समय तक मणिपुर के मुख्यमंत्री रहे। उन्हें मुद्दों की समझ है। ऐसे में उनकी पूरी बात सुनी जानी चाहिए थी। वह तीन बार मणिपुर के मुख्यमंत्री रहे हैं। रमेश ने कहा कि इबोबी ने कांग्रेस के शासनकाल में मणिपुर को विकास से जोड़ने का काम किया और राज्य में शांति कायम करने में अहम भूमिका निभाई है। रमेश ने कहा कि मणिपुर हिंसा पर अब प्रधानमंत्री मोदी को अपनी चुप्पी तोड़नी चाहिए और इस मुद्दे पर बात करनी चाहिए। रमेश ने कहा कि राज्य में एन बीरेन सिंह जबतक मुख्यमंत्री पद पर बने रहेंगे वहां शांति नहीं आएगी। ऐसे में उन्हें तुरंत पद से हटाया जाना चाहिए। उनको लेकर लोगों में असंतोष की भावना है। उल्लेखनीय है कि आज मणिपुर की हिंसा को लेकर दिल्ली में गृह मंत्री अमित शाह ने सर्वदलीय बैठक बुलाई । इस बैठक में भाजपा और कांग्रेस सहित 22 दलों ने हिस्सा लिया। मणिपुर में मैतेई समुदाय को एसटी श्रेणी में शामिल किए जाने की मांग के विरोध में तीन मई को रैली का आयोजन हुआ था। ऑल ट्राइबल स्टूडेंट्स यूनियन मणिपुर ने इस रैली का आयोजन किया था। रैली के दौरान हिंसा भड़क गई थी। अभी तक इस हिंसा में लगभग 100 लोगों के मारे जाने की सूचना है। हालांकि केंद्र और राज्य की ओर से हिंसा को रोकने के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे हैं।

# आरएलपी की रैली में शामिल होने जा रहे कार्यकर्ताओं की स्कॉर्पियो दूसरी कार से भिड़ी

**बाड़मेर ।** बाढ़मेर स्थित नेशनल हाईवे-68 पर शनिवार शाम को राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी की रैली में शामिल होने जा रहे कार्यकर्ताओं की स्कॉर्पियो शनिवार को सामने से आ रही कार से भिड़ गई। हादसे में कार सवार तीन लोगों की मौत हो गई। जबकि, दस लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। बालोतरा एएसपी सीताराम खोजा ने बताया कि एक कार गुजरात से बाढ़मेर की तरफ नेशनल हाईवे 68 पर जा रही थी। इसमें गुजरात के कुछ लोग सवार थे। स्कार्पियों बाढ़मेर से धोरीमन्ना की तरफ जा रही थी। मांगता गांव के पास ओवरटेक करने के दौरान स्कार्पियों सामने से आ रही कार से भिड़ गई। इससे कार में सवार तीन लोगों की मौत हो गई। कार सवार दो लोग घायल हुए हैं। मृतकों की शिनाख्त नहीं हुई है। कार में कुल पांच लोग सवार थे। स्कॉर्पियो में कुल आठ कार्यकर्ता सवार थे। सभी घायल हो गए हैं। घटना की जानकारी मिलने पर धोरीमन्ना थाने के एएसआई लाखाराम व बालोतरा एएसपी भी घटनास्थल पर पहुंचे। मौके पर अफरा- तफरी मच गई। आसपास के लोगों ने एंबुलेंस व प्राइवेट गाड़ी की मदद से सभी को धोरीमन्ना हॉस्पिटल पहुंचाया। डॉक्टरों ने तीन लोगों को मृत घोषित कर दिया। वहीं, दस गंभीर घायलों को प्राथमिक उपचार के बाद डिस्ट्रिक्ट हॉस्पिटल रेफर कर दिया है। एएसपी खोजा ने बताया कि ब्लैक स्कार्पियों व कार के बीच टक्कर हुई है। प्रारंभिक जानकारी मिली है कि आरएलपी की रैली में शामिल होने स्कॉर्पियो से आठ कार्यकर्ता जा रहे थे। स्कॉर्पियो सवार रामाराम पुत्र रेखाराम, भैराराम पुत्र लाभूराम, जोगाराम पुत्र अर्जुनराम, दुर्गाराम पुत्र भैराराम झाख मौखाब, अशोक पुत्र हीराराम, मनोहर पुत्र चिमाराम और दौलतराम पुत्र लाधुराम घायल हुए हैं। सभी बाढ़मेर के आसपास के रहने वाले हैं। वहीं, कार में सवार उदय पुत्र रमेश भाई निवासी मेहसाणा गुजरात, हिमांशु पुत्र देवेंद्र भाई निवासी मेहसाणा गुजरात और प्रशांत कुमार पुत्र कमलेश निवासी नई दिल्ली को सांचौर रेफर कर दिया गया है।

# अवैध कॉलोनियों पर आरडब्ल्यूए की शर्त खत्म : मनोहर लाल

**चंडीगढ़ ( हि.स. )।** हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने घोषणा की कि अनियमित कॉलोनियों को नियमित करने के लिए अभी तक रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन (आरडब्ल्यूए) की शर्त होती थी, लेकिन अब से आरडब्ल्यूए की आवश्यकता नहीं होगी। कॉलोनी का कोई भी व्यक्ति कॉलोनी को नियमित करने के लिए आवेदन करेगा तो उसे अप्रूव कर दिया जाएगा। मनोहर लाल ने कहा कि सभी 88 शहरी स्थानीय निकायों में सर्वे के आधार पर शहरों में लगभग 46 लाख प्रॉपर्टी आईडी बनाई गई हैं। इन प्रॉपर्टी आईडी से संबंधित जो भी त्रुटियां हैं, उन्हें आगामी एक माह में अधिक से अधिक कैंप लगाकर दुरुस्त किया जाएगा। मुख्यमंत्री शनिवार को विशेष चर्चा कार्यक्रम के तहत ऑडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से प्रॉपर्टी आईडी के लाभार्थियों के साथ सीधा संवाद कर रहे थे। संवाद के दौरान लाभार्थियों ने प्रॉपर्टी आईडी से संबंधित कठिनाइयों को दूर करने और पूरी प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया। मनोहर लाल ने कहा कि लगभग 46 लाख प्रॉपर्टी आईडी बनाई गई हैं। इनमें से नियमित कॉलोनियों में 36 लाख संपत्तियां पाई गई और अन अप्रूव्ड एरिया या अनियमित कॉलोनियों में 10 लाख संपत्तियां पाई गई। इन प्रॉपर्टी आईडी को नवंबर, 2022 में पोर्टल पर अपलोड किया गया, ताकि संपत्ति मालिक स्वयं अपनी प्रॉपर्टी आईडी को सत्यापित कर सके। हालांकि केवल 1.50 लाख प्रॉपर्टी मालिकों ने ही प्रॉपर्टी आईडी को सत्यापित किया। मनोहर लाल ने कहा कि प्रॉपर्टी आईडी के विवरण में कुछ सम्पत्तियों की आईडी में त्रुटियां पाई गईं, इस कारण सम्पत्ति धारकों द्वारा आपत्तियां दर्ज करवाई गईं। इन आपत्तियों को दूर करने के लिए शहरों में विशेष कैंप लगा रहे हैं। अभी तक लगभग 8 लाख 35 हजार आपत्तियां प्राप्त हुई हैं। इन आपत्तियों में से 5 लाख 64 हजार आपत्तियां दूर की जा चुकी हैं। गत शनिवार और रविवार दो दिन भी प्रॉपर्टी आईडी की त्रुटियों को ठीक करने के लिए विशेष कैंप लगाए गए थे, जिसमें लगभग 20 हजार आपत्तियां प्राप्त हुई और 19,000 आपत्तियों को ठीक किया जा चुका है।

# नदी से क्षत-विक्षत शव बरामद

**गोलाघाट ( हिंस )।** गोलाघाट जिला के देरगांव के निकटवर्ती गेलाबिल नदी से आज सुबह एक क्षत-विक्षत अवस्था में शव बरामद किया गया। शव की बरामदगी देरगांव के हांहसुवा गांव से होकर बहने वाली नदी से हुई। प्राप्त जानकारी के अनुसार आज तड़के गिलाबिल नदी में मछली पकड़ने गए स्थानीय लोगों ने शव को तैरते देखकर इसकी सूचना तत्काल ही पुलिस को दी। पुलिस ने शव को पानी से निकाला। शव बरामदगी की खबर देखते ही देखते आग की तरह पूरे ईलाके में फैल गई। नदी के दोनों तरफ देखने वालों की भारी भीड़ जुट गई। मृतक के शरीर पर कई स्थानों पर लोहा से किए गए प्रहार का चिह्न स्पष्ट दिख रहे थे। पुलिस ने आशंका जाहिर की कि किसी ने मृतक की हत्या करके शव को नदी में बहा दिया गया होगा। मृतक की पहचान गोलाघाट जिले के देरगांव के निकटवर्ती कछारीपाम गांव के रितुपन बोरा के रूप में हुई है। पुलिस से सूचना मिलते ही मृतक के परिजन घटनास्थल पर पहुंचे। परिजनों ने बताया कि मृतक रितुपन कई दिनों से लापता था। घरवाले उसकी सरगर्मी से तलाश कर रहे थे। पुलिस शव को थाने ले जाकर अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ एक हत्या का मुकदमा दर्ज कर मामले में आगे की कार्रवाई शुरू कर दी। मृतक के शव को अंत्यपरीक्षण के लिए गोलाघाट सिविल अस्पताल में भेज दिया गया।

## पृष्ठ एक का शेष

### असम में बाढ़ का...

कामरूप (ग्रामीण) में 79 और तामुलपुर में 28 घर तबाह हुए हैं, जबकि आंशिक रूप से तामुलपुर जिले में 2 पक्के घरों को भी क्षति पहुंची है। बाढ़ प्रभावित इलाकों में बचाव अभियान के लिए एसडीआरएफ के साथ जिला एवं पुलिस एवं नागरिक प्रशासन की टीमें तथा मेडिकल टीमें भी तैनात की गई हैं। आज बाढ़ प्रभावित इलाकों से 14 नागरिकों तथा 1 पशु को नावों के जरिए सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया है। राहत एवं बचाव कार्यों में 5 नावों को तैनात किया गया है, जबकि 18 मेडिकल टीमें अपनी सेवाएं बाढ़ प्रभावित इलाकों में दे रही हैं। बाढ़ प्रभावितों के बीच खाद्य सामग्रियों का वितरण किया गया। इनमें 1475.53 क्विंटल चावल, 247.49 क्विंटल दाल, 165.59 क्विंटल नमक, 1535.75 लीटर सरसों का तेल, पशुओं के लिए गेहूं का चोकर 5717.28 क्विंटल और चावल की भूसी 462.73 क्विंटल शामिल हैं। राज्य सरकार की ओर से बाढ़ प्रभावित इलाकों में सभी तरह के आवश्यक कदम उठाए जाने के निर्देश दिए गए हैं।

### मणिपुर : उपद्रवियों ने ...

हालात गंभीर बने हुए हैं। ऐसे में दिल्ली के जंतर-मंतर पर भी जमकर विरोध प्रदर्शन हो रहा है। इसके अलावा मणिपुर के दो जिलों में पिछले तीन दिनों से हिंसा जारी है। पूर्वी इंफाल और कांगपोकपी में लगातार गोलीबारी की आवाज सुनाई दे रही है। यहां सुरक्षाबलों और अज्ञात हमलावरों के बीच पिछले तीन दिनों से मुठभेड़ जारी है। टाइम्स ऑफ इंडिया की रिपोर्ट के मुताबिक सुरक्षाबलों के सूत्रों का कहना है कि ये गोलीबारी आर्मी और बीएसएफ की जॉइंट पेट्रोलिंग टीम और हमलावरों के बीच हो रही है। हालांकि इसमें अभी तक किसी के हताहत होने की खबर सामने नहीं आई है। जानकारी के मुताबिक गोलीबारी पूर्वी इंफाल के दो गांव उरांगपत और ग्वालताबी और कांगपोकपी के यैंगांगपोकपी में हो रही है। बताया जा रहा है कि हथियारबंद हमलावर उरांगपत और ग्वालताबी गांवों को निशाना बनाने के लिए येगांगपोकसी से पहाड़ी इलाकों की तरफ घुसे थे। इसके बाद उन्होंने ऑटोमैटिक हथियारों से फायरिंग शुरू कर दी। घटना की जानकारी मिलते ही सेना और बीएसएफ के जवानों तुरंत इलाके में तैनात हो गए और जवाबी कार्रवाई करने लगे। दोनों गांव में लगातार हो रहे हमलों को देखते हुए लोग गांव खाली करके चले गए हैं। पूर्वी इंफाल के इन दोनों गांव में एक घंटे तक चली गोलीबारी के अलावा यैंगांगपोकपी में भी सुरक्षाबलों और हमलावरों के बीच गोलीबारी हुई।

### मणिपुर हिंसा : सर्वदलीय...

कि सर्वदलीय बैठक में सभी ने अपनी बात रखी हैं। सभी राजनीतिक पार्टियों का कहना है कि अमित शाह का मणिपुर दौरा अभूतपूर्व रहा है। अमित शाह ने कहा कि हर रोज पीएम मोदी को हालात से अवगत कराया जाता है। म्यांमार पर 10 किलोमीटर तक बाड़ लगाई गई थी, जहां से घुसपैठ हो रही थी और भी काम किया जा रहा है। उन्होंने सभी राजनीतिक दलों से सुझाव लिए हैं। लोगों के बहुत सारे सुझावों को अमित शाह ने नोट कर लिया है। आगे सही समय पर सही दिशा में कदम उठाए जाएंगे। आरजेडी नेता मनोज झा ने कहा कि मणिपुर सीएम को हटाने की मांग विपक्षी दलों ने की। विपक्ष की तरफ से कहा गया कि जबतक ये सीएम रहेंगे तब तक शांति बहाली संभव नहीं है। वहीं, शिव सेना नेता प्रियंका चतुर्वेदी ने कहा कि विपक्षी दलों ने मांग की कि ऑल पार्टी डेलिगेशन मणिपुर लेकर जाना चाहिए ताकि हम जाकर वहां की स्थिति को देख सकें। हम विपक्षी दलों ने मांग की जो अविश्वास वहां की जनता के बीच आ गया है उसको खत्म करने के लिए एक्शन लेना होगा। डीएमके नेता त्रिचि शिवा का कहना है कि ऑल पार्टी मीटिंग में हमने गृहमंत्री से मांग की है कि मणिपुर एक एक सर्वदलीय डेलिगेशन भेजा जाय।

### मुर्शिदाबाद में विस्फोट...

अन्य घायलों का उसी अस्पताल में इलाज चल रहा है। पुलिस ने बताया कि बेलडांगा के कापसडांगा गांव का रहने वाला शेख हिस्ट्रीशीटर था। पुलिस ने बताया कि एक अन्य घटना में जिले के रानीनगर में तृणमूल कांग्रेस और कांग्रेस कार्यकर्ताओं के बीच झड़प हुई। इस दौरान देसी बम फेंगे जाने से तीन लोग मामूली रूप से घायल हो घायल हो गए। इन घटनाओं के बाद सत्तारूढ़ और विपक्षी दलों के बीच बहस छिड़ गयी है और भाजपा व कांग्रेस ने तृणमूल पर आठ जुलाई को होने वाले पंचायत चुनावों से पहले दहशत फैलाने के लिए अपराधियों को देसी बम बनाने में शामिल करने का आरोप लगाया। भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष दिलीप घोष ने कहा कि ये घटनाएं विपक्षी उम्मीदवारों को डराने और उनके समर्थकों को मतदान करने से रोकने के लिए टीएमसी की बड़ी योजना का खुलासा करती हैं। वहीं, पश्चिम बंगाल प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष और बेरहामपुर के सांसद अधीर चौधरी ने कहा कि तृणमूल कांग्रेस द्वारा पनाह लिए शरारती तत्व ग्रामीण चुनावों से पहले व्यापक अशांति फैलाने के लिए बम बना रहे हैं। हमें पुलिस पर भरोसा नहीं है क्योंकि वे स्थानीय स्तर के तृणमूल नेताओं के खिलाफ कार्रवाई नहीं कर रहे हैं।

### पुतिन की प्राइवेट...

टैंकर मौजूद हैं। प्रीगोझिन के कदम पर प्रतिक्रिया देते हुए रूस की सुरक्षा सेवाओं ने उनके खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी किया है। इसके मद्देनजर राजधानी मॉस्को और रोस्तोव-ऑन-डॉन में सुरक्षा बढ़ा दी गई है। हालांकि, अभी यह साफ नहीं है कि वैग्नर प्रमुख रूसी शहर में कैसे घुसे या उनके साथ कितने लड़ाके हैं। प्रीगोझिन के बगावत का ऐलान करने की वजह से यूक्रेन में रूस का अभियान प्रभावित हो सकता है। वैग्नर बलों ने यूक्रेन युद्ध में अहम भूमिका निभाई है और बखमूत शहर पर कब्जा करने में कामयाबी हासिल की जहां लंबी और भीषण लड़ाई चली। प्रीगोझिन ने रूस के वरिष्ठ सैन्य अधिकारियों की आलोचना भी की है और उन पर अक्षम होने और वैग्नर बलों को हथियार व गोला-बारूद की आपूर्ति नहीं करने का आरोप लगाया है।

### सैन्य विद्रोह को ...

को आवश्यक आदेश जारी कर दिए गए हैं। प्रीगोझिन ने शनिवार को दावा किया कि वह और उनके लड़ाके यूक्रेन की सीमा पार करके रूस के रोस्तोव-ओन-दोन शहर में दाखिल हो गए हैं तथा वहां के अहम सैन्य प्रतिष्ठानों को अपने नियंत्रण में ले लिया है। प्रीगोझिन ने एक वीडियो पोस्ट किया, जिसमें वह रूस के रोस्तोव-ओन-दोन स्थित सैन्य मुख्यालय में खड़े नजर आ रहे हैं। यह मुख्यालय यूक्रेन में युद्ध पर नजर रखता है। वैग्नर ग्रुप ने दावा किया कि उनके बलों ने शहर में स्थित कई अहम सैन्य प्रतिष्ठानों को अपने कब्जे में ले लिया है, जिसमें एक हवाई पट्टी भी शामिल है। सोशल मीडिया पर जारी अन्य वीडियो में रोस्तोव-ओन-दोन की सड़कों पर सैन्य वाहन और टैंकर खड़े दिखाई दे रहे हैं। पुतिन ने वैग्नर ग्रुप के फैसले की आलोचना करते हुए कहा कि यह बगावत ऐसे समय में की गई है, जब यूक्रेन के साथ युद्ध में रूस अपने भविष्य के लिए सबसे कठिन लड़ाई लड़ रहा है। उन्होंने आरोप लगाया कि पश्चिमी देशों का पूरा सैन्य, आर्थिक और सूचना तंत्र हमारे खिलाफ खड़ा कर दिया गया है। उधर, प्रीगोझिन ने दावा किया कि यूक्रेन से रूस में दाखिल होते समय उनकी निजी सेना को जांच चौकियों पर युवा सैनिकों से किसी भी तरह के प्रतिरोध का सामना नहीं करना पड़ा। उन्होंने कहा कि उनके लड़ाके बच्चों के खिलाफ नहीं लड़ रहे हैं। सोशल मीडिया पर जारी वीडियो और ऑडियो पोस्ट में प्रीगोझिन ने कहा कि जो भी हमारे रास्ते में आएगा, हम उसे बर्बाद कर देंगे। हम आगे बढ़ रहे हैं और हम अंतिम छोर तक जाएंगे। रूस ने वैग्नर ग्रुप से उत्पन्न खतरे को कितनी गंभीरता से लिया है, इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि अधिकारियों ने मॉस्को और उसके आसपास के क्षेत्रों में आतंकवाद विरोधी शासन लागू करने की घोषणा की है, जिसके तहत वहां नागरिकों को हासिल कई अधिकारों को सीमित कर दिया गया है और सुरक्षा व्यवस्था भी बढ़ा दी गई है। हालांकि, फिलहाल यह साफ नहीं है कि वैग्नर ग्रुप के प्रमुख रूसी शहर में कैसे दाखिल हुए और उनके साथ कितने लड़ाके हैं। प्रीगोझिन ने आरोप लगाया कि रोस्तोव में रक्षा मंत्री सर्गेई शोइगू से मुलाकात के बाद सेना प्रमुख जनरल वेलेरी गेरासिमोव ने यूक्रेन में वैग्नर ग्रुप के आधार शिविरों को रॉकेट, हेलीकॉप्टर और तोपों से निशाना बनाने का आदेश दिया। उन्होंने दावा किया कि इस बैठक में वैग्नर ग्रुप को तबाह करने का फैसला लिया गया।

### आतंकवाद के खिलाफ...

नागरिकों को गिरफ्तार किया गया था। बाकी तीन नागरिक फरार हो गए। एनआईए का यह कदम शुक्रवार को भारत-अमेरिका के संयुक्त बयान के साथ मेल खाता है, जिसमें सीमा पार आतंकवाद की निंदा की गई थी और पाकिस्तान से लश्कर-ए-तैयबा और जैश-ए-मोहम्मद जैसे आतंकी समूहों के खिलाफ कार्रवाई करने और मुंबई और पठानकोट हमलों के अपराधियों को न्याय के कटघरे में लाने का आह्वान किया गया था। पीएम नरेंद्र मोदी और अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने अल-कायदा, आईएसआईएस/दाएश, लश्कर ए-तैयबा (एलईटी), जैश-ए-मोहम्मद (जेईएम) और हिजबुल मुजाहिदीन सहित सभी संयुक्त राष्ट्र-सूचीबद्ध आतंकवादी समूहों के खिलाफ ठोस कार्रवाई का आह्वान दोहराया। भारत और अमेरिका पारस्परिक रूप से सहमत समाधानों के माध्यम से डब्ल्यूटीओ में छह व्यापार विवादों को समाप्त करने पर सहमत हुए हैं। ये छह मामले भारत के कुछ हॉट-रोल्ड कार्बन स्टील फ्लैट उत्पादों पर प्रतिकारी उपाय, सौर सेल और मॉड्यूल, नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र, निर्यात, स्टील और एल्यूमीनियम उत्पादों से संबंधित उपाय और अमेरिका के कुछ उत्पादों पर अतिरिक्त शुल्क हैं। भारत बादाम, अखरोट और सेब जैसे कुछ अमेरिकी उत्पादों पर प्रतिशोधात्मक सीमा शुल्क हटा देगा। बाइडन ने कहा कि भारत और अमेरिका के बीच आर्थिक संबंध तेजी से बढ़ रहे हैं। पिछले 10 सालों में दोनों देशों के बीच व्यापार दोगुना होकर 191 अरब डॉलर से अधिक हो गया है। उधर पीएम मोदी ने कहा कि भारत और अमेरिका के बीच व्यापार और निवेश साझेदारी न केवल दोनों देशों के लिए, बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए भी महत्वपूर्ण है। मोदी और बाइडन ने विश्वसनीय और सुरक्षित 5जी और 6जी टेलीकॉम नेटवर्क विकसित करने, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और सेमीकंडक्टर के क्षेत्र में अत्याधुनिक तकनीकों पर काम करने जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में भारत-अमेरिका साझेदारी को व्यापक बनाने में एक बड़ी छलांग लगाई, जबकि उच्च प्रदर्शन कंप्यूटिंग और अंतरिक्ष क्षेत्रों में संबंधों को गहरा किया। पीएम मोदी ने कई अमेरिकी व्यवसायियों और कंपनियों के सीईओ से मुलाकात की। इसमें टेस्ला के सीईओ एलन मस्क, एडोबी सिस्टम्स के सीईओ शांतनु नारायण, मास्टरकार्ड के सीईओ माइकल मीबैक, कोका कोला के सीईओ जेम्स क्विंसी और वीजा के सीईओ रयान मैकइनर्नी, शामिल हैं।

### महंगाई को लेकर ...

को लेकर रिजर्व बैंक की टिप्पणी ठीक भी नहीं है। खड़गे कहा कि जब कांग्रेस पार्टी बोलती है कि महंगाई है...तो मोदी जी के मंत्रीगण कहते हैं कि महंगाई दिखती ही नहीं जनता बोलती है की महंगाई है ...तो मोदी सरकार सप्लाई, मौसम, युद्ध सबका बहाना बनाती है। उन्होंने कहा कि अब तो भारत सरकार का आरबीआई खुद कह रहा है कि जानलेवा महंगाई के चलते जनता कम खर्च कर रही है, जिससे बिक्री घटी है और प्राइवेट निवेश पर बुरा असर पड़ा है। ये कुचक्र हमारी अर्थव्यवस्था के लिए घातक है। बताइये नरेंद्र मोदी जी आप आरबीआई की इस रिपोर्ट पर क्या जवाब देंगे। अच्छे दिन, नामुमकिन!

### अब रात में एसी ...

कहा कि इससे ग्राहकों को बिजली बिल कम करने में मदद मिलेगी। सरकार के इस कदम के पीछे दो बड़ी वजहें मानी जा रही हैं। पहला, देश में सौर और नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों से उत्पादित बिजली की मांग बढ़े। चूंकि सौर ऊर्जा से बिजली का उत्पादन दिन में होता है तो बिजली वितरण कंपनियां इनसे बनी बिजली की खरीद दिन में ज्यादा करेंगी। दूसरी वजह है कि पीक आवर में ज्यादा बिल आने की संभावना देखते हुए ग्राहक इस दौरान खपत में किफायत बरतेंगे। टीओडी टैरिफ 10 किलोवाट या इससे ज्यादा की बिजली की खपत करने वाले ग्राहकों के लिए 01 अप्रैल, 2024 से लागू किया जाएगा जबकि दूसरे ग्राहकों के लिए 01 अप्रैल, 2025 से लागू होगा। कृषि क्षेत्र पर नई व्यवस्था लागू नहीं होगी। भारत ने वर्ष 2021-22 में 249 अरब यूनिट बिजली बचाकर 1.60 लाख करोड़ रुपए की बचत की। ब्यूरो आफ एनर्जी एफिशिएंसी (बीईई) द्वारा तैयार की गई रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई है। रिपोर्ट को शुक्रवार को बिजली मंत्री आरके सिंह ने जारी किया।

### समाज परिवर्तन और...

दुनिया का अव्वल राष्ट्र बना हुआ है। इसका कारण है जापान के नागरिकों का राष्ट्रीय चरित्र जो उनके व्यक्तिगत चरित्र से बहुत ऊपर है। इसी तरह द्वितीय विश्व युद्ध के बाद दो राष्ट्रों में विभाजित होने वाला जर्मनी आज दुनिया का शक्तिशाली देश बना हुआ है। इसी तरह से हम देखते हैं कि इजरायल आज अपने नागरिकों के समर्पित राष्ट्रभाव के कारण सारी दुनिया को उन्नति का रास्ता दिखा रहा है। इन राष्ट्रों की उन्नति और वैभव के पीछे वहां के नागरिकों की राष्ट्र भक्ति की भावना और उनका राष्ट्रीय चरित्र प्रमुख कारण है। उन्होंने कहा कि हमारे देश के नागरिकों का राष्ट्रीय चरित्र भी राष्ट्र सर्वप्रथम की भावना वाला होना चाहिए। परम पूजनीय डॉक्टर हेडगेवार जी ने इसी विचार के साथ संघ का कार्य आरंभ किया था। संघ का मूल मंत्र ही व्यक्ति निर्माण के द्वारा राष्ट्र निर्माण है। इसी राष्ट्र सर्वप्रथम की भावना के साथ संघ 98 वर्ष से निरंतर समाज में कार्य कर रहा है। प्रो. व्यास ने संघ के कार्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि संघ विश्व का सबसे बड़ा सामाजिक संगठन है। उसके अनेक संगठन समाज, विज्ञान, चिकित्सा, शिक्षा, सेवा, धर्म, श्रमिक और पर्यावरण के क्षेत्रों में सेवा का कार्य कर रहे हैं। संघ का मूल चरित्र व्यक्ति निर्माण से समाज निर्माण और समाज निर्माण से राष्ट्र निर्माण हैं। उन्होंने कहा कि व्यक्ति निर्माण के लिए संघ की शाखा एक संस्कार केंद्र की तरह कार्य करती है। संघ के स्वयं सेवक समाज के विभिन्न क्षेत्रों में सेवा के कार्यों को करते हैं। सेवा भारती समाज के अभावग्रस्त बंधुओं के बीच काम करने वाला संगठन हैं। भारतीय मजदूर संघ देश श्रमिकों के कल्याण के लिए काम करने वाला संगठन हैं। संघ का मानना हैं कि समाज का प्रत्येक अंग उन्नति करें क्योंकि समाज की उन्नति में ही राष्ट्र की उन्नति निहित है। हिंदू समाज को विघटन करने वालों की साजिश को उजागर करते हुए प्रोफेसर व्यास ने कहा कि देश की स्वतंत्रता के बाद समाज के कुछ निहित स्वार्थी संगठनों ने योजनाबद्ध और सुनियोजित तरीके से हिंदू समाज में जातिवाद का बीज बोने का काम किया। ऐसे संगठनों ने हिंदू समाज के विघटन का भी प्रयास किया। दुर्भाग्य की बात यह हैं कि हिंदू समाज के महापुरुषों को भी जातियों में विभाजित करने का कुचक्र चलाया गया।

### लव जिहाद को राजनीतिक ...

सामान्य प्यार-मोहब्बत नहीं है। ऐसे मामलों में राजनेताओं की क्राइसेस ऑफ क्रेडिबिलिटी उजागर होती है। साधारण मध्यम और अपर क्लास हिंदू लड़कियों को टारगेट किया जाता है। इसके लिए कांग्रेस के दोहरे मापदंड भी जिम्मेदार हैं। ऐसी घटनाओं को लेकर केरल में कुछ और तथा राजस्थान में कुछ और बयान दिए जाते हैं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के वरिष्ठ नेता खुद कांग्रेस के बागी हो रहे हैं। नेताओं के आपसी द्वंद्व के चलते कथनी व करनी में अंतर है। कांग्रेस अपनी ही पार्टी के सदस्यों के खिलाफ चल रही है और एक दूसरे के खिलाफ बयान बाजी कर रही है। कांग्रेस के नेताओं की कारस्तानी को राजस्थान की जनता को समझना चाहिए। उन्होंने कबीर के दोहे से राजस्थान की स्थिति को समझाते हुए बताया कि दो पाटन के बीच में साबुत बचा न कोय। त्रिवेदी ने भाजपा के 9 साल को लेकर कहा कि सेवा सुशासन और गरीब कल्याण के 9 साल हुए हैं। इस दौरान 48 करोड़ को जनधन से जोड़ा गया है। भारत में निर्धन वर्ग की महिलाओं को संपत्ति में अधिकार मिला है। जन जन तक विकास के उजाले को पहुंचाया गया है। उन्होंने केंद्रीय जलशक्ति मन्त्री गजेंद्र सिंह शेखावत के मंत्रालय के महत्व को बताया। राजस्थान में पानी के महत्व को बताते हुए कहा कि 111 जल मार्ग से परिवहन हो रहा है। उन्होंने आगामी चुनावों में जनता का आह्वान किया कि रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून। उन्होंने बताया कि राजस्थान में सौर ऊर्जा क्षेत्र में अभूतपूर्व काम हुआ और आठ साल पहले ही लक्ष्य हासिल हो गया। सोलर एनर्जी में हम विश्व में एक नम्बर पर हैं।

### दो दिवसीय दौरे ...

निमंत्रण पर अमेरिका आए थे। प्रधानमंत्री मोदी अपनी मिस्र यात्रा के दौरान सीसी के साथ बातचीत करने के अलावा मिस्र सरकार के वरिष्ठ गणमान्य व्यक्तियों, देश की प्रमुख हस्तियों और भारतीय समुदाय के सदस्यों से भी मुलाकात कर सकते हैं। जनवरी में सीसी की भारत की राजकीय यात्रा के दौरान, दोनों देश अपने संबंधों को रणनीतिक साझेदारी के स्तर तक बढ़ाने पर सहमत हुए थे। प्रधानमंत्री काहिरा में *हेलियोपोलिस कॉमनवेल्थ वॉर ग्रेव सीमेट्री* का दौरा करेंगे, जो एक पवित्र स्थल है और प्रथम विश्व युद्ध के दौरान मिस्र तथा फलस्तीन में सेवा करने वाले एवं शहीद हुए भारतीय सेना के लगभग 4,000 सैनिकों की याद में बनाया गया स्मारक है। मोदी दाऊदी बोहरा समुदाय की मदद से बहाल की गई 11वीं सदी की अल-हकीम मस्जिद का भी दौरा करेंगे। दो देशों की यात्रा पर जाते समय मोदी ने 20 जून को कहा था कि मैं किसी करीबी और मैत्रीपूर्ण देश (मिस्र) की पहली राजकीय यात्रा करने को लेकर उत्साहित हूं। उन्होंने यह भी कहा था कि हमें इस वर्ष देश के गणतंत्र दिवस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में राष्ट्रपति सीसी का स्वागत करने का सौभाग्य मिला।

### स्वर्वेद भाष्य




**चतुर्थ मंडल** **चतुर्दश अध्याय**

**( आध्यात्मिक वंदना )**

**परम पुरुष की बन्दना, अन्तरयामी देव।**
**अखिर विश्व ब्रह्माण्ड का, संचालक मम देव॥ 15॥**

**शब्दार्थ :** (संचालक) संचालन करने वाला।

**भाष्य :** समस्त विश्व-ब्रह्मांड का संचालन करने वाला मेरा देव है। उस अंतर्यामी देव परम पुरुष को नमस्कार है।

**अमृत सागर व्याप्त है, अकल कला कमनीय।**
**अन्तर अनुभव अगम सुख, कर प्रणम्य गति हीय॥ 16॥**

**शब्दार्थ :** (अकल) निराकर, प्राकृत करण से रहित (कला) गुण (कमनीय) सुन्दर (प्रणम्य) प्रणाम कर (हीय) हृदय।

**भाष्य :** प्राकृत गुण, कर्मों से रहित चेतन गुम, विशिष्ट अमृत परमानंद सर्वत्र व्याप्त है। उसे अंतर गति से प्रणाम कर अगम सुख का अनुभव होता है।

# परिसीमन प्रस्तावों पर गठबंधन के सहयोगियों के साथ-साथ विपक्षी दलों में भी असंतोष

**गुवाहाटी।** परिसीमन प्रस्ताव के मसौदे को लोगों की भावनाओं की अनदेखी कर धार्मिक आधार पर मतदाताओं का ध्रुवीकरण करने का भाजपा का प्रयास करार देते हुए विपक्षी दलों ने नागरिकों की %शिकायतों% को चुनाव आयोग के समक्ष पेश करने का फैसला किया। असम में परिसीमन प्रस्तावों के खिलाफ विरोध प्रदर्शन शनिवार को भी जारी रहा, सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व वाले गठबंधन के सहयोगियों के साथ-साथ विपक्षी दलों ने भी अपना असंतोष व्यक्त किया। वहीं ऑल असम स्टूडेंट्स यूनियन (आसू) ने राज्य सरकार के शिक्षा विभाग की हालिया नीतियों के विरोध में राज्य के बिश्वनाथ क्षेत्र में साइकिल रैली निकाली है। ऑल

असम स्टूडेंट्स यूनियन सहित कई संगठन अंग्रेजी भाषा में कई विषयों के लिए पाठ्यपुस्तकें प्रकाशित करने और इन विषयों का ज्ञान एक ही भाषा में देने के शिक्षा विभाग के फैसले का विरोध कर रहे हैं, न कि स्थानीय भाषाओं में, यहां तक कि असमिया में भी नहीं। छात्र संगठन ने उल्लेख किया है कि वर्तमान सरकार असमिया समुदाय के हितों के खिलाफ काम कर रही है। परिसीमन प्रस्ताव के मसौदे को लोगों की भावनाओं की अनदेखी कर धार्मिक आधार पर मतदाताओं का ध्रुवीकरण करने का भाजपा का प्रयास करार देते हुए विपक्षी दलों ने नागरिकों की *शिकायतों* को चुनाव आयोग के समक्ष पेश करने का फैसला किया। शनिवार को शिवसागर जिले के अमगुरी विधानसभा क्षेत्र में असम गण परिषद (एजीपी) नेताओं का विरोध प्रदर्शन हुआ। इस निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व भाजपा की सहयोगी एजीपी के प्रदीप हजारिका करते हैं। स्थानीय एजीपी नेता ने कहा कि हमारे अमगुरी निर्वाचन क्षेत्र को दूसरे निर्वाचन क्षेत्र में मिलाया जा रहा है और हम अपनी पहचान खो रहे हैं। हम इसे स्वीकार नहीं करेंगे और अपना आंदोलन जारी रखेंगे।

## पुलिस सब इंस्पेक्टर को कार्यालय से किया गिरफ्तार

**दरंग (हिंस)।** दरंग जिला के सिपाझाड़ पुलिस ने नूरुद्दीन अहमद नामक एक सब इंस्पेक्टर को आज गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार पुलिस अधिकारी वर्तमान में बाक्सा जिला में डीएसबी शाखा में तैनात थे, जिन्हें ड्यूटी के दौरान गिरफ्तार किया गया। लोगों की शिकायतों के आधार पर जिले की अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक रूजी तालुकदार द्वारा दर्ज कराए गए एक मामले में कार्रवाई करते हुए पुलिस अधिकारी को गिरफ्तार किया गया। अहमद पर आरोप है कि इससे पहले सिपाझाड़ थाने में काम करने के दौरान अनेक मामलों में उन्होंने दस्तावेज ठीक से जमा नहीं किये थे। जिस कारण लोगों को न्याय से वंचित होना पड़ा था। कई लोगों ने सब इंस्पेक्टर अहमद के विरुद्ध आरोप दर्ज कराए थे। उन्हें आरोपों पर कार्यवाही करते हुए आज पुलिस ने उन्हें कार्यालय से गिरफ्तार कर लिया।

# नाक मूल्यांकन के लिए तैयार स्वामी योगानंद गिरि कॉलेज

**कोकराझाड़ (असम) (हिंस)।** शक्तिआश्रम स्वामी योगानंद गिरि कॉलेज राष्ट्रीय सशक्तिकरण और प्रत्यायन परिषद (नाक) के लिए तैयार है। ज्ञात हो कि भारत में उच्च शिक्षा संस्थानों के मूल्यांकन और प्रमाणन में शामिल एक कार्यक्रम है। 26 और 27 जून को आयोजित होने वाले मूल्यांकन कार्यक्रम के लिए कोकराझाड़ जिला के शक्ति आश्रम में स्थित स्वामी योगानंद गिरि कॉलेज के अधिकारियों द्वारा पहले ही पूरी तैयारी कर ली गई है। इसकी जानकारी आज शक्ति आश्रम स्वामी योगानंद गिरि कॉलेज के प्रिंसिपल ने एक संवादाता सम्मेलन में दी। कॉलेज के प्रिंसिपल ने 17 जून को नाक के मूल्यांकन के संबंध में कॉलेज के पूर्व छात्रों, माता-पिता और स्थानीय जनता से मुलाकात की और इसके पश्चात कॉलेज के प्राचार्य हाकीम अली प्रामाणिक की अध्यक्षता में कॉलेज के सभा कक्ष में 18 जून को माता-पिता, स्थानीय लोगों और शिक्षकों और कॉलेज के कर्मचारियों के साथ एक संयुक्त बैठक किया। उक्त बैठक में अभिभावक, स्थानीय लोग एवं महाविद्यालय के शिक्षक एवं कर्मचारी, शक्ति आश्रम स्थित स्वामी योगानंद गिरि महाविद्यालय की प्रबंध समिति के अध्यक्ष यशमानिक ब्रह्म, बोडोलैंड विश्वविद्यालय की प्रतिनिधि डॉ. गायत्री डेका दौले एवं कॉलेज की प्रबंध समिति के सदस्य तारिणी मोहन अधिकारी आदि उपस्थित थे। उक्त सभा में आगामी 26 और 27 जून को आयोजित होने वाला मूल्यांकन कार्यक्रम को लेकर विस्तृत रूप से चर्चा की गई।

# असम राइफल्स की छापेमारी में 6 करोड़ रुपए की हेरोइन बरामद

## दो महिलाओं समेत सात गिरफ्तार

**एजल (हिंस)।** मिजोरम में असम राइफल्स की छापेमारी में करीब 6 करोड़ रुपए की हेरोइन बरामद की गई है। इसके साथ ही दो महिलाओं समेत सात मादक पदार्थ तस्करों को गिरफ्तार किया गया है। असम राइफल्स के एक अधिकारी ने शनिवार को बताया कि विशेष सूचना के आधार पर बुधवार को उत्पाद शुल्क एवं नारकोटिक्स विभाग के अधिकारियों के साथ राज्य में दो अलग-अलग स्थानों पर छापेमारी कर दो महिलाओं समेत पांच ड्रग तस्करों को करीब 6 करोड़ रुपए की हेरोइन के साथ गिरफ्तार किया गया। उन्होंने लुंगलेई जिले के सेरकॉन इलाके में छापा मारा। आधिकारिक सूत्रों के अनुसार उनकी

संयुक्त टीम ने सेर्कवॉन इलाके में एक मोबाइल चेक पोस्ट स्थापित की और हेरोइन ले जा रहे वाहनों को जब्त कर लिया। वाहन की तलाशी ली और 80 साबुनदानी बरामद की गईं। उन्होंने उन साबुनदानी से 1.013 किग्रा हेरोइन बरामद की। एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि उसी दिन एक अन्य ऑपरेशन में असम राइफल्स और राज्य पुलिस की एक संयुक्त टीम ने सैतुअल जिले के कावबेल इलाके में छापा मारा और 145 ग्राम हेरोइन जब्त की। उन्होंने यह भी कहा कि इस घटना में दो लोगों को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस अधिकारी ने कहा कि बुधवार को छोड़कर पिछले डेढ़ महीने में मिजोरम के विभिन्न हिस्सों में सुरक्षा, पुलिस और राज्य उत्पाद शुल्क और नारकोटिक्स विभाग के अभियानों में लगभग 78.19 करोड़ रुपए का मादक पदार्थ बरामद किया गया है।

## काकी से लापता तीन किशोरियां डिमापुर से बरामद

**होजाई (हिंस)।** होजाई जिलांतर्गत लंका के काकी से लापता हुई तीन किशोरियों को नगालैंड के डिमापुर से बरामद किया गया है। लड़कियां 21 जून को लापता हुई थीं। परिवार की प्राथमिकी के आधार पर काकी पुलिस ने 21 जून से किशोरियों की तलाश शुरू की थी। किशोरियों को शनिवार सुबह डिमापुर के डिफूपाड़ा से बरामद किया गया। काकी पुलिस ने घटना के संबंध में काकी से राजू दास नामक एक युवक को हिरासत में लिया है और उससे पूछताछ कर रही है।

# केंद्रीय मंत्री सोनोवाल ने किया पांडू पोर्ट कैंप के अस्थायी शिविर का निरीक्षण

**गुवाहाटी (हिंस)।** नीलाचल पहाड़ स्थित शक्तिपीठ कामाख्या धाम में अयोजित अंबुबासी मेले के अवसर पर, असम सरकार द्वारा पांडू पोर्ट के आईडब्ल्यूआई परिसर में श्रद्धालुओं के लिए एक अस्थायी शिविर की व्यवस्था की गई है। केंद्रीय बंदरगाह, जहाज, जलमार्ग एवं आयुष मंत्री सर्बानंद सोनोवाल इसका निरीक्षण करने के लिए शनिवार दोपहर वहां पहुंचे। केंद्रीय मंत्री सोनोवाल पांडू के पोर्ट स्थित शिविर के श्रद्धालुओं से बातचीत की। उन्होंने देश-विदेश से आए भक्तों को अच्छा भोजन और आवास उपलब्ध कराने के लिए असम

सरकार की सराहना की। उन्होंने श्रद्धालु से आशीर्वाद लिया। मंत्री ने शिविर में श्रद्धालुओं के लिए भंडारे की व्यवस्था करने वालों से भी बातचीत की और इस नेक कार्य के लिए उन्हें धन्यवाद दिया।

# ड्रग्स, हिरण के सींग एवं नकदी के साथ दो तस्कर गिरफ्तार

**तिनसुकिया (हिंस)।** असम के सीमावर्ती लिडो मार्घेरिटा क्षेत्र में नशीले पदार्थों की तस्करी व्यापक पैमाने पर होने की खबरें आती रही हैं। यही वजह है कि इस इलाके के नवयुवक नशाखोरी और अपराध के दलदल में फंसते जा रहे हैं। इसी सिलसिले में आज गुप्त सूचना के आधार पर लिडू पुलिस ने लिडू के तिराप गांव में छापा मारकर गनो छेत्री (48) और उनकी पत्नी सविता छेत्री (30) को ड्रग्स के साथ पकड़ने में कामयाब रही। पुलिस की छापामार टीम ने गिरफ्तार दंपति के पास से लगभग 11.04 ग्राम हेरोइन, एक हिरण का सींग, एक मोबाइल हैंडसेट तथा 36,950 रुपए नकद जब्त करने में कामयाबी हासिल की। फिलहाल पुलिस इस मामले में और अधिक जानकारी हासिल करने के लिए गिरफ्तार दंपति से पूछताछ कर रही है।

## 46 पशुओं के साथ दो गिरफ्तार

**ग्वालपाड़ा (हिंस)।** राज्य में नए पशु कानून लागू होने के बावजूद राज्य में पशु तस्करी धड़ल्ले से हो रही है। इसी कड़ी में आज ग्वालपाड़ा जिले के मरनै थाना पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर एक अभियान चलाकर नदी के रास्ते ले जाए जा रहे 46 पशुओं के साथ दो पशु तस्करों को गिरफ्तार किया। प्राप्त जानकारी के अनुसार पशु तस्कर बरपेटा से नदी के रास्ते यंत्रचलित नाव से 46 पशुओं को मेघालय ले जा रहे थे।

# यात्रियों की सुविधा के लिए ग्रीष्मकालीन विशेष ट्रेनों की अवधि में विस्तार

**गुवाहाटी (हिंस)।** अतिरिक्त भीड़ को नियंत्रित करने के लिए ग्रीष्मकालीन विशेष ट्रेनों की अवधि को मौजूदा परिचालन दिवस, समय-सारिणी, ठहराव और संयोजन के अनुसार अक्तूबर, 2023 तक बढ़ाने का निर्णय लिया गया है। पूर्वोत्तर सीमा रेल (पूसीरे) के सीपीआरओ सब्यसाची ने शनिवार को बताया कि ट्रेन संख्या 05616 (गुवाहाटी- उदयपुर सिटी) स्पेशल अब 2 जुलाई से 29 अक्तूबर तक प्रत्येक रविवार को 18 ट्रिप के लिए चलेगी। वापसी दिशा में ट्रेन संख्या 05615 (उदयपुर सिटी- गुवाहाटी) स्पेशल अब 5 जुलाई से 1 नवंबर तक प्रत्येक बुधवार को 18 ट्रिप के लिए चलेगी। ट्रेन संख्या 05762 (कटिहार- रांची) स्पेशल अब 6 जुलाई से 26 अक्तूबर तक प्रत्येक गुरुवार को 17 ट्रिप के लिए चलेगी। वापसी दिशा में ट्रेन संख्या 05761 (रांची- कटिहार) स्पेशल अब 7 जुलाई से 27 अक्तूबर तक प्रत्येक शुक्रवार को 17 ट्रिप के लिए चलेगी। ट्रेन संख्या 05734 (कटिहार- अमृतसर) स्पेशल अब 8 जुलाई से 28 अक्तूबर तक प्रत्येक शनिवार को 17 ट्रिप के लिए चलेगी। वापसी दिशा में ट्रेन संख्या 05733 (अमृतसर- कटिहार) स्पेशल अब 10 जुलाई से 30 अक्तूबर तक प्रत्येक सोमवार को 17 ट्रिप के लिए चलेगी। ट्रेन संख्या 02518 (गुवाहाटी- कोलकाता) स्पेशल अब 15 जुलाई से 28 अक्तूबर तक प्रत्येक शनिवार को 16 ट्रिप के लिए चलेगी। वापसी दिशा में ट्रेन संख्या 02517 (कोलकाता- गुवाहाटी) स्पेशल अब 13 जुलाई से 26 अक्तूबर तक प्रत्येक गुरुवार को 16 ट्रिप के लिए चलेगी। ट्रेन संख्या 02502 (अगरतला- कोलकाता) स्पेशल अब 12 जुलाई से 25 अक्तूबर तक प्रत्येक बुधवार को 16 ट्रिप के लिए चलेगी। वापसी दिशा में, ट्रेन संख्या 02501 (कोलकाता- अगरतला) स्पेशल अब 16 जुलाई से 29 अक्तूबर तक प्रत्येक रविवार को 16 ट्रिप के लिए चलेगी। ट्रेन संख्या 05639 (सिलचर- कोलकाता) स्पेशल अब 20 जुलाई से 26 अक्तूबर तक प्रत्येक गुरुवार को 15 ट्रिप के लिए चलेगी। वापसी दिशा में ट्रेन संख्या 05640 (कोलकाता- सिलचर) स्पेशल अब 21 जुलाई से 27 अक्तूबर तक प्रत्येक शुक्रवार को 15 ट्रिप के लिए चलेगी। इसके अलावा ट्रेन संख्या 01665 (रानी कमलापति- अगरतला) स्पेशल की विस्तारित सेवा 28 सितंबर तक प्रत्येक गुरुवार को चलेगी और वापसी दिशा में ट्रेन संख्या 01666 (अगरतला- रानी कमलापति) स्पेशल की विस्तारित सेवा 1 अक्तूबर तक प्रत्येक रविवार को चलेगी।

# एरेना एनिमेशन नॉर्थ ईस्ट ने किया उद्योग सेमिनार का आयोजन

**गुवाहाटी।** एप्टेक लिमिटेड के प्रमुख ब्रांडों में से एक और भारत में एक अग्रणी एनीमेशन संस्थान, एरेना एनीमेशन ने आज गुवाहाटी में बढ़ते एनीमेशन, वीएफएक्स और गेमिंग क्षेत्र के लिए युवाओं को कौशल प्रदान करने के लिए एक उद्योग कार्यक्रम की मेजबानी की। इस कार्यक्रम में नए करियर अवसरों की तलाश कर रहे 200 से अधिक छात्रों की उपस्थिति देखी गई। प्रमुख स्टूडियो - वैभव स्टूडियो, मुंबई, वैकीटून्स, कोलकाता और रॉकसाल्ट इंटरएक्टिव, हैदराबाद के अनुभवी उद्योग पेशेवरों ने एनीमेशन, वीएफएक्स और गेमिंग के भविष्य पर अभूतपूर्व सत्र आयोजित करने के लिए स्वेच्छा से भाग लिया। जबकि, वैभव स्टूडियोज के कैरेक्टर एनिमेटर, दापून राय दीवान ने कला और एनीमेशन के बारे में विस्तार से बात की, वॉटून्स के वरिष्ठ कंपोजिटिंग कलाकार झूलन डे ने वीएफएक्स

कैरियर के अवसरों पर जानकारी दी। रॉकसाल्ट इंटरएक्टिव के एमडी और संस्थापक उत्कर्ष वीर ने गेमिंग क्षेत्र में करियर के अवसरों और संभावनाओं पर प्रमुख जानकारी दी। कार्यक्रम का मुख्य बिंदु एरेना एनिमेशन, गुवाहाटी और शिलांग से उत्तीर्ण छात्रों का दीक्षांत समारोह था, जिसके बाद एक इंटरैक्टिव सत्र और पूर्व छात्रों का अभिनंदन किया गया, जो आज भारत के अग्रणी स्टूडियो और प्रोडक्शन हाउस में काम कर रहे हैं। एरेना एनिमेशन के उपाध्यक्ष अंशुल गुप्ता ने कहा, एरेना एनीमेशन छात्रों को 3डी एनीमेशन, वीएफएक्स और गेमिंग के बढ़ते क्षेत्र में एक व्यापक शिक्षा प्रदान करने का प्रयास करता है। इन आयोजनों और सेमिनारों का उद्देश्य हमारे छात्रों को बहुत आवश्यक उद्योग अनुभव प्रदान करना, उन्हें सही कौशल सीखने और नेटवर्किंग का अवसर प्रदान करने में मदद करना है। मुझे यकीन है कि छात्र इस अवसर का भरपूर लाभ उठाएंगे और एरिना एनीमेशन, नॉर्थ ईस्ट केंद्र एवीजीसी उद्योग को कई सफल एनिमेटर, वीएफएक्स कलाकार, गेम डिजाइनर देंगे।

# विदेशी आक्रमणकारी हैं चिन-जो-कुकी : एमपीपी

**इंफाल (हिंस)।** मणिपुर पीपुल्स पार्टी (एमपीपी) ने चिन-जो-कुकी समुदाय के लोगों को उनकी मांग के अनुसार अलग प्रशासन देने का विरोध करते हुए कहा है कि कुकी संप्रदाय के लोग विदेशी आक्रमणकारी हैं। एमपीपी के अध्यक्ष शमजई ने पार्टी कार्यालय परिसर में दिए जा रहे धरना कार्यक्रम के दौरान मीडिया से बातचीत करते हुए स्पष्ट शब्दों में कहा कि कुकियों द्वारा मैतेई लोगों पर किया जा रहा अत्याचार अत्यंत ही निंदनीय है। एमपीपी ने सरकार से एक ऐसा सशक्त पुनर्वास तंत्र तैयार करने का आह्वान किया, जो विस्थापित लोगों के पुनर्संस्थापन की कारगर तरीके से व्यवस्था कर सके। एमपीपी ने आज (शनिवार को) मणिपुर में एक अलग प्रशासन की मांग पर अपना विरोध व्यक्त

करते हुए यह भी कहा कि पूरे राज्य की सीमा के अंदर रहने वाले सभी सामुदायिक समूहों को मणिपुर के प्रशासन पर अधिकार है। ऐसे में इसका प्रशासन चलाने का अधिकार किसी एक समुदाय को कैसे दिया जा सकता है? इंफाल में एमपीपी कार्यालय के समक्ष आयोजित धरना-प्रदर्शन कार्यक्रम के दौरान मीडिया से बात करते हुए अध्यक्ष ने कहा कि कुकी आतंकवादियों के हाथों मैतेई नागरिकों के विरुद्ध हिंसा करनेवालों द्वारा अलग प्रशासन की मांग करना हास्यास्पद है। उनकी मांग को उन्होंने अनुचित और अप्राप्य बताया। हालांकि, उन्होंने मौजूदा अशांति पर केंद्र सरकार की कार्रवाइयों पर असंतोष व्यक्त किया।

# माहेश्वरी महिला समिति ने श्रद्धालु भक्तों को पिलाया जूस

**गुवाहाटी (विभास)।** कामाख्या धाम में आयोजित अंबुवाची मेले में माहेश्वरी महिला समिति गुवाहाटी के तत्वाधान में मेले में आए राहगीर व श्रद्धालुओं को शर्बत पिलाया गया ताकि तपती गर्मी में राहत मिले। इस मौके पर सभा अध्यक्ष सीताराम बिहानी, सचिव सुरेंद्र लाहोटी, बनवारी लाल बिड़ला, जीतू राठी व निवर्तमान अध्यक्ष सरला लाहोटी, समिति सचिव पुष्पा सोनी, कोषाध्यक्ष मधुलिका चांडक, संयोजिका शोभना लड्ढा, मंजू बागड़ी, पार्वती बिड़ला, रीता साबू, रिंकु काबरा, बबिता काबरा व समाज के अन्य सदस्य भी उपस्थित थे। जन संपर्क अधिकारी सीमा सोनी ने बताया की समिति समय-समय पर ऐसे सेवा मूलक कार्य करती रहती है।

# महानगर में नेग्टा का 43वां गारमेंट फेयर शुरू

## आगामी त्योहारों से पूर्व छोटे कपड़ा व्यापारियों में जगी उम्मीद

**गुवाहाटी (विभास)।** ऑनलाइन ने समूचे कपड़ा व्यापार को चौपट कर रखा हैं। ऑनलाइन के चलते विशेष रूप से छोटे कपड़ा व्यापारी काफी प्रभावित हुए हैं। आलम यह है कि छोटे कपड़ा व्यापारी पूरी तरह से खत्म होने के कगार पर पहुंच गए हैं। ऐसे में छोटा कपड़ा व्यापारियों मैं एक नई जान फूकने के उद्देश्य से नॉर्थ ईस्टर्न गारमेंट्स ट्रेडर्स एसोसिएशन (नेग्टा) की ओर से बायर्स एंड सेलर्स मीट का आयोजन किया गया है। ताकि उनके मंदे पड़े कारोबार को एक नई दिशा दी जा सके। इसी को ध्यान में रखते हुए नेग्टा की ओर से आज से तीन दिवसीय बायर्स एंड सेलर्स मीट का आयोजन किया गया। नेग्टा के तत्वावधान में 43वे बायर्स एंड सेलर्स मीट का उद्घाटन शनिवार को संस्था के अध्यक्ष शेखर अग्रवाल, महासचिव वरुण रूंगटा, उपाध्यक्ष अनिल कोचर, कार्यकारिणी सदस्य चंदन सेठिया,

संजीत जैन आदि सदस्यों ने भगवान गणेश के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर किया। अध्यक्ष श्री अग्रवाल ने कहा कि गारमेंट फेयर में आगामी त्योहारों के अलावा ऑटम विंटर कलेक्शन को ध्यान में रखकर आयोजित किया गया है। नेग्टा की ओर से इस मीट का आयोजन पलटन बाजार स्थित होटल डायस्को में किया गया, जबकि सहयोगी स्थल के रूप में होटल अतिथि, होटल विश्वरत्न, होटल डायनेस्टी, होटल राजमहल, एम्बिएंस बैंक्वीट, होटल मिलेनियम में किया गया। नेग्टा के महासचिव वरुण रूंगटा ने बताया कि इस मीट में देशभर के विभिन्न राज्यों से 50 से अधिक व्यापारी राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर के 500 से अधिक ब्रांड के साथ हिस्सा ले रहे हैं, जिसमे महिलाओं, पुरुषों, बच्चों के परिधानों के अलावा फुटवेयर व एसेसरीज की भरमार है। तीन दिवसीय इस मीट में असम सहित पूर्वोत्तर राज्यों के 600 से अधिक छोटे बड़े व्यापारी अपनी जरूरत के अनुसार आगामी त्योहार व ऑटम विंटर कलेक्शन के मद्देनजर बुकिंग कर रहे हैं। इस मीट के माध्यम से बायर्स एंड सेलर्स मीट का भी आयोजन किया गया है, जिससे ग्रामीण इलाकों के छोटे-छोटे व्यापारी काफी लाभान्वित हो रहे हैं। कोषाध्यक्ष शैलेश गोयनका ने बताया कि असम सहित पूर्वोत्तर के व्यापारियों की मांग के अनुसार लोकल टेस्ट को ध्यान में रखते हुए परिधानों को इस मीट में शामिल किया गया है। नेग्टा के जनसंपर्क अधिकारी राजीव अजितसरिया ने बताया कि संस्था की ओर से व्यापार के साथ-साथ समय-समय पर विभिन्न सामाजिक कार्यों में भी सहयोग दिया जाता है। इस तीन दिवसीय बायर्स एंड सेलर्स मीट को सफल बनाने में नेग्टा के सभी सदस्य जुटे हुए हैं। तीन दिवसीय बायर्स एंड सेलर्स मीट का समापन सोमवार को होगा।

# ड्रग्स एवं नकद के साथ तस्कर पकड़ाया

**डिब्रूगढ़ (हिंस)।** जिले के दुलियाजान के महमारी में उस समय उत्तेजक परिस्थिति उत्पन्न हो गई जब स्थानीय लोगों ने एक युवक को ड्रग्स के साथ पकड़ लिया। युवक के पास से ड्रग्स बरामद करने संबंधी जानकारी मिलने के बाद मौके पर पहुंची पुलिस स्थिति को नियंत्रित करने की कोशिश करते हुए पकड़े गए युवक को जनता के गुस्से से बचाकर थाने ले गई। लोगों का आरोप है कि डिब्रूगढ़ जिला के जयपुर फॉरेस्ट गेट का निवासी देबजीत बरुवा लंबे समय से दुलियाजान और नाहरकटिया में ड्रग्स की आपूर्ति कर रहा था। बोलेरो कार (एएस-03एम-9986) में सवार युवक को उस समय लोगों ने पकड़ा जब वह दुलियाजान के महमारी गांव में प्रवेश कर रहा था। पुलिस ने गिरफ्तार युवक के पास से नकदी के साथ-साथ ड्रग्स और ड्रग्स की तस्करी में इस्तेमाल होने वाली कुछ चीजें की। पुलिस गिरफ्तार युवक के विरुद्ध एक प्राथमिकी दर्ज कर उससे सघन पूछताछ कर रही है।

## लाखों रु. मूल्य का चोरी का बिजली के तार बरामद

**कामरूप (हिंस)।** कामरूप (ग्रामीण) जिलांतर्गत हाजो के कुल्हाटी के निकटवर्ती मुवामारी से आज तड़के चोरी करके ले जाया जा रहा भारी मात्रा में बिजली का तार बरामद हुआ। हाजो पुलिस को खबर मिली है कि कुछ लोग मुवामारी पथार इलाके से बिजली का तार चोरी करके ले जा रहे हैं। सूचना पाकर पहुंची पुलिस ने एक बोलेरो पिकप वैन (एएस-15सी-9467) पर लादे जाए जा रहे तार के साथ चोरों के दल को पकड़ने की कोशिशें की। लेकिन, अंधेरे का फायदा उठाकर चोर गाड़ी को छोड़कर भागने में सफल रहे। पुलिस बोलेरो पिकअप को लेकर हाजो थाने पहुंची। जहां गाड़ी पर लदे हुए बिजली के तारों के साथ ही काटने में व्यवहार की गई कटारी गाड़ी से बरामद हुई। बरामद हुई बिजली तारों की कीमत लाखों रुपए बताई गई है।

# मोदी को बाइडन ने उपहार में दी खास टी शर्ट, लिखा है 'द फ्यूचर इज एआई अमेरिका एंड इंडिया'

**वाशिंगटन, (हि.स.)।** भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अमेरिका की यात्रा समाप्त कर चुके हैं। भारतीय प्रधानमंत्री की इस अमेरिका यात्रा से दोनों देशों के रिश्ते मजबूत हुए हैं। इसका प्रमाण अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन द्वारा भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को दिया गया अनोखा उपहार भी है, जिस पर लिखा है कि भविष्य एआई ही है और एआई का मतलब है अमेरिका और इंडिया। भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अमेरिका यात्रा में राष्ट्रपति से लेकर आम अमेरिकी नागरिक तक ने गर्मजोशी से उनका स्वागत किया है। अपनी यात्रा के अंतिम दौर में मोदी और बाइडन ने भारतीय-अमेरिकी कंपनियों के मुख्य अधिशासी अधिकारियों (सीईओ) के साथ एक बैठक की। इस बैठक में अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को एक विशेष टी-शर्ट गिफ्ट की, जिस पर लिखा है, द फ्यूचर इज एआई यानी 'एआई भविष्य है।' साथ ही इसके नीचे अंग्रेजी में अमेरिका और इंडिया लिखा है। जब राष्ट्रपति बाइडन ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को टी-शर्ट गिफ्ट की, उस समय माइक्रोसॉफ्ट के सीईओ सत्या नडेला, महिंद्रा ग्रुप के चेयरमैन आनंद महिंद्रा, एप्पल के सीईओ टिम कुक और विदेश मंत्री एस जयशंकर समेत कई दिग्गज कार्यक्रम में उपस्थित थे।

प्रधानमंत्री मोदी ने ट्विटर पर उपहार की तस्वीर साझा की और लिखा, 'भविष्य एआई का है, चाहे वह आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस हो या अमेरिका-भारत!' प्रधानमंत्री मोदी ने आगे लिखा कि जब हम एक साथ मिलकर काम करते हैं तो हमारे राष्ट्र मजबूत होते हैं। साथ ही पूरी दुनिया को फायदा पहुंचता है। उल्लेखनीय है कि इससे पहले भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अमेरिकी संसद के संयुक्त सत्र को संबोधित करते हुए अमेरिका और इंडिया को एआई के रूप में संदर्भित किया था और कहा था कि भविष्य एआई का है और एक एआई, अमेरिका-इंडिया भी है। उन्होंने कहा कि भारत और अमेरिका के बीच दोस्ती को प्रगाढ़ करना हमारी प्रतिबद्धता है। पिछले कुछ वर्षों में एआई यानी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में काफी प्रगति हुई है। साथ ही, दूसरे एआई यानी अमेरिका और इंडिया में और भी महत्वपूर्ण विकास हुए हैं। इस तरह प्रधानमंत्री मोदी ने अमेरिका और भारत के बीच तकनीकी सहयोग को प्रदर्शित करने के लिए एक नया संक्षिप्त नाम संदर्भित किया।

## अमित शाह ने जम्मू-कश्मीर पुलिस के शहीद जवानों के परिजनों से मुलाकात कर सौंपे नियुक्ति पत्र

**श्रीनगर, (हि.स.)।** केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने दो दिवसीय जम्मू-कश्मीर दौरे के दूसरे दिन शनिवार को राज्य पुलिस के शहीद जवानों के परिजनों से मुलाकात कर नियुक्ति पत्र सौंपे। इसके बाद गृहमंत्री शाह दिल्ली के लिए रवाना हुए। गृहमंत्री ने अपने ट्वीट में कहा कि जम्मू-कश्मीर पुलिस के असंख्य जवान, जिन्होंने आतंकियों से लड़ते हुए निर्दोष नागरिकों की सुरक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दी, यह इस बात का प्रमाण है कि कश्मीर और वहां के लोग शांति के लिए कितने प्रतिबद्ध हैं। आज श्रीनगर में ऐसे शहीदों के परिजनों से मुलाकात की और शहीदों के परिजनों को जम्मू-कश्मीर सरकार की ओर से नियुक्ति पत्र सौंपे। इससे पहले अमित शाह ने श्रीनगर के ऐतिहासिक लाल चौक से सटे प्रताप पार्क में उप राज्यपाल मनोज सिन्हा तथा अन्य अधिकारियों की मौजूदगी

में बलिदान स्तंभ का शिलान्यास किया। इसके बाद उन्होंने वरिष्ठ नेता डॉ. कर्ण सिंह से भी मुलाकात की और पुलिस गोल्फ कोर्स में शहीद गैलरी का उद्घाटन किया। गृहमंत्री ने ट्वीट कर कहा कि जम्मू-कश्मीर देश के शौर्यवीरों के अदम्य साहस एवं वीरता की कर्मभूमि रही है। ऐसे ही वीरों के पराक्रम को चिरंजीवी बनाने के लिए आज श्रीनगर के प्रताप पार्क में बलिदान स्तंभ का शिलान्यास किया। यह स्तंभ बलिदानियों की स्मृति को अमर कर युवाओं को देशभक्ति की प्रेरणा देगा।

## पक्षियों की खरीद-फरोख्त वाली दुकान में छापेमारी, प्रतिबंधित प्रजाति के 19 कछुए और 40 तोते बरामद

**अजय त्यागी**

**नई दिल्ली।** उत्तरी पूर्वी दिल्ली जिला पुलिस टीम ने शास्त्री पार्क इलाके में पक्षियों की खरीद-फरोख्त करने वाली दुकान में छापा मारकर प्रतिबंधित प्रजातियों के 19 कछुए और 40 तोते बरामद किए हैं। छापेमारी की भनक लगते ही दुकानदार फरार हो गया। फिलहाल मुकदमा दर्ज कर आरोपित की तलाश की जा रही है। उत्तर पूर्वी दिल्ली जिला के डीसीपी डॉ जॉय टिर्की ने बताया कि शुक्रवार को पूर्व केंद्रीय मंत्री मेनका गांधी के संगठन पीएफए (पीपुल फॉर एनिमल) के एनिमल वेलफेयर ऑफिसर गौरव गुप्ता ने इसकी सूचना दी थी कि शास्त्री पार्क थाना क्षेत्र में प्रतिबंधित विशेष प्रजाति के कछुए और तोते की बिक्री की जा रही है। शिकायतकर्ता गौरव गुप्ता ने बताया कि वह पीएफए संगठन में पशु कल्याण अधिकारी के रूप में काम कर रहा है। उसने देखा है कि बुलंद मस्जिद शास्त्री पार्क दिल्ली के पास स्थित पक्षियों की

खरीद-फरोख्त वाली एक दुकान में कछुए और तोते की कुछ प्रतिबंधित प्रजातियां अवैध रूप से बेची जा रही हैं। इसके बाद एसीपी/डीआईयू की देखरेख में पुलिस इंस्पेक्टर अश्विनी कुंडू, एसआई सागर यादव, एसआई सत्यवीर और एएसआई जोगिंदर की एक समर्पित टीम का गठन किया गया। टीम ने शिकायतकर्ता और उनकी टीम के साथ छापा मारा। पुलिस की छापेमारी को भांपकर दुकानदार भाग निकला। इस दौरान दुकान की तलाशी लेने पर 19 विशेष प्रजाति के कछुए और 40 तोते बरामद किए गए। डीसीपी ने बताया कि वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972, 11 (1) (आई) पशु क्रूरता निवारण अधिनियम, 1960 और आईपीसी की धारा 429 के तहत शास्त्री पार्क थाने में मुकदमा दर्ज कर लिया गया है और मामले की जांच की जा रही है। दुकानदार की गिरफ्तारी के लिए कई टीमों का गठन किया गया है। साथ ही टीम दुकानदार की तलाश में उसके ठिकानों पर छापेमारी कर रही है। जल्द ही आरोपित दुकानदार को पकड़ लिया जाएगा।

## प्रदेश की कानून व्यवथा चरमराई, मंत्रियों में बढ़ी दरार : भाजपा

**शिमला, (हि.स.)।** भारतीय जनता पार्टी ने आरोप लगाया है कि हिमाचल प्रदेश की कांग्रेस सरकार पूरे प्रदेश के अंदर स्वयं ही कानून व्यवस्था की स्थिति बिगाड़ने में लगी है। प्रदेश में जनता का विश्वास सरकार के ऊपर से लगातार उड़ता चला जा रहा है। कांग्रेस के मंत्रियों के बयान बाजी से प्रतीत होता है कि मंत्री एक दूसरे को निपटाने में लगे है। शनिवार को एक बयान में प्रदेश भाजपा प्रवक्ता बलदेव तोमर ने कहा कि चंबा में जो दुर्दांत हत्याकांड हुआ उसने कानून व्यवस्था को बिगाड़ने में कांग्रेस पार्टी को सरकार ने अहम भूमिका निभाई। समय रहते कार्रवाई न करना और जनता का विश्वास कार्यवाही न करने से सरकार पर से उठ जाना, यही वजह है कि अभी तक इतने दिन बीत जाने पर

भी चंबा का जनमानस उद्वेलित है, आक्रोशित है, ऐजिटेटिड है। चंबा हत्याकांड में सरकार केवल अपना चेहरा बचाने का प्रयास कर रही है। भाजपा नेता ने कहा कि नालागढ़ में पुलिस की लापरवाही से एक व्यक्ति की कथित असावधानी से एक व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है जिससे जनता में रोष स्वाभाविक है। सिरमौर में पुलिस राह चलते युवकों पर प्रहार करती है। युवक के कान का पर्दा फट जाता है और न सरकार, न प्रशासन, काई व्यक्ति गौर नहीं करता और कानून व्यवस्था बिगड़ने लगती है। उन्होंने कहा कि ऊना में दिन दिहाड़े छुरा बाजी होती है, सरकार जागती नहीं है और कानून व्यवस्था लचर होती है। शिमला में झगड़ा होता है, सिर फूटते हैं और सरकार के मंत्री झगड़े में घी डालने का काम करते हैं और पूरी सरकार गुत्थमगुत्था हो जाती है तथा कानून व्यवस्था चरमराती है। भाजपा नेता ने कहा कि ऐसा प्रतीत होता है कि यह अव्यवस्था स्टेट स्पोंस्र्ड है तथा सरकार के लोगों द्वारा ही प्रदेश की शांति को बिगाड़ने का काम किया जा रहा है। कांग्रेस नेताओं की आपसी प्रतिस्पर्धा से प्रदेश के विकास को ठेस पहुंच रही है।

## भारत के प्रति मोदी निष्ठावान, राहुल को नुकसान पहुंचाने वाला बताया

**नई दिल्ली (ईएमएस)।** भाजपा आईटी सेल ने पीएम मोदी व राहुल गांधी के विदेश में दिए गए वक्तव्यों की तुलना की है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अमेरिकी यात्रा और कांग्रेस नेता राहुल गांधी की विदेश यात्रा के दौरान, दोनों नेताओं द्वारा भारत और भारतीय लोकतंत्र को लेकर दिए गए वक्तव्यों की तुलना करते हुए भाजपा ने दावा किया है कि भारत के प्रति प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की निष्ठा निर्विवाद है, जबकि इसके विपरीत कांग्रेस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी को व्यक्तिगत लाभ के लिए देश के हितों को नुकसान पहुंचाने में भी कोई परेशानी नहीं है। भाजपा आईटी सेल के हेड अमित मालवीय ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राहुल गांधी के दो वीडियो को ट्विटर पर शेयर करते हुए कहा, राहुल गांधी एक

विशेषाधिकार प्राप्त वंशवादी हैं, लेकिन बेहद औसत दर्जे के हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी एक स्व-निर्मित व्यक्ति और असाधारण रूप से प्रतिभाशाली हैं। लेकिन एक चीज जो वास्तव में उन्हें अलग करती है, वह है देश के प्रति उनका प्यार और प्रतिबद्धता। मालवीय ने हा कि, व्यक्तिगत लाभ के लिए राहुल गांधी को भारत के हितों की अदला-बदली करने में कोई परेशानी नहीं है, जबकि दूसरी ओर पीएम मोदी की भारत के प्रति निष्ठा निर्विवाद है।

## ओमीक्रॉन के लिए बूस्टर टीका एम-आरएनए आधारित जेमकोवैक- ओम को किया गया लॉन्च

**नई दिल्ली, (हि.स.)।** केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने शनिवार को ओमीक्रॉन-विशिष्ट बूस्टर टीका एमआरएनए-आधारित जेमकोवैक -ओम को लॉन्च किया। यह भारत का पहला एमआरएनए वैक्सीन जेनोवा द्वारा स्वदेशी प्लेटफॉर्म तकनीक का उपयोग करके विकसित किया गया है। इसे विकसित करने के लिए जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी) और जैव प्रौद्योगिकी उद्योग अनुसंधान सहायता परिषद (बीआईआरएसी) ने वित्तीय सहायता प्रदान की है। कुछ दिन पहले इस वैक्सीन को ड्रग कंट्रोल जनरल ऑफ इंडिया ने आपातकालीन उपयोग के लिए मंजूरी दी थी। इस वैक्सीन को

कोल्ड स्टोरेज की आवश्यकता नहीं है। दूरदराज के इलाकों में भी इसे लगाना आसान है और इसे सुई के इंजेक्शन के बिना भी लगाया जा सकता है।

इस मौके पर डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि सरकार ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आत्मनिर्भरता के दृष्टिकोण के अनुरूप 'भविष्य के लिए तैयार' प्रौद्योगिकी मंच के निर्माण की दिशा में तेजी से काम किया है। डीबीटी इस मिशन को पूरा कर रहा है। उन्होंने कहा कि यह नवाचार हमारे देश में अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति के जीवन को आसान बना रहा है। इसकी अनूठी विशेषता यह है कि इस टीके को सुई के इंजेक्शन के बिना भी लगाया जा सकता है।

## 28 जून को बंगाल के कानून मंत्री को ईडी ने पूछताछ के लिए बुलाया

**कोलकाता (ईएमएस)।** केंद्रीय प्रवर्तन निदेशालय ने पश्चिम बंगाल के कानून मंत्री मलय घटक को समन जारी किया है। उन्हें 28 जून को नई दिल्ली में ईडी अधिकारियों के सामने पेश होने के लिए कहा है। इसके पहले 19 जून को नई दिल्ली में उपस्थित होने के लिए समन भेजा था। लेकिन वह ईडी कार्यालय में उपस्थित नहीं हुए थे। ईडी के समक्ष अभी तक दो बार वह अधिकारियों के सामने उपस्थित हुए थे। उनसे जो पूछताछ की गई थी, उसका जवाब भी दिया था। पिछले साल सितंबर माह में उनके आवास पर सीबीआई ने छापा डालकर तलाशी अभियान चलाया था। अब ईडी ने तीसरी बार उन्हें पूछताछ के लिए बुलाया है। कोयला तस्करी के मामले में उनसे लगातार पूछताछ की जा रही है।

## प्रधानमंत्री मोदी की अमेरिका यात्रा ऐतिहासिक: भाजपा

**नई दिल्ली, (हि.स.)।** भारतीय जनता पार्टी ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अमेरिकी यात्रा को ऐतिहासिक बताया है। शनिवार को केन्द्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने प्रेसवार्ता में कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अमेरिका यात्रा बेहद सफल रही है। पुरी ने कहा कि दोनों देशों ने आईसीएईटी की घोषणा के माध्यम से अपनी रणनीतिक साझेदारी को बढ़ाया, जो कि महत्वपूर्ण और उभरती प्रौद्योगिकी पर पहल है। यह भारत-अमेरिका संबंधों में एक प्रमुख मील का पत्थर है। साथ ही नासा और इसरो 2023 तक मानव अंतरिक्ष उड़ान सहयोग के लिए एक रणनीतिक ढांचा विकसित करेंगे। यह दो सबसे बड़े लोकतंत्रों के बीच मजबूत साझेदारी का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री जब पहली बार अमेरिका दौरे पर गए थे

तब भारत दुनिया की 10वीं अर्थव्यवस्था था और आज भारत दुनिया की 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है। अमेरिकी कांग्रेस के संयुक्त सत्र में उनका संबोधन और वहां के प्रतिनिधियों का उनसे ऑटोग्राफ मांगना उनके एक विश्व नेता होने का प्रमाण है। दुनियाभर के कुछ ही लोगों ने अमेरिकी कांग्रेस के संयुक्त सत्र को संबोधित किया। अगर इतिहास को देखें तो नेल्सन मंडेला और विंस्टन चर्चिल ने अमेरिकी कांग्रेस के संयुक्त सत्र को संबोधित किया था।

## 'उद्यमी भारत - एमएसएमई दिवस' 27 जून को विज्ञान भवन में मनाया जाएगा

**अजय कुमार**

**नई दिल्ली।** केंद्रीय सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय 27 जून को अंतरराष्ट्रीय सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम दिवस के अवसर पर यहां विज्ञान भवन में उद्यमी भारत-एमएसएमई दिवस का आयोजन कर रहा है। कार्यक्रम में केंद्रीय सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्री नारायण राणे मुख्य अतिथि होंगे जबकि राज्य मंत्री (एमएसएमई) भानु प्रताप सिंह वर्मा सम्मानित अतिथि होंगे। इस कार्यक्रम के दौरान, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम की वृद्धि और विकास के लिए विभिन्न पहल शुरू करेगा। जिनमें क्लस्टर परियोजनाओं और प्रौद्योगिकी केंद्रों की जियो-टैगिंग के लिए चैंपियंस 2.0 पोर्टल तथा मोबाइल ऐप का शुभारंभ शामिल है।

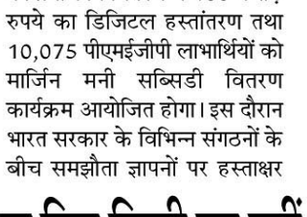


इस आयोजन के दौरान 'एमएसएमई आइडिया हैकथॉन 2.0' के परिणाम भी घोषित किए जाएंगे और महिला उद्यमियों के लिए 'एमएसएमई आइडिया हैकथॉन 3.0' की शुरूआत की जाएगी। इसके अलावा, गोल्ड और सिल्वर जेडईडी प्रमाणित एमएसएमई को प्रमाणपत्र वितरण व 400 करोड़ रुपये का डिजिटल हस्तांतरण तथा 10,075 पीएमईजीपी लाभार्थियों को मार्जिन मनी सब्सिडी वितरण कार्यक्रम आयोजित होगा। इस दौरान भारत सरकार के विभिन्न संगठनों के बीच समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर भी किये जाएंगे। सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय का उद्देश्य अपनी योजनाओं और गतिविधियों के माध्यम से सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों के लिए कई पहल करना है। जिनमें कारोबारी माहौल में सुधार करना, नए उत्पादों तथा सेवाओं के नवाचार व विकास को प्रोत्साहित करना, क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा देना और क्षेत्रीय असमानताओं को दूर करना, घरेलू एवं वैश्विक दोनों तरह बाजारों में कारोबार के अवसर पैदा करना तथा स्थायी कार्य प्रणालियों अपनाकर को एमएसएमई को प्रोत्साहित करना शामिल है। सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय देश भर में रोजगार के अवसर सृजित करने और एमएसएमई की उत्पादकता तथा प्रतिस्पर्धात्मकता में बढ़ोतरी करने पर बल देता रहता है।

## नई शराब नीति से नहीं हुई राजस्व में 40 फीसदी बढ़ोतरी: जयराम ठाकुर

**शिमला, (हि.स.)।** नेता प्रतिपक्ष जयराम ठाकुर ने कहा है कि प्रदेश की सुखविंदर सिंह सुक्खू सरकार ने नई शराब नीति से 40 फीसदी आय बढ़ाने के मामले में हिमाचल की लोगों से झूठ बोला। मुख्यमंत्री ने विधान सभा में खड़े होकर कहा था कि नई शराब नीति से आबकारी से होने वाले राजस्व में 40 फीसदी की बढ़ोतरी होगी। परंतु ऐसा कुछ नहीं हुआ। आबकारी एवं कराधान विभाग द्वारा जारी किए गए आँकड़ों से यह साफ हो गया है कि पिछले तीन महीनें में आबकारी से राजस्व में लगभग 13 प्रतिशत की ही वृद्धि हुई है नेता प्रतिपक्ष ने शनिवार को एक बयान में कहा कि यह सामान्य वृद्धि है, जो हर वर्ष होती हैं। भारतीय जनता पार्टी की पूर्व सरकार में भी कोरोना जैसी महामारी के बाद भी आबकारी राजस्व की वृद्धि इसी प्रकार थी। नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि मुख्यमन्त्री, उप मुख्यमंत्री और सरकार में बैठे लोग चाहे जितना झूठ बोल लें, लेकिन सच बाहर आ ही जाता है। सच्चाई यह है कि नई शराब नीति से प्रदेश के राजस्व में कोई वृद्धि नहीं हुई। नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि मुख्यमन्त्री ने विधान सभा में खड़े होकर झूठ बोला था कि प्रदेश में नई शराब नीति लागू करने से प्रदेश में आबकारी से होने वाली आय में 40 प्रतिशत में बढ़ोतरी होगी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि मुख्यमंत्री और उप मुख्यमन्त्री यह स्पष्ट करें कि उन्होंने विधान सभा के पटल से हिमाचल के लोगों से झूठ क्यों बोला। नेता प्रतिपक्ष जयराम ठाकुर ने कहा कि मुख्यमंत्री और उप मुख्यमंत्री हिमाचल के लोगों से माफी मांगे। जयराम ठाकुर ने आरोप लगाया कि इस सरकार में शराब माफिया हावी है। बिलासपुर में आंगनबाड़ी केंद्र के बगल में ही शराब की दुकान खुलवा दी, जब आंगनबाड़ी में आने वाले बच्चों के अभिभावकों ने इसका विरोध किया तो सरकार ने आंगनबाड़ी केंद्र ही हटाने का आदेश जारी कर दिया। नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि प्रदेश में स्कूल पर ताले लग रहे है और शराब की दुकानें रात के एक-एक बजे तक खुल रही हैं। इस तरह की घटनाएं साफ करती हैं कि प्रदेश में सक्रिय हैं।

## मुख्यमंत्री शिवराज की बड़ी घोषणा- ग्वालियर में बनेगा लोकमाता अहिल्याबाई का भव्य स्मारक

**- बस स्टैण्ड का नाम अहिल्याबाई होल्कर होगा, जन्मदिवस पर एच्छिक अवकाश**
**- पाल, बघेल व धनकर समाज के कल्याण के लिए प्रदेश में गठित होगा बोर्ड**

**ग्वालियर, (हि.स.)।** मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर ने लोक कल्याण के लिये जो कार्य किए, उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता। मुख्यमंत्री ने कहा कि माँ अहिल्याबाई होल्कर का ग्वालियर में भव्य स्मारक बनाया जाएगा। बेहटा में बन रहे बस स्टैण्ड का नाम अहिल्याबाई होल्कर के नाम पर रखा जाएगा। लोकमाता अहिल्याबाई के जन्मदिवस पर प्रदेश में ऐच्छिक अवकाश रहेगा। इसके साथ ही बघेल और धनगर समाज के कल्याण के लिये प्रदेश में एक बोर्ड गठित किया जाएगा। इसके अध्यक्ष को कैबिनेट मंत्री का दर्जा होगा। मुख्यमंत्री चौहान ने यह घोषणाएं शनिवार को ग्वालियर के ग्रामीण क्षेत्र बेहटा में बघेल समाज के सम्मेलन को संबोधित करते हुए की। उन्होंने कहा कि देवी अहिल्याबाई ने देश एवं दुनिया में सुशासन का जो मंत्र दिया, उसके इन कार्यों को आज भी याद किया जाता है। कार्यक्रम में केन्द्रीय कृषि मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर, नागरिक उड्डयन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया, मप्र के मंत्रीगण तुलसीराम सिलावट, सुरेश राठखेड़ा, भारत सिंह कुशवाह, क्षेत्रीय सांसद विवेक नारायण शेजवलकर, बघेल समाज आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र पाल सहित जनप्रतिनिधि और बड़ी संख्या में ग्वालियर-चंबल अंचल के बघेल समाज के नागरिक उपस्थित थे। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में पिछड़ी जातियों के हितार्थ के लिये कल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से निरंतर कार्य किया जाएगा। बहनों के सशक्तिकरण और उनकी जिंदगी बदलने के लिए मध्य प्रदेश में मुख्यमंत्री लाडली बहना योजना शुरू की गई है। पढ़ाई के लिए मेधावी छात्रवृत्ति के साथ पाल, बघेल समाज के छात्र-छात्राओं को मेडिकल एवं इंजीनियरिंग की शिक्षा के लिए भी सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी। मेडिकल, इंजीनियरिंग की शिक्षा हिंदी भाषा में शुरू होने से पाल, बघेल एवं गरीब समाज के छात्रों को इसका लाभ मिलेगा। केन्द्रीय कृषि मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने कहा कि हमारे बीच में त्याग, तपस्या और बलिदान की पूजा होती है। न्याय और कर्म की पूजा होती है। देवी अहिल्याबाई होल्कर ने न्याय और बलिदान का जो कार्य किया है उसे यह देश भुला नहीं पाएगा। ग्वालियर में बेहटा तिराहे पर माँ अहिल्या की प्रतिमा स्थापित हो जाने से यह तिराहा अब अहिल्या तीर्थ बन गया है। उन्होंने कहा कि देवी अहिल्याबाई होल्कर ने देश की आजादी में ही अग्रणी कार्य नहीं किया बल्कि काशी विश्वनाथ मंदिर की स्थापना का भी अनुकरणीय कार्य किया है। बघेल समाज के उत्थान के लिए भी मध्य प्रदेश सरकार अनेक कार्य कर रही है। केन्द्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कहा कि पाल बघेल समाज के त्याग को देश की 140 करोड़ जनता कभी भूल नहीं पायेगी। उन्होंने अहिल्याबाई होल्कर के कार्य एवं सेवाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि मातृ शक्ति के रूप में मिसाल पेश की। माता अहिल्याबाई ने रणभूमि में नेतृत्व करते हुए अत्याचारियों के विरुद्ध लड़ाई लड़ी। माता अहिल्याबाई ने भारत की आर्थिक एवं आध्यात्मिक शक्ति को देश में प्रज्ज्वलित करने का काम भी किया। उन्होंने देश के विभिन्न स्थानों पर हिन्दू मंदिर व धर्मशालाओं का निर्माण कराया। सिंधिया ने कहा कि पाल, बघेल व धनकर समाज से उनका खून का रिश्ता है। इस समाज से उनके पारिवारिक संबंध रहे हैं। उन्होंने कहा कि राजमाता विजयाराजे सिंधिया एवं कैलाशवासी माधवराव सिंधिया ने भी पाल बघेल समाज का कंधे से कंधा मिलाकर उनके उत्थान के कार्य किए। कार्यक्रम के शुरू में पाल बघेल धनकर समाज के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र पाल ने स्वागत भाषण दिया। कार्यक्रम को मंत्री भारत सिंह कुशवाह ने भी संबोधित किया। मुख्यमंत्री चौहान, केन्द्रीय मंत्री तोमर और सिंधिया ने कार्यक्रम में पहुँचने के पूर्व बेहटा में लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया।

## पटना में 15 दल मिले पर दिल किसी का नहीं मिला: अनुराग ठाकुर

**चंडीगढ़, (हि.स.)।** केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर ने देश में महागठबंधन की सभी संभावनाओं को खारिज करते हुए कहा है कि पटना में 15 दल एक साथ तो आए, लेकिन दिल किसी के नहीं मिल पाए। जो लोग खुद एक-दूसरे के खिलाफ हैं वह देश को स्थिर सरकार नहीं दे सकते। अनुराग ठाकुर मोदी सरकार के नौ साल पूरे होने के अवसर पर शनिवार को पानीपत में करनाल लोकसभा स्तर की रैली को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि विपक्षी गठबंधन पूरी तरह से निजी स्वार्थों से भरा हुआ है। जो लोग निजी स्वार्थों को आगे रखकर काम कर रहे हों, वह देश का भला कैसे कर सकते हैं। अनुराग ठाकुर ने कहा कि देश की जनता वर्ष 2024 में एक बार फिर से नरेंद्र मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने के लिए तैयार है।

हरियाणा की पूर्व हुड्डा सरकार पर कटाक्ष करते हुए अनुराग ठाकुर ने कहा कि कांग्रेसी जीजा को हरियाणा की पूर्व सरकार ने सबसे अधिक लाभ दिया है। दूसरी तरफ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में यह देश विश्व शक्ति के रूप में उभरा है। उन्होंने मोदी सरकार में हुए विकास कार्यों तथा केंद्र की योजनाओं से हरियाणा को मिले लाभ के बारे में रिपोर्ट कार्ड पेश करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने विदेश में भी देश का मान बढ़ाया है जबकि कांग्रेस ने सदा नीचा दिखाने की कोशिश की है। इस अवसर पर भाजपा प्रदेशाध्यक्ष ओम प्रकाश धनखड़ ने कहा कि मुख्यमंत्री मनोहर लाल के नेतृत्व में मौजूदा सरकार ने कई योजनाएं लागू की हैं। जिसका लाभ लोगों को मिल रहा है। इस अवसर पर करनाल के सांसद संजय भाटिया, जिला अध्यक्ष अर्चना गुप्ता, राज्य सभा सांसद कृष्णलाल पंवार, प्रदेश महामंत्री वेदपाल एडवोकेट, संदीप जोशी करनाल संसदीय क्षेत्र के सभी विधायक एवं नेता मौजूद थे।

# भारतीय वायुसेना के लड़ाकू विमानों ने सुलतानपुर में पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे पर दिखाए करतब

**सुलतानपुर, (हि.स.)।** उत्तर प्रदेश के सुलतानपुर में पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे के कूरेभार स्थित ग्राम अरवलकीरी करवत में बनी एयर स्ट्रिप पर शनिवार को भारतीय वायुसेना के लड़ाकू विमानों ने करतब दिखाए। यह अभ्यास करीब दो घंटे तक चला। साढ़े तीन किमी की एयर स्ट्रिप पर लड़ाकू विमान सुखोई और मिराज ने टच एंड गो का अभ्यास किया। इस कार्यक्रम के मद्देनजर करीब 12 किमी मार्ग को बंद कर रूट डायवर्ट कर दिया गया है। इससे पहले साल 2021 में पहली बार एयर स्ट्रिप पर फाइटर प्लेन ने अभ्यास किया था। एयर फोर्स के अधिकारी एयर स्ट्रिप पर शनिवार सुबह ही पहुंच गए थे। इसके बाद वायुसेना के लड़ाकू विमान आना शुरू हुए। फिर करीब 11 बजे एयरस्ट्रिप पर सुखोई और मिराज जैसे जंगी जहाजों ने उड़ान भरना शुरू किया। इस दौरान सेना के अधिकारियों के साथ जिलाधिकारी जसजीत कौर, पुलिस अधीक्षक सोमेन वर्मा, जयसिंहपुर विधायक राजबाबू उपाध्याय, भाजपा जिलाध्यक्ष डॉ आरए वर्मा समेत कई प्रमुख लोग मौजूद रहे। आसपास के दो दर्जन से अधिक गांवों के लोग भी एयर शो देखने पहुंचे थे। जैसे ही जंगी जहाज उड़ान भरते लोग तालियां बजाने लगते। वहीं एयर स्ट्रिप पर अचानक कुत्ता आने से वायुसेना दल अलर्ट हुआ। पुलिस अधीक्षक सोमेन वर्मा के निर्देश पर एयर स्ट्रिप पर कुत्तों को रोकने के लिए फोर्स लगाई गई। उधर आसमान में हल्के-हल्के बादल आते देख ठीक एक बजे एयर शो रोक दिया गया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 16 नवंबर 2021 को पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे राष्ट्र को समर्पित किया था। इस दौरान ग्राम अरवलकीरी करवत के पास बनी एयर स्ट्रिप पर सुखोई, जगुआर और मिराज जैसे लड़ाकू विमानों ने आसमान में करीब एक घंटे तक करतब दिखाए थे। खुद प्रधानमंत्री मोदी एयरफोर्स के हरक्यूलिस विमान से एयर स्ट्रिप पर उतरे थे। उल्लेखनीय है कि लखनऊ से गाजीपुर तक 341 किमी लंबे पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे का निर्माण कार्य अक्टूबर 2018 से शुरू हुआ था, जो सितंबर 2021 में बनकर पूरा हुआ।

# कुशीनगर में स्मृति ईरानी ने गिनाई नौ साल की उपलब्धियां

## -डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक ने कहा-जनता का मोदी पर भरोसा बढ़ा

**कुशीनगर, (हि. स.)।** केंद्रीय महिला एवं बाल कल्याण मंत्री स्मृति ईरानी ने शनिवार को कुशीनगर के बुद्धा पार्क में आयोनित जनसभा में केंद्र की भाजपा सरकार की नौ साल की उपलब्धियां गिनाई। उन्होंने कहा कि नौ साल की सेवा के जरिये सरकार ने लोगों का विश्वास जीता है। इन नौ साल में किए गए केंद्र सरकार के कार्यों के उपलब्धियों को जन-जन तक पहुंचाने का काम किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि आज आमजन को सरकार की योजनाओं का शत-प्रतिशत लाभ मिल रहा है। देश का प्रत्येक वर्ग आज मोदी जी के नेतृत्व में गौरवान्वित महसूस कर रहा है।

उन्होंने कुशीनगर में एयरपोर्ट, मेडिकल कालेज, कृषि विश्वविद्यालय, उच्चीकृत सड़कें, प्रस्तावित रेल लाइन का जिक्र करते हुए कहा कि यह सभी कार्य भाजपा सरकार की देन है। देश भर में ग्रामीण महिलाओं को उज्ज्वल योजना के तहत मुफ्त रसोई गैस व चूल्हा देकर सरकार ने उन्हें विकास की मुख्य धारा से जोड़ा है। उन्होंने कहा कि कोविड की परिस्थिति के बावजूद देश में 200 करोड़ से ज्यादा वैक्सीन को देश की जनता तक पहुंचाया गया, ये सिर्फ मोदी सरकार में ही मुमकिन था। 80 करोड़ लोगों को मुफ्त अनाज दिया गया। एक भी टैक्स नहीं बढ़ाया गया। कांग्रेस पर हमला बोलते हुए उन्होंने कहा कि 12 लाख करोड़ के घोटाले करने वाली कांग्रेस भ्रष्टाचार की मोटी किताब है। डिप्टी सीएम बृजेश पाठक ने कहा कि आने वाले लोकसभा चुनाव में भाजपा की एकतरफा जीत होगी। आज गरीब कल्याण की योजनाएं जनता तक पहुंच रही हैं। जनता का भरोसा देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर लगातार बढ़ रहा है। सभा को कुशीनगर के सांसद विजय दुबे, पूर्व मंत्री आरपीएन सिंह, राज्य मंत्री दर्जा प्राप्त राजेश्वर सिंह, विधायक मनीष जायसवाल, विधायक पी एन पाठक ने सम्बोधित किया। इसके पूर्व पुलिस लाइन पर बने हैलीपैड पर दोनों नेताओं का जिला प्रशासन व भाजपा के प्रमुख पदाधिकारियों ने स्वागत किया।

# वायु सेना के दस लड़ाकू विमानों ने दिखाए हैरतअंग्रेज कारनामे

**सुलतानपुर, (हि.स.)।** अयोध्या के निकट जिला सुलतानपुर के पूर्वांचल एक्सप्रेस वे पर अरवल कीरी करवत गांव में शनिवार को भारतीय वायुसेना के लड़ाकू10 विमानों के पायलटों ने हैरतअंगेज कारनामों का सफल प्रदर्शन किया जो आसपास के गांवों के लोगों में कौतूहल का विषय बना रहा। एन 32 के एक, चार मिराज, एक जगुआर, दो सुखोई सुमित 10 लड़ाकू विमान एयर शो में शामिल हुए। ग्रुप कैप्टन डी नौटियाल इसे लीड कर रहे थे। एयर कमोडोर मनीष सरदेव की मौजूदगी में संचालन हुआ। एयर शो का कमांड प्रयागराज से किया जा रहा था। पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे के कूरेभार स्थित अरवल कीरी करवत में बनी एयर स्ट्रिप पर शनिवार को कुल 2 घंटे ही फाइटर विमानों का एयर शो हुआ। 3.5 किमी की एयर स्ट्रिप पर फाइटर प्लेन सुखोई और मिराज ने टच एंड गो का अभ्यास किया। भारतीय वायु सेना के अधिकारियों के द्वारा एयर स्ट्रिप के 5 किलोमीटर के क्षेत्र को 11 जून से ही अपने कब्जे में लिया गया था।जहां पर भारतीय सशस्त्र सेना व भारतीय वायु सेना के जवानों के द्वारा एयरस्ट्रिप पर मरम्मतीकरण किया गया,वायुसेना के लड़ाकू विमानों के अशोक को देखने के लिए आज सुबह से ही एयर स्ट्राइक के आसपास ग्रामीणों की भीड़ एकत्रित हो गई थी। सुरक्षा व्यवस्था के पुख्ता इंतजाम के बावजूद एयर स्ट्रिप पर कुत्ता आ जाने से एक बार हड़कंप मच गया। एयर फोर्स के जवानों और स्थानीय सिपाहियों को लगाकर जानवरों की आवाजाही को लेकर एयर स्ट्रिप सील किया गया। इस कार्यक्रम के मद्देनजर 12 किमी मार्ग बंद कर रूट डायवर्ट किया गया है। इससे पहले 16 नवंबर 2021 को पहली बार एयर स्ट्रिप पर फाइटर प्लेन ने टच एंड गो किया था। शनिवार सुबह 10 बजे से एयर फोर्स के अधिकारी एयर स्ट्रिप पर पहुंच गए थे। इसके बाद सेना के हवाई जहाजों का आना शुरू हुआ।

# एमपीएमएलए कोर्ट 15 को करेगा मुख्तार के दो मामलों में सुनवाई

## -राम सिंह मौर्या की हत्या और गैंगस्टर एक्ट के मामलों में मुख्तार अंसारी की वीसी से हुई पेशी

**मऊ (हि. स)** रामसिंह मौर्या और सिपाही सतीश की हत्या तथा गैंगस्टर एक्ट के मामले में शनिवार को बांदा जेल में बंद मुख्तार अंसारी की पेशी वीडियो कांफ्रेंसिंग से हुई। हत्या के मामले में वादी मुकदमा अशोक सिंह की अर्जी पर उच्च न्यायालय ने कार्यवाही पर रोक लगा दी है। जिसके चलते विशेष न्यायाधीश एमपी/एमएलए दिनेश कुमार चौरसिया ने दोनों मामलों में सुनवाई के लिए 15 जुलाई की तिथि नियत की। पहला मामला थाना दक्षिणटोला क्षेत्र का है। अभियोजन के अनुसार वादी मुकदमा अशोक कुमार सिंह की तहरीर पर पांच नामजद और कुछ अज्ञात हत्यारोपियों के विरुद्ध दक्षिण टोला थाने में रिपोर्ट दर्ज हुई थी। इसमें मुख्तार अंसारी सहित पांच लोगों को नामजद किया गया था। आरोप है कि 19 मार्च 2010 को अजय प्रकाश सिंह उर्फ मुन्ना सिंह की हत्या के मामले के गवाह राम सिंह मौर्य और उनकी सुरक्षा में लगे सिपाही सतीश की तत्कालीन एआरटीओ कार्यालय के पास गोली मारकर हत्या कर दी गई। मामले में दोनों पक्षों की गवाही पूर्ण हो चुकी है। पत्रावली में बहस होनी है, लेकिन मुख्तार अंसारी की ओर से प्रार्थना पत्र देकर आरक्षी राजेंद्र यादव, संतोष सिंह व राजेंद्र प्रसाद को सफाई साक्ष्य के लिए तलब किए जाने की मांग की गई है। मामले में वादी मुकदमा की अर्जी पर उच्च न्यायालय ने कार्यवाही पर रोक लगा दी है। जिसपर विशेष न्यायाधीश ने सुनवाई के लिए 15 जुलाई की तिथि नियत की। दूसरा मामला सरायलखंसी थाना क्षेत्र का है। विधायक निधि के गबन के मामले को आधार बनाकर निरीक्षक रामसिंह की तहरीर पर गैंगस्टर एक्ट मामले में एफआईआर दर्ज हुई। इसमें मुख्तार अंसारी व अन्य लोगों को आरोपी बनाया गया है। मामले में विशेष न्यायाधीश एमपी/एमएलए ने हाजिरी के लिए 15 जुलाई की तिथि नियत की ।

# आपातकाल की त्रासदी को आँखों से देखा और झेला है : अरुण कुमार

**सुलतानपुर, (हि.स.)।** फर्जी आरोप में मेरे पिता और चाचा को एक तुगलकी फरमान के तहत आपातकाल के दौरान जेल में बन्द कर दिया गया। जिंदगी जीना बहुत मुश्किल हो गया तो उस समय संघ के स्वयंसेवकों ने घर-घर राहत सामग्री पहुँचाई थी। जिले के वरिष्ठ पत्रकार रहे स्व. रामकृष्ण जायसवाल एवं उनके भाई आनंद कृष्ण जायसवाल ने आपात काल एवं मीसा तहत जेल की सजा काटी थी। बहुत यातनाएं झेलीं। रामकृष्ण जायसवाल के पुत्र अरुण जायसवाल ने हिन्दुस्थान समाचार से बात की। उनके चाचा आनंद कृष्ण जायसवाल बुजुर्ग हो गए हैं। कुछ बता पाने की स्थिति में नहीं है। अरुण जायसवाल ने बताया कि 1975 में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा लागू किए गए आपातकाल से सुलतानपुर में कई परिवारों के लोग प्रभावित हुए। इस दौरान कई लोगों को केंद्र सरकार में मंत्री रहे सुलतानपुर के नेता के इशारे पर 25 जून की रात्रि में उनके घरों से बिना कुछ बताए गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हें जेल की सलाखों के पीछे भेज दिया गया। इस घटना से जो भी परिवार के सदस्य जेल मैं बंद हुए, उनके परिवार के लोगों पर जैसे घोर विपत्ति आ पड़ी। यही नहीं, परिवार के लोगों को आर्थिक एवं मानसिक रूप से भी कष्ट सहना पड़ा। उन्होंने बताया कि मुझे याद है कि मैं लगभग उस समय 18 वर्ष का था, जेल में बंद पिता श्री स्व रामकृष्ण से मिलने के लिए कलेक्ट्रेट कचहरी में एडीएम कार्यालय का चक्कर लगाना पड़ता था, तब जाकर मिलाई के लिए पास जारी होता था और हम लोग परिवार के साथ रविवार को पिताजी से मिलने जेल जाते थे।

वहां भी घंटों इंतजार के बाद ही मिलाई हो पाती थी। जायसवाल ने बताया कि मुझे यह भी याद है कि उस समय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के जिला प्रचारक रामलखन व नगर प्रचारक गोपाल जेल में बंद सभी स्वयंसेवकों के परिवार जनों की मदद अनाज व आर्थिक रूप से प्रत्येक माह जनसहयोग से करते थे। वह समय ऐसा था जब रिश्तेदार भी हमारे परिवार से मिलने से डरने लगे थे कि कहीं हम लोग भी सलाखों के पीछे न पहुंच जाएं। मुझे अच्छी तरह याद है कि इमरजेंसी लगने पर पिता जी को घर से पुलिस द्वारा गिरफ्तार किया था । दो माह तक वह डीआईआर में जेल में बंद रहे और बाद में पेरोल पर जेल से बाहर आये। उसके बाद आर्य समाज मंदिर में एक कार्यक्रम में जब पिताजी मौजूद थे, तभी पुलिस द्वारा उन्हें मीसा के तहत गिरफ्तार कर पुनः जेल भेज दिया गया। उन पर यह आरोप लगा दिया गया कि यह सरकार विरोधी व सरकारी संपत्ति को नुकसान पहुंचाने के कार्यों में लिप्त थे। इसी के बाद मेरे चाचा आनंद कृष्ण जायसवाल को भी डीआईआर व मीसा के तहत गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया। चाचा कुछ महीने सुलतानपुर जेल में रहे और उन्हें बरेली जेल ट्रांसफर कर दिया गया था। बरेली जेल में उनके साथ कल्याण सिंह, ओम प्रकाश सिंह जैसे भी लोग बन्द रहे। दोनों परिवार कांग्रेस सरकार की इस हठवादी के शिकार हो गई। जेल में बंद सभी लोगों को वीआईपी सेवा प्राप्त थी। जेल के अधिकारियों का भी बहुत ही सहयोग मिलता रहा। जेल के कर्मचारियों की मदद से हालचाल पत्रों के माध्यम से मिलता रहा। यही नहीं, वीआईपी श्रेणी के नाते सभी मीसा बन्दियों को ब्रेड, मक्खन आदि जो मिलते थे, उसे पिता जी हम लोगों के लिए सम्भाल कर रखते थे और जब रविवार को हम लोग मिलने जाते थे, तब वह हम लोगों को दे देते थे।

# राज्यपाल ने गोड्डा के सुंदर पहाड़ी प्रखंड में किया लोक संवाद

**गोड्डा, (हि.स.)।** राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन आज गोड्डा जिले के सुन्दरपहाड़ी प्रखंड पहुंचे तथा यहां फुटबॉल मैदान में 'लोक संवाद कार्यक्रम' में हिस्सा लिया। उन्होंने कहा कि उन्हें यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत 50 हजार से अधिक घरों का निर्माण किया जा चुका है। एक महिला ने बताया कि पक्का मकान मिल जाने से बहुत खुशी हो रही है और अब मौसम की मार नहीं झेलनी पड़ती है, इस पर राज्यपाल ने कहा कि सरकार का लक्ष्य है कि प्रत्येक बेघर का अपना घर हो। सिर्फ घर ही नहीं, घर के साथ उन्हें पेयजल भी उपलब्ध हो। उन्होंने कहा कि एक सम्मानजनक जिंदगी के लिए लोगों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति होनी चाहिए। लोक संवाद में स्वयं सहायता समूह की दीदियों ने भी अनुभव साझा किया। राज्यपाल ने जिले में एक लाख से अधिक महिलाओं के स्वयं सहायता समूह से जुड़ने पर प्रसन्नता व्यक्त की। साथ ही कहा कि स्वयं सहायता समूह से जुड़कर महिलाओं का सशक्तिकरण हो रहा है और उनके परिवार का जीवन स्तर भी बेहतर हो रहा है। कार्यक्रम में कस्तूरबा गांधी विद्यालय, स्कूल ऑफ एक्सीलेंस का दर्जा प्राप्त विद्यालय की छात्राओं ने बताया कि इस विद्यालय में बड़ी संख्या में गरीब परिवार के बच्चे पढ़ते हैं। वह सभी भी भविष्य में वह शिक्षक बनकर बच्चियों को शिक्षा प्रदान करने का काम करेंगी। राज्यपाल ने संवाद में मौजूद लोगों की समस्याओं के निराकरण की बात भी कही। उन्होंने जिले के विभिन्न विभागों द्वारा लगाए गए स्टाल का अवलोकन किया। साथ ही उपस्थित लाभुकों के बीच परिसंपत्तियों का वितरण भी किया।

# विपक्षी दलों की हुई बैठक ऐतिहासिक और अभूतपूर्व रही : शहजादा अनवर

**रांची, (हि. स.)।** झारखंड प्रदेश कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष शहजादा अनवर ने शनिवार को कहा कि विपक्षी दलों की हुई बैठक ऐतिहासिक और अभूतपूर्व रही है। अनवर ने विपक्षी दलों की हुई बैठक पर प्रतिक्रिया देते कहा कि इससे पहले भी विपक्ष की बैठकें हुई लेकिन पहली बार इतने बड़े पैमाने पर राजनीतिक दलों के साथ उनके शीर्ष नेताओं ने भाग लिया और चर्चा की। अनवर ने कहा कि केन्द्र की भाजपा के नेतृत्व में चलायी जा रही है सरकार के जरिये जिस प्रकार से देश में लोकतंत्र का गला घोटा जा रहा है। संवैधानिक मूल्यों को तार-तार किया जा रहा है। भय का माहौल बनाया जा रहा है, वैसे परिस्थिति में विपक्षी पार्टियों का एक साथ आना अपने आप में एक बड़ी बात और बड़ी राजनीतिक उपलब्धि है। अनवर ने कहा कि जुलाई महीने में शिमला में प्रस्तावित बैठक के बाद विपक्षी एकजुटता का ठोस स्वरूप और भावी लोकसभा चुनाव के संदर्भ में स्पष्ट रणनीति बना ली जाएगी। 2024 में केन्द्र की सत्ता से भाजपा की विदाई के लिए विपक्ष कोई कसर नहीं छोड़ेगा। झारखंड भाजपा के नेता राज्य में अपने अस्तित्व की चिंता करें। विपक्षी पार्टियों की बैठक पर बिना तथ्य के प्रतिक्रिया देना उनको शोभा नहीं देता है।

# हाई कोर्ट ने याचिकाकर्ता की जुर्माना राशि को घटाया

**रांची, (हि.स.)।** झारखंड हाई कोर्ट के चीफ जस्टिस संजय कुमार मिश्र की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने शनिवार को डबलिन यूनिवर्सिटी मिशन प्रॉपर्टी प्रोटेक्शन कमेटी के सचिव राजेश ए नंदी की ओर से दायर जनहित याचिका की सुनवाई की। खंडपीठ ने तथ्य छिपाकर जनहित याचिका दाखिल करने पर याचिकाकर्ता राजेश ए नंदी पर लगाए गए एक लाख रुपये की जुमार्ना राशि में से 50 हजार रुपये माफ कर दिया है। याचिकाकर्ता की ओर से कोर्ट से आग्रह किया गया था कि वह सेवानिवृत्त शिक्षक है।

इसलिए जुमार्ना की राशि घटाई जाए। पिछली सुनवाई में कोर्ट ने याचिकाकर्ता को इस केस से हटा दिया था। साथ ही उस पर एक लाख रुपये का जुमार्ना भी लगाया था। जुमार्ने की राशि याचिकाकर्ता को एडवोकेट एसोसिएशन, झारखंड हाई कोर्ट में जमा करनी थी। याचिकाकर्ता की ओर से याचिका दाखिल कर कहा गया था कि डबलिन यूनिवर्सिटी मिशन ट्रस्ट की प्रॉपर्टी चैरिटेबल कार्यों हॉस्पिटल स्कूल के लिए यूज हो सकती है लेकिन छोटानागपुर डायोसी ट्रस्ट एसोसिएशन के द्वारा इसकी संपत्ति को हजारीबाग में अवैध रूप से बेचा जा रहा है, इसकी जांच कराई जाए। सुनवाई में कोर्ट को बताया गया था कि वर्ष 1930 में डबलिन यूनिवर्सिटी मिशन एक कंपनी बन गई थी जिसका नाम डबलिन यूनिवर्सिटी मिशन ट्रस्ट एसोसिएशन था। वर्ष 1960 में इसकी ऐसेट एंड लायबिलिट छोटेनागपुर डायोसी ट्रस्ट एसोसिएशन मर्ज कर गया था। याचिकाकर्ता की ओर से एक सिविल सूट भी हजारीबाग सिविल कोर्ट में डाला गया था लेकिन इसकी जानकारी जनहित याचिका में याचिकाकर्ता की ओर से नहीं दी गई थी। इसके बाद कोर्ट ने याचिकाकर्ता पर नाराजगी जताते हुए उस पर एक लाख रुपये जुमार्ना लगाया था।

# भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष का कार्यक्रम स्थगित होना आगे बड़े कार्यक्रम का संकेत: घनश्याम ठाकुर

**मधुबनी, (हि.स.)।** जिला के झंझारपुर प्रखंड के कपूर्री स्टेडियम में शनिवार को वीरानगी सन्नाटा दृष्टव्य दिखा।जबकि चहुंओर टेन्ट हाउस की सामान बिखरा पड़ा था। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा का शनिवार को झंझारपुर आगमन कैंसिल होने से आम कार्यकताओं में मायूसी नजर आ रही है। भाजपा विधान पार्षद घनश्याम ठ-ाकुर ने बताया कि अपरिहार्य कारण से माननीय राष्ट्रीय अध्यक्ष नड्डा जी का प्रोग्राम तत्काल स्थगित हुआ। शनिवार को झंझारपुर में राष्ट्रीय अध्यक्ष का प्रोग्राम कैंसिल होना आगे किसी बड़े कार्यक्रम का संकेत उन्होंने बताया। विधान पार्षद घनश्याम ने बताया कि झंझारपुर लोकसभा क्षेत्र का राजनीतिक जुड़ाव राष्ट्रीय फलक पर पार्टी की मुख्य एजेण्डा से चिन्हित है। विधान पार्षद घनश्याम ठाकुर ने कहा कि यहां निकट भविष्य में केन्द्रीय गृह मंत्री अमित साह के प्रोग्राम की योजना बन रही है।भाजपाई जमीनी कार्यकर्ता व जन प्रतिनिधि माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व की नौ साल वेमिसाल की प्रचार- प्रसार में लगे हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा के प्रति अपार जन समर्थन खासकर ग्रामीण परिवेश में दिख रहा है। केन्द्र सरकार प्रायोजित विभिन्न योजनाओं की अप्रतिम सफलताओं का उदाहरण लोगों के बीच प्रस्तुत किया जा रहा है।झंझारपुर में उत्साहपूर्ण वातावरण तैयार हो रहा है।उन्होने।यथाशीघ्र झंझारपुर में भाजपा शीर्ष नेतृत्व द्वारा बहुत बड़ा कार्यक्रम होने की बात कही।

# विपक्षी दलों की बैठक से बौखलाए जेपी नड्डा कर रहे अनर्गल बयानबाजी : ललन सिंह

**पटना, (हि.स.)।** जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष और सांसद राजीव रंजन सिंह ललन ने शनिवार को भाजपा को निशाने पर लिया। उन्होंने कहा कि विपक्षी पार्टियों की बैठक से बौखलाए जेपी नड्डा अनर्गल बयानबाजी कर रहे हैं। आपातकाल के दौरान लड़ाई हमारी इंदिरा गांधी से नहीं थी। हम तात्कालिक शासन-व्यवस्था से लड़ रहे थे और आज भी हमारी लड़ाई मौजूदा सरकार की तानाशाही नीति और संविधान विरोधी मानसिकता के खिलाफ है। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने पत्रकारों से बातचीत में कहा कि देश में आज की स्थिति घोषित आपातकाल से भी बदतर है। विडंबना है कि लोकतंत्र की हत्या करने वाली भाजपा आज आपातकाल की बात कर रही है। 1974 में इमरजेंसी के दौरान तो प्रेस को पूरी आजादी थी लेकिन आज की तारीख में इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया भाजपा के नियंत्रण में है। सारे संवैधानिक संस्थाओं पर मौजूदा सरकार का अवैध कब्जा है। इंदिरा गांधी ने कभी विपक्षी दलों के विरुद्ध ईडी, सीबीआई और इनकम टैक्स का दुरुपयोग नहीं किया था लेकिन आज की सरकार तो जांच एजेंसियों के आड़ में आम लोगों को डरा रही है। गृहमंत्री अमित शाह पर तंज कसते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष ललन सिंह ने कहा कि अगर अमित शाह ऐसा दावा करते हैं कि 300 सीट जीतकर नरेन्द्र मोदी पुनः प्रधानमंत्री बनेंगे तो इसका अर्थ साफ है कि 2024 में भाजपा का बुरी तरह से सफाया होने वाला है। अमित शाह जब-जब भाजपा के जीत की भविष्यवाणी करते हैं तब-तब भाजपा बुरी तरह से हारती है। उन्होंने कहा 2015 बिहार विधानसभा चुनाव में भी अमित शाह ने बिहार में सरकार बनाने का दावा किया था लेकिन चुनाव परिणाम के दिन भाजपा 53 सीट तक सिमटकर रह गई है। पश्चिम बंगाल, कर्नाटक और हिमाचल चुनाव के दौरान भी गृह मंत्री अमित शाह ने भारी बहुमत से सरकार बनाने का दावा किया था लेकिन हकीकत आज देश की जनता के सामने है। लिहाजा अब नरेन्द्र मोदी की विदाई तय है।

# प्रशांत किशोर ने विपक्षी एकता पर कसा तंज

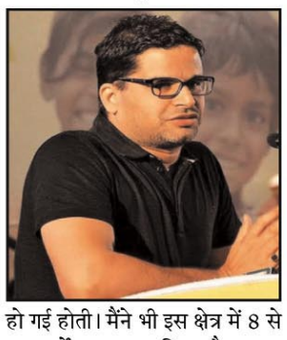

**पटना, (हि.स.)।** जन सुराज पार्टी के सुप्रीमो प्रशांत किशोर ने शनिवार को विपक्षी एकता पर तंज कसते हुए कहा कि एकता सिर्फ आपस में बैठने से नहीं होती है। इसके लिए जरूरी है कि विचारधारा के स्तर पर बात हो। नैरेटिव हो। चेहरा हो। आंदोलन हो और जमीन पर काम हो तब जाकर एकता होगी। साथ ही कहा कि जो लोग बताते हैं कि 1977 में सारे दल एक हो गए तो इंदिरा हार गईं, वे बेवकूफ बना रहे हैं। प्रशांत किशोर ने कहा कि 1977 से पहले जेपी का नव निर्माण आंदोलन हुआ। इमरजेंसी लागू हुई। सबकुछ हो गया तब जाकर सब दल एक साथ में आए। अगर इतना कुछ नहीं हुआ होता तो क्या सारे दल इंदिरा गांधी को हरा देते? 2019 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस बिहार में 10 सीटों पर चुनाव लड़ी थी, तो तेजस्वी यादव और नीतीश कुमार घोषणा कर दें कि कांग्रेस बिहार में कितने सीटों पर चुनाव लड़ेगी और कांग्रेस इस पर मान जाए। प्रशांत किशोर ने कहा कि साथ में बैठकर पत्रकार वार्ता करने से विपक्षी एकता अगर होनी होती तो 10 साल पहले हो गई होती। मैंने भी इस क्षेत्र में 8 से 10 वर्षों तक काम किया है। ममता बनर्जी से आप मिले और ममता बनर्जी ने एक स्टेटमेंट जारी किया। आपने एक स्टेटमेंट जारी किया। इसका जनता पर क्या असर पड़ा? ऐसा तो नहीं कि ममता बनर्जी ने कांग्रेस को कह दिया कि वो उन्हें पश्चिम बंगाल में लड़ने के लिए जगह दे देगी। कांग्रेस ने भी नहीं कहा कि हम वेस्ट बंगाल छोड़ देंगे ममता बनर्जी के भरोसे। प्रशांत किशोर ने कहा कि नीतीश कुमार जो विपक्षी एकता की बात कर रहे हैं वो बिहार का ही फामूर्ला जारी कर दें कि कांग्रेस-राजद और जदयू कितने सीटों पर लड़ेगी? महागठबंधन में बाकी अन्य जो सहयोगी दल हैं वो कितने सीट पर लड़ेगी? सीपीआई-सीपीआईएम और सीपीआई (एमएल) कितने सीटों पर लड़ेगी? प्रशांत किशोर ने कहा कि बिहार में ये फामूर्ला जारी कर देंगे इसके बाद आप दूसरे राज्यों में जाएंगे तब जाकर आपको दूसरे दल के लोग गंभीरता से लेंगे। विपक्षी एकता में होता ये है कि हर आदमी कहता है कि मैं अपनी ताकत पर चुनाव लडूंगा। दूसरे व्यक्ति को कहता है कि आप आपस में मिल जाएं। उन्होंने कहा कि सीपीआई (एमएल) का स्ट्राइक रेट बिहार में नीतीश कुमार से ज्यादा है। नीतीश कुमार की पार्टी एक सौ दस सीटों पर लड़कर 42 सीटें जीती। वहीं, सीपीआई (एमएल) 17 सीटों पर लड़कर 12 जीती है। इस हिसाब से सीपीआई (एमएल) को ज्यादा एमपी की सीट मिलनी चाहिए। क्या नीतीश कुमार अपनी सीटें छोड़ देंगे? बात तब बनेगी न जब आप में त्याग करने की क्षमता हो। तेजस्वी यादव बोल रहे हैं यहां हम लोगों के लिए छोड़ दीजिए। सीपीआई (एमएल) मान जाए तब जाकर विपक्षी एकता की बात होगी।

## संपादकीय

# दोस्ती के साथ तोहमतें भी

**राष्ट्रपति** जो बाइडेन और प्रधानमंत्री मोदी के द्विपक्षीय संवाद के बाद भारत की लगभग तमाम मुरादें और अपेक्षाएं सम्पन्न हो गईं। साझा बयान और सहमति-पत्रों पर हस्ताक्षर से यह स्पष्ट है। लड़ाकू विमान के इंजन एफ-414, विनाशक ड्रोन, सेमीकंडक्टर, घातक मिसाइल, तोप, राइफल आदि अस्त्रों और रक्षा उपकरणों का उत्पादन अब भारत में होगा। हमारी कंपनियां उत्पादन करेंगी। अमरीका ने प्रौद्योगिकी साझा करने के करारों पर भी दस्तखत किए हैं। इसरो-नासा संयुक्त अंतरिक्ष मिशन के जरिए अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन तक जाएंगे। मानव को अंतरिक्ष में ले जाने की रणनीति पर भी दोनों संगठन विमर्श करेंगे। माइक्रोन कंपनी 22,500 करोड़ रुपए की लागत से प्लांट लगाएगी और सेमीकंडक्टर असेंबली पर 6500 करोड़ रुपए का निवेश करेगी। सेमीकंडक्टर से ही जुड़ी एक और विख्यात कंपनी देश में 60,000 इंजीनियरों को प्रशिक्षित करेगी और फिर रोजगार देगी। कमोबेश अब हमें सेमीकंडक्टर चिप्स के लिए चीन, सिंगापुर पर आश्रित नहीं रहना पड़ेगा। 5-जी और 6-जी प्रौद्योगिकी में भी अमरीकी सहयोग और क्वांटम समन्वय करार भी किया गया है। जिस अमरीका ने 1999 में कारगिल युद्ध के दौरान भारत को जीपीएफ डाटा देने से इंकार कर दिया था, वही अमरीका आज भारत के साथ विविध स्तर की साझेदारी के करार करने को उतावला है। जाहिर है कि भारत बहुत बदला है। वैसे अमरीकी राष्ट्रपति तब भी और आज भी डेमोक्रेटिक पार्टी के रहे हैं। प्रधानमंत्री मोदी के राजकीय प्रवास के दौरान भारत की झोली खूब भरी गई, लेकिन डेमोक्रेटिक पार्टी के ही पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा ने एक सवालिया तोहमत लगाते हुए कहा है कि राष्ट्रपति बाइडेन को प्रधानमंत्री मोदी से, भारत में अल्पसंख्यक मुसलमानों की सुरक्षा और आसन्न संकटों पर, सवाल जरूर करना चाहिए। बराक ने साक्षात्कार में यह भी साफ किया है कि यदि वह आज अमरीका के राष्ट्रपति होते, तो भारतीय प्रधानमंत्री से यह सवाल जरूर करते। बराक ओबामा राष्ट्रपति रहे हैं और बाइडेन 8 सालों तक उनके उपराष्ट्रपति थे। जब प्रधानमंत्री मोदी ने अमरीका का दौरा किया था और पहली बार अमरीकी संसद को संबोधित किया था, तब बराक ही राष्ट्रपति थे। प्रधानमंत्री मोदी ने राष्ट्रपति ओबामा को कई मौकों पर अपना 'मित्र' भी घोषित किया था। बराक ओबामा ने यह सवाल तब क्यों नहीं उठाया? यही नहीं, अमरीका के 75 सांसदों ने राष्ट्रपति बाइडेन को पत्र लिख कर आग्रह भी किया था कि प्रधानमंत्री मोदी से भारत में धार्मिक असहिष्णुता, राजनीतिक अंकुश, अभिव्यक्ति की कम आजादी, असुरक्षित अल्पसंख्यक, मानवाधिकार हनन, लोकतंत्र-संविधान पर संकट, इंटरनेट प्रतिबंध आदि पर सवाल पूछे जाने चाहिए। इन्हीं मुद्दों को लेकर अमरीका के कुछ हिस्सों में विरोध-प्रदर्शन भी किए गए। बहरहाल साझा प्रेस कॉन्फ्रेंस में एक पत्रकार के सवाल पर प्रधानमंत्री मोदी ने यह जवाब दिया कि भारत और अमरीका के डीएनए में लोकतंत्र है। हमारी सरकार संविधान के आधार पर, लोकतंत्र के मूल्यों को लेकर, चलती है। हमने साबित किया है कि सरकार लोकतंत्र को लेकर जीती है। जब हम लोकतंत्र को लेकर जीते हैं, तब भेदभाव का सवाल ही नहीं उठता। अगर मानवाधिकार नहीं है, तो लोकतंत्र ही नहीं है। भारत में जो लोगों के अधिकार हैं, वे उन्हें मिलते हैं। कोई भेदभाव नहीं है। न धर्म के आधार पर और न ही जाति के आधार पर...। हमें बराक ओबामा सरीखों के परंपरागत सवाल 'प्रायोजित' लगते हैं। बहरहाल यह दौरा भारत-अमरीका की दोस्ती और दुनिया में शांति-स्थिरता के लिए निभाई जाने वाली भूमिका के मद्देनजर है।

> अमरीका ने 1999 में कारगिल युद्ध के दौरान भारत को जीपीएफ डाटा देने से इंकार कर दिया था, वही अमरीका आज भारत के साथ विविध स्तर की साझेदारी के करार करने को उतावला है। जाहिर है कि भारत बहुत बदला है। वैसे अमरीकी राष्ट्रपति तब भी और आज भी डेमोक्रेटिक पार्टी के रहे हैं। प्रधानमंत्री मोदी के राजकीय प्रवास के दौरान भारत की झोली खूब भरी गई, लेकिन डेमोक्रेटिक पार्टी के ही पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा ने एक सवालिया तोहमत लगाते हुए कहा है कि राष्ट्रपति बाइडेन को प्रधानमंत्री मोदी से, भारत में अल्पसंख्यक मुसलमानों की सुरक्षा और आसन्न संकटों पर, सवाल जरूर करना चाहिए। बराक ने साक्षात्कार में यह भी साफ किया है कि यदि वह आज अमरीका के राष्ट्रपति होते, तो भारतीय प्रधानमंत्री से यह सवाल जरूर करते। बराक ओबामा राष्ट्रपति रहे हैं और बाइडेन 8 सालों तक उनके उपराष्ट्रपति थे।

## कुछ अलग

# यह कैसा हिमाचल

**शिमला** में टैक्सी विवाद की वजह जो भी हो, लेकिन पूरे घटनाक्रम ने अराजकता का दामन इस कद्र थामा कि पूछना पड़ता है, 'हमने यह कैसा हिमाचल बना दिया।' प्रदेश में हर कहीं क्षेत्रवाद के जिन्न क्यों घूमने लगे और क्यों कानून व्यवस्था के प्रश्नों से इतर आत्मघाती मुद्दे घूरने लगे। कुछ इसी तरह चंबा की घृणित घटना के तमाम कानूनी पहलुओं को पीछे छोडक़र हम अपने ही वातावरण को जलाने निकल पड़े, तो शिमला में व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा से उपजी तनातनी ने दो टैक्सी यूनियनों के बीच घातक क्षेत्रवाद पैदा कर दिया। पहली बार हिमाचल के बीच एक ऐसा हिमाचल नजर आने लगा है जिसके हाथ में, 'इक चिंगारी ही काफी है माहौल को जलाने के लिए।' यह हिमाचल एक घटना भर नहीं और न ही चंद बयानों की वजह से तात्कालिक प्रतिक्रिया दे रहा है, बल्कि क्षेत्रवाद की धूर्तता में हम भूल गए कि सदियों बाद कभी स्व. वाईएस परमार ने रियासतों में बंटे हिमाचल को शिद्दत से जोडक़र एक केंद्र शासित राज्य बनाया था। इतना ही नहीं हिमाचल की विशालता, आत्मसम्मान और स्वाभिमान तब सुदृढ़ हुआ जब पंजाब पुनगर्ठन के तहत पंजाब के पर्वतीय इलाकों ने पहाड़ी प्रदेश को पूर्ण राज्यत्व के शिखर तक पहुंचाया। आश्चर्य यह कि हिमाचल की संपूर्णता को आज तक आगे बढ़ाया ही नहीं गया। न यह समझा गया कि पंजाब के पर्वतीय क्षेत्र न मिलते तो हिमाचल का वजूद मुकम्मल न होता और न यह जाना गया कि पर्वतीय राज्य की शक्ति में नागरिक समाज को कैसे सशक्त किया जाए। हम हिमाचल के होकर भी कभी पुराने- कभी नए या कभी ऊपरी...कभी निचले हिमाचल में बंटते रहे हैं। इस दौरान कई सरकारें, कई मुख्यमंत्री और कई मंत्री बन गए, लेकिन सियासी क्षेत्रवाद ने अपने स्वार्थ साधने शुरू कर दिए। नतीजतन आज का हिमाचल कुछ कोस का हिमाचल बन चुका है। अगर हिमाचल की संपूर्णता में सोचा होता, तो आज सारी बोलियों से एक मधुर सी हिमाचली भाषा बन चुकी होती। अगर ठीक से पढ़ा होता, तो हमारा इतिहास सिरमौर से किन्नौर और शिमला से कांगड़ा तक हिमाचल के नायकत्व को हमेशा याद रखता। आश्चर्य तो तब होता है जब हिमाचली धाम भी चंबियाली, कांगड़ी, मंडियाली व अन्य जिलों के चूल्हे पर चढक़र विभक्त हो जाती है। यह धधकती हुई सियासी आंच है जिससे हम अपनी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को एकरूपता में नहीं जोड़ रहे हैं। यही वजह है कि नए जिलों के सांप से हमें डराया ही नहीं, इसके दंश भी दिखाए जाते हैं। हमने स्थानांतरण नीति इसलिए कारगर नहीं बनाई ताकि हमारा क्षेत्रवाद सुरक्षित रहे। कभी सरकारी कर्मचारी व अधिकारी सारे जिलों के सेवाकाल को अपनी सफलता मानते थे, आज दस किलोमीटर के दायरे में स्थानातंरण उद्योग का सारा जहां बसता है। विधायक महोदय अपने-अपने विधानसभा क्षेत्रों में स्थानातंरण की जंजीरें लेकर बैठे होते हैं ताकि कोई बाहरी क्षेत्र का परिंदा पर न मार सके। हमें तब आश्चर्य नहीं होता जब मंत्री महोदय केवल अपने-अपने विधानसभा क्षेत्रों पर ही अपने विभागों का अधिकतम बजट लगा देते हैं या जब विपक्ष का विधायक चुन कर पूरा विधानसभा क्षेत्र पांच साल के लिए अछूत बना दिया जाता। हम न तो ऐतिहासिक और न ही सांस्कृतिक महत्त्व से प्रदेश को एक कर रहे हैं, बल्कि नित नए जागीरदार पैदा करके नए युद्ध का उद्‌घोष कर रहे हैं। इसलिए कभी तपोवन विधानसभा तक गुस्से की बाढ़ में प्रदेश का बहुत कुछ बह जाता है, तो कभी शिमला में दो टैक्सी यूनियन के टकराव में सामाजिक ताना बाना टूट जाता है। इस विवाद का कोई एक मुजरिम नहीं, हम सभी हिमाचलवासी जिस तरह सामुदायिक भावना छोड़ चुके हैं, पूर्ण रूप से दोषी हैं। यहां इस जलजले में व्यवस्था की हिलती चूलें व कानून व्यवस्था के टूटते स्तंभ भी देखे गए। हिमाचल में टैक्सी आपरेशन अपनी मनमानी के तहत आम यात्रियों और विशेष तौर पर पर्यटकों के लिए प्रतिकूल परिस्थितियां खड़ा करता रहा है।

## देश के भीतर संपन्न वित्तीय सेवाओं, स्वास्थ्य सेवा और प्रौद्योगिकी क्षेत्रों द्वारा संचालित होगी

# भारत के समृद्धशालियों एवं प्रतिभाओं का पलायन क्यों?

ललित गर्ग

> 2023 में भारत से बाहर जाने की संभावना है, पिछले वर्ष की तुलना में यह करोड़पतियों के देश छोड़कर जाने की 7500 की संख्या भले ही कुछ सुधरी है, लेकिन नये बनते, सशक्त होते एवं आर्थिक महाशक्ति बनने की ओर भारत के लिये यह चिन्तन का विषय होना ही चाहिए कि किस तरह भारत की समृद्धि एवं भारत की प्रतिभाएं भारत में ही रहे। रिपोर्ट के अनुसार, उच्च निवल मूल्य वाली व्यक्तिगत आबादी के 2031 तक 80 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि का अनुमान है, जो इस अवधि के दौरान भारत को दुनिया के सबसे तेजी से बढ़ते धन बाजारों में से एक के रूप में स्थापित करता है।

**धनाढ्य** परिवारों का भारत से पलायन कर विदेशों में बसने का सिलसिला चिन्ताजनक है। ऐसे क्या कारण है कि लोगों को देश की बजाय विदेश की धरती रहने, जीने, व्यापार करने, शिक्षा एवं रोजगार के लिये अधिक सुविधाजनक लगती है, नये बनते भारत के लिये यह चिन्तन-मंथन का कारण बनना चाहिए। हेनले प्राइवेट वेल्थ माइग्रेशन रिपोर्ट 2023 की एक रिपोर्ट के अनुसार, अनुमानित 6,500 हाई- नेट-वर्थ इंडिविजुअल्स (एचएनआई) के 2023 में भारत से बाहर जाने की संभावना है, पिछले वर्ष की तुलना में यह करोड़पतियों के देश छोड़कर जाने की 7500 की संख्या भले ही कुछ सुधरी है, लेकिन नये बनते, सशक्त होते एवं आर्थिक महाशक्ति बनने की ओर भारत के लिये यह चिन्तन का विषय होना ही चाहिए कि किस तरह भारत की समृद्धि एवं भारत की प्रतिभाएं भारत में ही रहे। रिपोर्ट के अनुसार, उच्च निवल मूल्य वाली व्यक्तिगत आबादी के 2031 तक 80 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि का अनुमान है, जो इस अवधि के दौरान भारत को दुनिया के सबसे तेजी से बढ़ते धन बाजारों में से एक के रूप में स्थापित करता है। यह वृद्धि मुख्य रूप से देश के भीतर संपन्न वित्तीय सेवाओं, स्वास्थ्य सेवा और प्रौद्योगिकी क्षेत्रों द्वारा संचालित होगी। इसमें समृद्ध व्यक्तियों के भारत लौटने की प्रवृत्ति को भी देखा जा रहा है, और जैसे-जैसे जीवन स्तर में सुधार जारी है, यह अधिक संख्या में धनवान व्यक्तियों के भारत वापस आने का अनुमान लगाता है। लेकिन प्रश्न है कि भारत के करोड़पति आखिर नये बनते भारत एवं उसकी चिकित्सा, शिक्षा, आर्थिक, राजनीतिक, प्रशासनिक उज्ज्वलता के बावजूद क्यों विदेश जा रहे हैं? वैसे तो यह हर किसी का व्यक्तिगत अधिकार और चाहत हो सकती है कि वह कहां बसना और कैसी



जीवनशैली चाहता है? लेकिन हाई नेटवर्थ वाले (अति समृद्ध) हमारे देशवासियों के देश छोड़ कर कहीं और बसने की तैयारी की ताजा रिपोर्ट बहुत कुछ कहती है। दुनियाभर में धन और निवेश प्रवासन के रुझान को ट्रैक करने वाली कंपनी की सालाना रिपोर्ट में अति समृद्ध भारतीयों का अपना सब-कुछ समेट कर हमेशा के लिए भारत से जुदा हो जाने का अनुमान अनेक प्रश्न खड़े करता है, सरकार को इन प्रश्नों पर गौर करने की जरूरत है। संतोष इस बात पर किया जा सकता है कि ऐसा कदम उठाने वाले इन अति समृद्धशालियों की संख्या पिछले साल की तुलना में लगभग एक हजार कम है। लेकिन यह संख्या समूचे विश्व में सर्वाधिक है। भारत के दृष्टिकोण से इस तथ्य का विश्लेषण ज्यादा जरूरी हो जाता है। जानना यह भी जरूरी है कि बचपन से जवानी तक का एक-एक पल देश में गुजारने और यहीं अमीर बनने का सफर तय करने के बाद देश से मोह भंग होने के कारण आखिर क्या हो सकते हैं? उम्मीद यह की जाती है कि देश में रहकर समृद्धि हासिल करने वाले समय आने पर देश को लौटाएंगे भी। सवाल यही है कि देश को लौटाने और फायदा देने का वक्त आता है तब एकाएक विदेश में जाकर बसने की ललक कैसे और क्यों पैदा हो रही है? अपने देश के प्रति जिम्मेदारी निभाने के समय इस तरह की पलायनवादी सोच का उभरना व्यक्तिगत स्वार्थ, सुविधा एवं संकीर्णता को दर्शाता है। बड़ा सवाल यह भी उठना स्वाभाविक है कि आखिर क्या कमी है हमारे यहां? यह बात सही है कि गांव से कस्बे, कस्बे से शहर और शहरों से महानगरों में जाकर बसने की मानवीय प्रवृत्ति होती है। इसे विकास से भी जोड़ा जा सकता है। लेकिन जब यह दौड़ बहुत ज्यादा होने लगे और लोग अपनी जड़ें ही छोड़ने को आकुल दिखें तो सोचना जरूरी हो जाता है। मुम्बई, दिल्ली, बेंगलूरु जैसे महानगर दुनिया के दूसरे महानगरों को टक्कर देने वाले हैं। फिर भी अगर ये भारतीय विदेशी महानगरों को ही चुन रहे हैं, तो तमाम पहलुओं पर विचार भी करना होगा। यह इसलिए भी जरूरी है कि यह दौड़ भारतीय महानगरों से विदेशी महानगरों की तरफ ही है। विदेश में बसने की यह दौड ऐसे समय देखने को मिल रही है जब देश में विकास के नये कीतिमान स्थापित हो रहे हैं, जीवनशैली उन्नत एवं सुविधापूर्ण होती जा रही है, व्यापार एवं व्यवसाय की संभावनाओं को पंख लग रहे हैं। भारत दुनिया में साख एवं धाक जमा रहा है। दुनिया की नजरें भारत पर लगी है और यहां अनंत संभावनाओं को देखते हुए विदेशी भारत आ रहे हैं। फिर भारतीय विदेशों की ओर क्यों जा रहे हैं। अपने देश से ही पाने और मौका पड़ने पर देश को लौटाने की परिपाटी बरसों से है। सिर्फ क्वालिटी लाइफ को ही पलायन की वजह नहीं माना जा सकता। उन कारणों की तलाश भी करनी जरूरी है जिसकी वजह से लोग देश को छोड़कर कहीं ओर बसना चाहते हैं। सुरक्षित माहौल, अनुकूल कर ढांचा, सरल प्रशासनिक व्यवस्था, निवेश का माहौल, रोजगार, शिक्षा व चिकित्सा जैसी सुविधाओं की तरफ भी ध्यान देना होगा ताकि पलायन की इस प्रवृत्ति की रोकथाम हो सके। बात केवल करोड़पतियों की ही नहीं है, बल्कि भारत की प्रतिभाओं की भी है। उच्च शिक्षित प्रतिभाओं को भारत में उचित प्रोत्साहन एवं परिवेश न मिलने से वे भी विदेशों की ओर पलायन करती है। विदेशों में काम करने वाले भारतीय उच्च शिक्षित हैं और आमतौर पर उन्हें भारत में उपयुक्त करियर नहीं मिला। सिंगापुर जैसे देशों ने भारतीयों के लिए दरवाजे खोल दिए हैं। इसके अलावा, स्कैंडिनेवियाई देश हैं, जिन्होंने आप्रवासन नियमों में ढील दी है, जिससे भारतीयों के लिए वहां जाना आसान हो गया है। सबसे बढ़कर, भारतीय आईटी पेशेवरों की अमेरिका में अत्यधिक मांग है। वैज्ञानिक और तकनीकी प्रवृत्ति पर आधारित विश्व स्तर पर ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था ने प्रतिभाशाली कर्मियों की बढ़ती मांग को जन्म दिया है। भारत विशेष रूप से यूरोपीय देशों के लिए प्रतिभाशाली और कुशल मानव संसाधनों का प्रमुख आपूर्तिकर्ता बन गया।

# क्या ममता पर लगे आरोप पचा पाएगा विपक्ष

> भारतीय जनता पार्टी की केंद्र सरकार पर लोकतंत्र को खतरे में डालने की दुहाई देने वाले विपक्षी दलों के लिए चुनावी हिंसा पर ममता के खिलाफ दिए इस फैसले को पचाना आसान नहीं होगा। ममता बनर्जी को मिली इस शिकस्त को विपक्षी दलों की एकता के प्रयासों को तगड़ा झटका लगना निश्चित है। भाजपा इस मामले को विपक्षी दलों के खिलाफ भुनाए बगैर नहीं रहेगी। भाजपा भ्रष्टाचार के मुद्दों को लेकर पहले ही विपक्षी दलों पर हमलावर रही है। अब चुनाव जीतने के लिए हिंसा का सहारा लेने के आरोप का मौका ममता बनर्जी ने भाजपा को दे दिया। सुप्रीम कोर्ट ने जो तल्ख टिप्पणी की है वह भी विपक्षी दलों के लिए परेशानी का सबब बनेगी। सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट कहा कि चुनाव के बीच जो हिंसा हो रही है वो सही नहीं है। निष्पक्ष रूप से चुनाव कराना ही लोकतंत्र की पहचान है। गौरतलब है कि पश्चिम बंगाल का चुनाव आयोग और ममता सरकार दोनों ने ही हाई कोर्ट के फैसले पर ऐतराज जताया था। सुप्रीम कोर्ट ने दोनों से ये सवाल भी किया है कि जब आप अपने पड़ोसी राज्यों से फोर्स मांग रहे हैं तो फिर आपको केंद्रीय सुरक्षा बलों से क्या परेशानी है।

**जोर-शोर** से विपक्षी एकता की कवायद में जुटी पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता को सुप्रीम कोर्ट ने तगड़ा झटका दिया है। पंचायत चुनाव से पहले हो रही हिंसा को लेकर केंद्रीय सुरक्षा बलों की तैनाती के मामले में सुप्रीम कोर्ट ने साफ तौर पर कलकत्ता हाई कोर्ट के फैसले में दखल देने से मना कर दिया है। इस मुद्दे पर ममता सरकार की याचिका खारिज कर दी। भारतीय जनता पार्टी की केंद्र सरकार पर लोकतंत्र को खतरे में डालने की दुहाई देने वाले विपक्षी दलों के लिए चुनावी हिंसा पर ममता के खिलाफ दिए इस फैसले को पचाना आसान नहीं होगा। ममता बनर्जी को मिली इस शिकस्त को विपक्षी दलों की एकता के प्रयासों को तगड़ा झटका लगना निश्चित है। भाजपा इस मामले को विपक्षी दलों के खिलाफ भुनाए बगैर नहीं रहेगी। भाजपा भ्रष्टाचार के मुद्दों को लेकर पहले ही विपक्षी दलों पर हमलावर रही है। अब चुनाव जीतने के लिए हिंसा का सहारा लेने के आरोप का मौका ममता बनर्जी ने भाजपा को दे दिया। सुप्रीम कोर्ट ने जो तल्ख टिप्पणी की है वह भी विपक्षी दलों के लिए परेशानी का सबब बनेगी। सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट कहा कि चुनाव के बीच जो हिंसा हो रही है वो सही नहीं है। निष्पक्ष रूप से चुनाव कराना ही लोकतंत्र की पहचान है। गौरतलब है कि पश्चिम बंगाल का चुनाव आयोग और ममता सरकार दोनों ने ही हाई कोर्ट के फैसले पर ऐतराज जताया था। सुप्रीम कोर्ट ने दोनों से ये सवाल भी किया है कि जब आप अपने पड़ोसी राज्यों से फोर्स मांग रहे हैं तो फिर आपको केंद्रीय सुरक्षा बलों से क्या परेशानी है। ममता बनर्जी के वर्ष 2011 से सत्ता में आने के बाद पश्चिम बंगाल में चुनावी हिंसा का तांडव जारी है। तत्कालीन वाम मोर्चा सरकार के दौरान हिंसा की पीड़ा झेल चुकी ममता बनर्जी की सरकार भी चुनावी हिंसा को लेकर लगातार कटघरे में है। विगत विधानसभा चुनाव के नतीजों के बाद पश्चिम बंगाल के अलग-अलग हिस्सों में 12 लोग मारे गए थे। ऐसी चुनावी हिंसा के लिए कभी बिहार और उत्तर प्रदेश बदनाम थे। टीएन शेषन के मुख्य चुनाव आयुक्त बनने के बाद इन दोनों राज्यों में चुनावी हिंसा पर काफी हद तक लगाम लगी थी। दूसरे शब्दों में कहें तो शेषन ने अपने मजबूत इरादों से देश में चुनावी हिंसा को लगभग इतिहास का विषय बना दिया। इसके बावजूद पश्चिम बंगाल में चुनावी हिंसा का दौर खत्म नहीं हो सका। पश्चिम बंगाल में चाहे पंचायत चुनाव हों या फिर लोकसभा या विधानसभा चुनाव, यहां हिंसा अपरिहार्य बन चुकी है। नेशनल क्राइम रिकाड्र्स ब्यूरो (एनसीआरबी) ने 2018 की अपनी रिपोर्ट में कहा था कि देश में होने वाली 54 राजनीतिक हत्याओं के मामलों में से 12 बंगाल से जुड़े थे। उसी साल केंद्रीय गृह मंत्रालय ने राज्य सरकार को जो एडवाइजरी भेजी थी, उसमें कहा गया था कि पश्चिम बंगाल में राजनीतिक हिंसा में 96 हत्याएं हुई हैं और लगातार होने वाली हिंसा गंभीर चिंता का विषय है। उस रिपोर्ट में कहा गया था कि वर्ष 1999 से 2016 के बीच पश्चिम बंगाल में हर साल औसतन 20 राजनीतिक हत्याएं हुई हैं। केंद्रीय गृह मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक वर्ष 2018 के पंचायत चुनाव के दौरान 23 राजनीतिक हत्याएं हुई थीं। वर्ष 1998 में ममता बनर्जी की ओर से टीएमसी के गठन के बाद वर्चस्व की लड़ाई ने हिंसा का नया दौर शुरू किया। उसी साल हुए पंचायत चुनावों के दौरान कई इलाकों में भारी हिंसा हुई। ममता बनर्जी सरकार सिर्फ चुनावी हिंसा ही नहीं बल्कि भ्रष्टाचार और राज्य में हुए गंभीर अपराधों के आरोपों से भी घिरी रही है। देश में पश्चिम बंगाल एकमात्र ऐसा राज्य है जहां एनआईए सर्वाधिक मामलों की जांच कर रही है। इनमें सांसद अर्जुन सिंह के घर बम विस्फोट कांड, मोमिनपुर हिंसा के दो मामले, बीरभूम में 81 हजार जिलेटिन की छड़ें बरामद होने का मामला, रामनवमी में हिंसा के 6 मामले, लश्कर आतंकवादी तान्या परवीन का मामला (लंबित मुकदमा), जेएमबी के कई मामले, खजूर ब्लास्ट केस, भूपतिनगर विस्फोट मामला, नैहाटी विस्फोट कांड, मुर्शिदाबाद के बेलडांगा में स्कूल के पास बम धमाका, मालदा के टोटो में धमाका और छत्रधर महतो मामले का कोर्ट में ट्रायल चल रहा है। ईडी के पश्चिम बंगाल स्कूल सेवा आयोग भर्ती घोटाले के संबंध में एक्शन से टीएमसी कार्यकर्ताओं के एक कथित नेटवर्क का पर्दाफाश हुआ। कलकत्ता हाई कोर्ट ने पश्चिम बंगाल स्कूल सेवा आयोग को स्कूलों में ग्रुप सी के पदों पर कार्यरत 785 लोगों की भर्ती को रद्द करने के निर्देश दिए थे। वामपंथियों के 34 साल के राज को खत्म कर 2011 में बंगाल की सत्ता पाने वाली ममता बनर्जी के करीब 25 विधायक ईडी और सीबीआई के राडार पर हैं। इनमें तृणमूल के वरिष्ठ नेता भी शामिल हैं। पार्टी के लिए वर्ष 2017 में कोलकाता हाईकोर्ट में वकील बिप्लव रॉय चौधरी ने जनहित याचिका दायर की थी। इसमें उन्होंने कहा था कि 2011 से 2016 के बीच तृणमूल के 19 विधायकों की प्रॉपर्टी बेहिसाब बढ़ी। इसकी जांच होनी चाहिए। इनमें ममता के सबसे खास कहे जाने वाले और कोलकाता के मेयर फिरहाद हकीम का नाम भी है। बिप्लव रॉय चौधरी की याचिका का 5 साल से निपटारा नहीं हुआ। पार्थ चटर्जी की सहयोगी अर्पिता मुखर्जी के पास से 50 करोड़ रुपए और 5 किलो सोना मिलने के बाद चौधरी फिर हाईकोर्ट पहुंच गए। उन्होंने हाईकोर्ट में पार्थ से मिले कैश के विजुअल्स दिखाए और कहा कि 19 विधायकों की प्रॉपर्टी की जांच भी जल्दी होनी चाहिए। बंगाल में शिक्षक भर्ती, कोयला व मवेशी तस्करी कांड के बाद लाटरी का घोटाला भी सामने आ चुका है। इसके तार दूसरे घोटालों से जुड़े बताए जा रहे हैं। दरअसल यह घोटाला करने का नया तरीका है। गौरतलब है कि पिछले कुछ समय में तृणमूल के कई नेताओं व उनके रिश्तेदारों को भारी-भरकम रकम वाली लाटरी लगी है। मवेशी तस्करी कांड में गिरफ्तार होकर आसनसोल की जेल में बंद तृणमूल के बाहुबली नेता व उनकी बेटी सुकन्या को कुल पांच लाटरी लग चुकी हैं। अनुब्रत को गिरफ्तारी से कुछ समय पहले ही एक करोड़ की लाटरी लगी थी। अनुब्रत ने तीन साल पहले भी लाटरी में 10 लाख रुपए जीते थे। सीबीआई का दावा है कि मवेशी तस्करी की काली कमाई को लाटरी के जरिए सफेद किया जाता है। सवाल यही है कि भाजपा पर भ्रष्टाचार और सरकारी तंत्र के दुरुपयोग करने का आरोप लगाने वाला विपक्ष ममता बनर्जी पर लगे चुनावी हिंसा और भ्रष्टाचार के नए-पुराने आरोपों को कैसे पचा पाएगा। विपक्ष जब तक अपना दामन ऐसे मामलों में साफ नहीं रखेगा, तब तक न सिर्फ चुनावी एकता कठिन है, बल्कि आम लोगों का विश्वास भी जीतने में वह सफल नहीं हो पाएगा।

## नागरिक बोध

# समान नागरिक अधिकारों के हक में

**संविधान** का अनुच्छेद 44 सबसे अधिक दुष्प्रचारित हिस्सों में से एक है। इस उपबन्ध के साथ बहुत अन्याय हुआ है। इसमें देश के सभी नागरिकों के लिए एक जैसा कानून बनाने की बात कही गयी है। सरकार से अपेक्षा की गयी है कि वह पन्थ, क्षेत्र, भाषा कि दूसरे इस तरह का बंटवारा करने वाले आधारो की परवाह किए बगैर सभी के लिए एक जैसा कानून बनाए। ऐसी व्यवस्था बनाए जो मानवीय गरिमा का सम्मान करता हो, उसे सुरक्षा बोध दे और सभ्य समाज के मानकों पर खरा उतरे। दुर्भाग्यवश अनुच्छेद 44 की इस पवित्र मंशा को आगे बढ़ाने के बजाए उसको हमने अपनी फितरत के मुताबिक एक हौव्वा खड़ा कर दिया। उस पर तार्किक बहस करने के बजाए उसे साम्प्रदायिक रूप देकर अछूत बना दिया। सुप्रीम कोर्ट का आग्रह बेकार गया। अदालत के निर्देशों की हेठी की गयी। यह दस्तूर आज भी कायम है। इस मामले में तो हम लोकशाही की महान परम्पराओं से भी मुंह चुराने लगते हैं। इस विषय पर स्वस्थ बहस करने के बजाए इसके प्रस्तावकों की लानत सलामत करने लगते हैं और उसे तब तक जारी रखते हैं जब तक कि सामने वाला थक हार कर बैठ न जाए। वैसे तो हमारे देश में अधिकतर मामलों में एक जैसा कानून लागू होता है। जमीन की खरीद फरोख्त, किराएदारी और दीगर दीवानी मामलों में आजादी के पहले से ही एक जैसा कानून लागू होता है, लेकिन विवाह, उत्तराधिकार, वसीयत दत्तक ग्रहण जैसे मामलों में आजादी के पहले से ही अलग-अलग सम्प्रदायों के लिए अलग कानून रहे हैं। संविधान निर्माताओं ने महसूस किया कि विवाह और भरण पोषण से जुड़े मामलों का सम्बन्ध किसी पूजा पद्धति से नहीं है, बल्कि इसका सम्बंध इन्सानियत से है। निस्संतान व्यक्ति यदि किसी बच्चे को गोद लेकर अपनी वंश परंपरा को आगे बढ़ाना चाहता है या उससे उसको सुरक्षा बोध का अहसास होता है, तो उससे किसी पूजा पद्धति की अवमानना कैसे हो सकती है। यदि किसी कानून से किसी महिला को सामाजिक सुरक्षा मिलती है या पति से अलग होने या पति के नाराज होने के बाद उसे दर-बदर भटकने के बजाए यदि गुजारे-भत्ते की व्यवस्था की जाती है तो इसमे उसका धर्म कहां से आड़े आता है। महिला-पुरूष के वैवाहिक सम्बन्धों में यदि समानता सुनिश्चित की जाती है तो इससे किसी भी सभ्य समाज के लिए शर्मिन्दगी नहीं, अपितु गर्व होना चाहिए। आजादी के बाद इस दिशा में सकारात्मक पहल की गयी। समानता के सिद्धान्त को ध्यान में रखते हुए पारम्परिक हिन्दू विधि में व्यापक परिवर्तन किए गए। पहले, पुरूष एक से अधिक शादियां कर सकता था, वहीं हिन्दू विवाह अधिनियम के जरिए उस पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। पति-पत्नी को विवाह विच्छेद करके सम्मान पूर्वक एक दूसरे से अलग रहने का अधिकार दिया गया।

## देश दुनीया से

# नशे को 'न', जिंदगी को 'हां' कहें युवा

**दुनिया** भर में करीब 3.4 करोड़ लोग ड्रग्स का इस्तेमाल करते हैं और हर साल नशे के कारण करीब 2 लाख लोग जान गंवा बैठते हैं। हमारा देश भारत भी इससे अछूता नहीं है। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार ने वर्ष 2018 के दौरान देश में नशीले पदार्थों के प्रयोग की सीमा और स्वरूप के संबंध में राज्यवार ब्यौरा एकत्रित करने के लिए एक राष्ट्रीय सर्वेक्षण किया था जिसके अनुसार सभी आयु वर्ग में सबसे अधिक संख्या शराब का सेवन करने वालों की है। 10 से 17 वर्ष आयु वर्ग के अनुमानित 30 लाख बच्चे और किशोर शराब का सेवन कर रहे हैं, जबकि 18 से 75 वर्ष आयु वर्ग में शराब का सेवन करने वालों की संख्या 15 करोड़ पाई गई है। वहीं 10 से 17 वर्ष आयु वर्ग में अनुमानित 40 लाख बच्चे और किशोर अफीम का सेवन कर रहे हैं। इसी आयु वर्ग में भांग के सेवन कर्ताओं की संख्या 20 लाख तक है। अनुमानित 50 लाख बच्चे और किशोर सूंघकर ऐसे पदार्थों का सेवन कर रहे हैं, जबकि दो लाख बच्चे कोकीन और चार लाख बच्चे उत्तेजना पैदा करने वाले पदार्थों का सेवन कर रहे हैं। इससे यह पता चलता है कि बच्चों व किशोरों में नशीले पदार्थों के सेवन की प्रवृत्ति और चलन लगातार बढ़ रहा है। नशे की लत से बच्चे व किशोर न केवल आक्रामक व तनाव से ग्रसित हो रहे हैं बल्कि कई किशोर ओवरडोज से अपनी जान से भी हाथ धो रहे हैं। प्रत्येक वर्ष 26 जून को नशीली दवाओं के दुरुपयोग और अवैध तस्करी के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय नशा मुक्ति दिवस के रूप में मनाया जाता है। 7 दिसंबर 1987 को संयुक्त राष्ट्र महासभा ने प्रत्येक वर्ष 26 जून को नशीली पदार्थ व दवाओं के दुरुपयोग और अवैध तस्करी के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय दिवस के रूप में मनाने का फैसला किया था। इसका महत्व समाज पर नशीली दवाओं के दुरुपयोग के खतरनाक प्रभावों के बारे में जागरूकता का प्रसार करना और दुनिया को नशे से मुक्त कराना है। भारत में नारकोटिक्स ड्रग्स एवं साइकॉट्रॉपिक सब्सटेंसस अधिनियम 1985 को अधिनियमित किया है। इसके बावजूद भारत के बाजार में ड्रग यूजर्स के बढने की संभावना प्रबल हो रही है जो कि चिंता का विषय बना हुआ है। पंजाब का पड़ोसी राज्य होने के नाते हिमाचल प्रदेश भी नशे से अछूता नहीं है। सन्-2018 में हुए मेग्नीट्यूड ऑफ सब्सटेंस यूज इन इंडिया 2019 शीर्षक से प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार हिमाचल में नशीले पदार्थों का सेवन करने वालों की औसत संख्या उत्तर प्रदेश व उत्तराखंड राज्य से कहीं ज्यादा है। आबादी की तुलना में हिमाचल में जहां 10 से 75 साल के बीच के 1.70 फीसदी लोग नशीले पदार्थों का सेवन कर रहे हैं, वहीं उत्तर प्रदेश में 0.60 फीसदी तथा उत्तराखंड में 0.80 प्रतिशत लोग नशे की चपेट में हैं। पंजाब से लगते बॉर्डर जिलों को नशे से सचेत रहने की आवश्यकता है। प्रदेश सरकार की तरफ से हिमाचल प्रदेश पुलिस मुख्यालय ने हाल ही में वेबैक्स के माध्यम से 150 स्कूलों के हजारों बच्चों को नशे के दुष्प्रभावों के बारे में सचेत किया जो कि सराहनीय है। ऊना जिला प्रशासन ने नशा मुक्त ऊना अभियान की शुरुआत करके प्रदेश में एक अच्छे कार्यक्रम की पहल की है। ऊना जिले में उपायुक्त महोदय तथा सभी ब्लॉकों में एसडीएम की अगुवाई में टास्क फोर्स कमेटियां बनाई जा चुकी हैं। सभी विद्यालय प्रमुखों का विशेष प्रशिक्षण के साथ नशा विरोधी सतर्कता समितियों का गठन किया जा रहा है। ग्राम पंचायत स्तर पर इसे उतारने के लिए पंचायत स्तर पर टास्क फोर्स कमेटियों का गठन किया जाएगा। नशे के खिलाफ डिमांड ड्रिवन अप्रोच से पंचायती राज संस्थाओं, स्कूल प्रबंधन, ग्रामीण स्तर पर टास्क फोर्स कमेटियां बनाकर, विद्यालय में रेडक्रॉस क्लब के माध्यम से ताकि बच्चों और युवाओं को नशे के विरुद्ध लडने के लिए भावनात्मक रूप से तैयार किया जा सके और यह अभियान जनमानस का बनने के साथ हिमाचल में नशे के प्रवेश को रोका जा सके। नशे में फंसने के बाद बहुत से किशोर अपने करियर और पढ़ाई को तबाह कर रहे हैं। ऐसा अक्सर देखा गया है कि नशा करने वाले किशोरों का परिवार या फिर खुद नशा करने वाले अपनी इस आदत से इस कदर परेशान हैं कि नशा छुड़ाने के लिए किसी चमत्कार की उम्मीद लगाए बैठे हैं।

> शने की लत से बच्चे व शिकोर न केवल आक्रामक व तनाव से ग्रसित हो रहे हैं बल्कि कई शिकोर ओवरडोज से अपनी जान से भी हाथ धो रहे हैं। प्रत्येक वर्ष 26 जून को शनीली दवाओं के दुरुपयोग और अवैध तस्करी के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय शना मुक्ति दिवस के रूप में मनाया जाता है। 7 दिसंबर 1987 को संयुक्त राष्ट्र महासभा ने प्रत्येक वर्ष 26 जून को शनीली पदार्थ व दवाओं के दुरुपयोग और अवैध तस्करी के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय दिवस के रूप में मनाने का फैसला किया था।

# पहली वुडन सिटी स्वीडन में, इमारतें आग प्रतिरोधी होंगी : 2.5 लाख वर्गमीटर में बनेगा शहर; 11,500 करोड़ रुपए खर्च होंगे, कार्बन फुटप्रिंट 40प्रतिशत कम रहेगा

**स्टॉकहोम।**

दुनियाभर में एक अनूठी होड़ मची हुई है... लकड़ी की गगनचुंबी इमारतें बनाना। पहले यह रिकॉर्ड नॉर्वे में माजोसा झील के तट पर 85 मीटर के टावर माजोस्टारनेट के पास था। इसमें फ्लैट, एक होटल और एक स्विमिंग पूल है। 2022 में अमेरिका के विस्कॉन्सिन में 87 मीटर ऊंची एसेंट ने यह तमगा छीन लिया। अब कनाडा के ओंटारियो में 90 मीटर और स्विट्जरलैंड में 100 मीटर के स्कायस्क्रेपर की योजना पर काम चल रहा है। इस हफ्ते स्वीडन ने दुनिया का सबसे बड़ा लकड़ी का शहर बनाने की घोषणा करके दुनियाभर का ध्यान खींचा है। 'स्टॉकहोम वुड सिटी' सिक्ला में बनाई जाएगी। 2.5 लाख वर्गमीटर की साइट पर रेस्तरां और दुकानों के साथ-साथ 2,000 घर और 7,000 ऑफिस भी बनेंगे। करीब 11,500 करोड़ रुपए का यह प्रोजेक्ट स्वीडन की सिटी डेवलपमेंट कंपनी एट्रियम जुंगबर्ग के निर्देशन में 2025 से शुरू होगा।

### इमारतें ग्रीन और हल्की होंगी

कंपनी की प्रमुख एन्निका अनस कहती हैं- आधुनिक प्रोजेक्ट्स की तरह, वुड सिटी के घरों में नींव में कुछ कंक्रीट व स्टील इस्तेमाल होगा पर इनकी मात्रा बहुत कम रहेगी। लकड़ी की इमारतें हल्की होती हैं, इसलिए उनकी नींव छोटी रख सकते हैं। इसके अलावा इंजीनियर्ड वुड की हर परत में लकड़ी के हिस्सों को इमारत के अलग-अलग घटकों, जैसे फर्श, दीवारें, क्रॉस ब्रेसेस और बीम को अत्यधिक उच्च स्तर की ताकत देने के हिसाब से अलाइन किया गया है। इनका निर्माण फैक्ट्री में संभव है, जहां इनकी मजबूती बेहतर और गुणवत्ता बनाए रखना आसान होता है। अनस कहती हैं- लकड़ी के घर सस्ते होंगे, इन्हें बनाने में शोर भी कम होगा। लकड़ी की इमारतों को लेकर सबसे बड़ी चिंता आग लगना है। इसके लिए वुड सिटी की इमारतों में कई फायर सेफ्टी सिस्टम लगाए जाएंगे। स्प्रिंकलर व फ्लेम रेजिस्टेंट परतें रहेंगी।

### इंजीनियर्ड लकड़ी का इस्तेमाल होगा, इससे प्रकृति को नुकसान नहीं होगा

शोधकर्ता दावा करते हैं कि इंजीनियर्ड लकड़ी अत्यधिक आग प्रतिरोधी है। इससे पहले अमेरिका में 'एसेंट' इमारत के निर्माण से पहले अमेरिकी वन सेवा ने प्रोजेक्ट में इस्तेमाल होने वाली लैमिनेटेड लकड़ी के सेक्शन्स का गहन परीक्षण किया। इसमें आग प्रतिरोधी होने की रेटिंग मिली थी। कंपनी का दावा है- इस प्रोजेक्ट से कंक्रीट व स्टील के निर्माण की तुलना में कार्बन फुटप्रिंट 40प्रतिशत तक घटा सकेंगे। लकड़ी टिकाऊ मटेरियल है और स्वीडन में प्रचुर मात्रा में हैं। इसके अलावा नवीकरणीय जंगलों से इनका उत्पादन किया जा सकता है।

## न्यूज ब्रीफ

### पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शाहबाज शरीफ का एक वीडियो वायरल : शाहबाज ने महिला अफसर को बारिश में छोड़ा,

**पेरिस/इस्लामाबाद।** नए कर्ज की तलाश में फ्रांस पहुंचे पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शाहबाज शरीफ का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। शाहबाज मीटिंग वेन्यू पर पहुंचते हैं। यहां तेज बारिश हो रही थी। कार के गेट पर वुमन प्रोटोकॉल ऑफिसर छाता लेकर खड़ी थी। कार से उतरकर शाहबाज उससे छाता लेते हैं, और बिना उसको साथ लिए अकेले ही मीटिंग हॉल में पहुंच जाते हैं। महिला अफसर भीगते हुए पीछे-पीछे आती है। दूसरा वीडियो इस्लामाबाद का है। इसमें एक जर्नलिस्ट फाइनेंस मिनिस्टर इशहाक डार से आईएमएफ से कर्ज न मिलने पर सवाल पूछता है तो जवाब में उसे वित्त मंत्री थप्पड़ मार देते हैं। शाहबाज यहां न्यू ग्लोबल फाइनेंसिंग पैक्ट समिट में हिस्सा लेने के लिए आए हैं। इसमें दुनिया के गरीब और कर्ज में दबे देशों को कुछ कर्ज और कुछ दूसरी कारोबारी रियायतें दी जाती हैं। गुरुवार को पेरिस के पेलेइस ब्रोग्नीआर्त में यह मीटिंग शेड्यूल थी। शरीफ होटल से मीटिंग वेन्यू पर पहुंचे तो तेज बारिश हो रही थी। शाहबाज की कार रुकी तो उसके डोर पर एक महिला प्रोटोकॉल अफसर अम्ब्रेला यानी छाता लेकर खड़ी थी। प्रोटोकॉल के मुताबिक, शाहबाज को यही अफसर अपने छाते में लेकर वेन्यू गेट तक ले जाती। बहरहाल, शाहबाज कार से उतरे, महिला से चंद अल्फाज कहे और फिर उसके हाथ से छाता लेकर अकेले ही तेज कदमों से मीटिंग हॉल की तरफ बढ़ गए। यह अफसर हैरानी से हल्के कदमों से उनके पीछे-पीछे चलती रही। तेज बारिश में वो भीग चुकी थी। वीडियो में साफ नजर आता है कि गेट पर मौजूद एक मेल रिसीविंग ऑफिसर महिला से कुछ बातचीत करता है, लेकिन तब तक शरीफ हॉल में एंटर हो चुके थे। यहां उनका इंतजार फ्रांस की मिनिस्टर कैथरीन कोलोना कर रहीं थीं।

### भारत अपनी पसंद से खरीद सकता है तेल', किर्बी ने कहा-हिंदुस्तान में अपने दम पर चीन का सामना करने की क्षमता

**वाशिंगटन।** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इन दिनों अमेरिका दौरे पर हैं। शनिवार को व्हाइट हाउस के एक

अधिकारी ने कहा कि भारत के लिए चीन भले एक चुनौती है, लेकिन भारत अपने दम पर चीन का सामना करता है। एक दिन पहले राष्ट्रपति जो बाइडन और प्रथम महिला जिल बाइडन ने पीएम मोदी के लिए राजकीय रात्रिभोज का आयोजन किया था। व्हाइट हाउस राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के रणनीतिक संचार समन्वयक ने पीएम मोदी की आधिकारिक यात्रा के संबंध में शनिवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया। इस दौरान जॉन किर्बी ने कहा कि भारत को तेल खरीदने के लिए अपनी पसंद खुद चुननी होगी। हम उम्मीद करते हैं कि भारत मूल्य सीमा पर या उससे नीचे ही रूसी तेल खरीदे। जैसा वह पहले से ही कर रहा है। उन्होंने कहा कि पीएम मोदी की यह राजकीय यात्रा चीन के बारे में नहीं थी। बल्कि यह यात्रा भारत और अमेरिका के द्विपक्षीय संबंधों के महत्व के बारे में दोनों देशों के नागरिकों को संदेश देने के लिए थी। सच कहूं तो, भारत के सामने चीन एक बड़ी चुनौती है। लेकिन भारत अपने दम पर चीन का सामना करने का दम रखता है। किर्बी ने आगे कहा कि हां, दोनों देशों पर मंडरा रहे चीनी संकट को कल के एजेंडे में शामिल किया गया। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि भारत पर चीन के खिलाफ जवाबी हमले के लिए जोर डाला गया है। भारत संप्रभु और स्वतंत्र राज्य है। भारत से बेहतर कोई नहीं हो सकता जॉन किर्बी ने कहा कि इस यात्रा से पुष्टि हो गई कि भारत और अमेरिका के रिश्ते पहले से कहीं अधिक मजबूत, गहरे और व्यापक हो गए हैं।

### सिंगापुर में भारतीय शेफ को हुई जेलः 3 महीनों में 2 नाबालिग लड़कियों से छेड़छाड़ की; लिफ्ट और ट्रेन स्टेशन पर गलत तरीके से छूआ

**सिंगापुर।** सिंगापुर में एक भारतीय शेफ को 3 महीने में 2 नाबालिग लड़कियों से छेड़छाड़ का दोषी पाया गया है। इसके चलते उसे 3 महीने और चार हफ्तों की सजा मिली है। दोषी का नाम सुशील कुमार है, जिसकी उम्र 44 साल बताई गई है। रिपोर्ट्स के मुताबिक सुशील ने एक लड़की से ट्रेन स्टेशन और एक से लिफ्ट में छेड़छाड़ की थी। इसके बाद दोनों ने अपने घरवालों से उसकी शिकायत की। पहला मामला अगस्त 2022 का है। जब शेफ सुशील कुमार ने सिंगापुर के बून केंग ट्रेन स्टेशन पर एक नाबालिग से पता पूछने के बहाने छेड़छाड़ की। कोर्ट के मुताबिक छेड़छाड़ का पहली घटना तब हुई जब एक 14 साल की लड़की घर जा रही थी, तभी कुमार ने रास्ता पूछने के बहाने से लड़की से बात की।

## टाइटन में सवार लोगों के शव मिलना मुश्किल

# पनडुब्बी के ट्रायल की तस्वीरों में दिख रहा कितनी गहराई में उतरते थे कंपनी के सीईओ

**वॉशिंगटन।**

**अटलांटिक महासागर में 12500 फीट में डूबे टाइटनिक जहाज के मलबे को देखने के लिए गए टाइटन पनडुब्बी में सवार 5 लोगों की मौत हो गई है। रोबोट ऑपरेटिंग व्हीकल को पनडुब्बी का मलबा टाइटैनिक जहाज के मलबे से 1600 फीट की दूरी पर मिला है। रिपोर्ट्स के मुताबिक इसमें मौजूद लोगों का शव मिलना भी काफी मुश्किल होगा। ये इतनी गहराई में है कि जहां किसी इंसान का जाना तो दूर बल्कि सर्च ऑपरेशन चलाना भी काफी चुनौती भरा काम है। अमेरिका के एडमिरल मोगर ने बताया कि समुद्र में जहां पनडुब्बी का मलबा मिला है वहां का वातावरण काफी खतरों से भरा है। अमेरिका की नौसेना ने बताया है कि उन्हें पनडुब्बी के विस्फोट की आवाज रविवार को ही आ गई थी। इसके बावजूद उन्होंने सर्च ऑपरेशन जारी रखा। वो लोगों को बचाने की हर मुमकिन कोशिश करना चाहते थे।**

### दबाव से पनडुब्बी में सवार लोगों के चिथड़े उड़ गए होंगे

आरओवी को मलबे के जो 5 हिस्से मिले हैं, उनमें एक टेल, कोन और प्रेशर हल के 2 सेक्शन शामिल हैं। इंडिपेंडेंट की रिपोर्ट के मुताबिक समुद्र की गहराई में किसी भी तरह की गलती भारी साबित हो सकती है।

अगर पनडुब्बी में प्रेशर मैनेज करने के लिए लगे हल के एक हिस्से में भी खराबी आ जाती है तो पनडुब्बी में पानी भरने लगता है। इससे पनडुब्बी में प्रेशर इतना ज्यादा बनेगा कि कुछ मिलीसेकेंड में वो फट जाएगी। अनुमान लगाया जा रहा है कि टाइटन पनडुब्बी के साथ भी ऐसा ही हुआ होगा।

### पनडुब्बी से जुड़े खतरों की जानकारी देने वाले को कंपनी ने निकाला था

रिपोर्ट के मुताबिक 2018 में कंपनी ने एक कर्मचारी को निकाल दिया था। इसकी वजह ये थी कि उसने पनडुब्बी से जुड़े खतरों की शिकायत प्रशासन को कर दी थी। उस पर जुर्माना भी लगाया गया था।

15 अगस्त 2018 को उसने कोर्ट में एक केस दर्ज किया था। इसमें कहा था कि पनडुब्बी 1300 मीटर की गहराई के दाब का झेलने के लिए बनी है, जबकि ओशन गेट उसे 4000 मीटर तक की गहराई में भेज रहा है। टाइटैनिक के मलबे के पास जहां पनडुब्बी का मलबा मिला है वो जगह बेहद खतरनाक मानी जाती है।

उसे मिडनाइट जोन कहा जाता है क्योंकि वहां अंधेरा रहता है।मिडनाइट जोन में सूरज की रोशनी नहीं पहुंच पाती और वहां कंपा देने वाली ठंड होती है। पानी के तेज बहाव के कारण यहां खतरनाक करंट भी बनता है। हालांकि 2021 से 2022 के बीच 46 लोग टाइटन पनडुब्बी में बैठकर टाइटेनिक का मलबा देखकर आ चुके हैं।

### कितना गहरा है समुद्र...

पृथ्वी का 71प्रतिशत हिस्सा समुद्र के पानी से ढका हुआ है। पृथ्वी पर एक ग्लोबल महासागर है। जिसे चार अलग-अलग हिस्सों में बांटा गया है। इसमें पैसिफिक महासागर, अटलांटिक, आर्क्टिक और हिंद महासागर हैं। 1960 में ट्राइटन सब्मरीन पहली पनडुब्बी बनी जो 700 फीट की गहराई तक पहुंची। वहीं, इंसान की बात करें तो अब तक केवल एक ऑस्ट्रिया के तैराक ही समुद्र में 831 फीट की गहराई तक गोता लगा पाए हैं। यहां जमीन कि तुलना में 26 गुना ज्यादा दबाव रहता है। दुनिया का सबसे बड़ा जानवर ब्लू व्हेल 1640 फीट की गहराई तक जा सकती है।

2400 फीट को डेंजर जोन कहा जाता है, यहां तक केवल परमाणु पनडुब्बियां जा सकती हैं।

समुद्र में 3280 फीट की गहराई के बाद सूरज की किरणें भी नहीं पहुंचती हैं। इसे मिडनाइट जोन कहा जाता है।

9816 फीट समुद्र की वो गहराई है जहां दुनिया का इकलौता मैमल यानी स्तनपायी कुवियर व्हेल प्राणी जा सकता है। यहां जमीन के मुकाबले 378 गुना ज्यादा दबाव रहता है। 20 हजार फीट वो गहराई है जिसे हेडल जोन कहा जाता है। अब तक 35, 839 फीट की गहराई का पता लगाया गया है। यहां मात्र 350 तरीके के जनजातियां हैं। बिजनेस इनसाइडर की रिपोर्ट के मुताबिक अब तक केवल 5 से 10 फीसदी समुद्र की खोज ही हो पाई है।

## डीप स्लीप चीजें याद रखने में मददगार

# नींद में ब्रेन का मेमोरी हब एक्टिव रहता है, यही सूचनाओं को याददाश्त में बदलता है

**वाशिंगटन।**

कहते हैं गहरी नींद से याददाश्त मजबूत होती है। लेकिन ये कैसे होता है कोई नहीं जानता। हालांकि, अब रिसर्चर्स का कहना है कि उन्हें मानव मस्तिष्क के अंदर से फिजियोलॉजिकल एविडेंस मिले हैं जो इस बताते हैं कि नींद के दौरान ब्रेन, मेमोरी को कैसे मजबूत करता है। रिसर्चर्स का कहना है उन्होंने ब्रेन स्टडी की। इसमें पाया कि गहरी नींद के दौरान एक वक्त ऐसा आता है जब दिमाग स्ट्रॉन्ग हो जाता है। इस दौरान याददाश्त भी मजबूत होती है। स्टडी करने के लिए क्लोज-लूप सिस्टम की मदद ली गई। ये एक ऐसा सिस्टम है जो दिमाग के एक हिस्से में डिलिवर होने वाली इलेक्ट्रिकल प्लस को दूसरे हिस्से में स्टोर मेमोरी के साथ मर्ज करता है। ये भूलने की बीमारी जैसे- अल्जाइमर, डिमेंशिया से पीड़ित रोगियों के लिए मददगार साबित हो सकता है। हिप्पोकैंपस और सेरेब्रल कोर्टेक्स आपस में बातचीत करते हैं नींद के दौरान दिमाग सूचनाओं को मेमोरी में कैसे बदलता है, इसको लेकर रिसर्च में कहा गया है कि नींद के दौरान ब्रेन का मेमोरी हब कहलाने वाला हिप्पोकैंपस और तर्क करने वाला सेरेब्रल कोर्टेक्स आपस में बातचीत करते हैं। ऐसा गहरी नींद के दौरान होता है, जब ब्रेन से निकलने वाली तरंगें बेहद धीमी होती हैं। इस समय ब्रेन के अलग-अलग हिस्सों के न्यूरॉन्स एक-दूसरे की सूचनाओं को एक्सचेंज करते हैं। इस स्टडी से पहली बार न्यूरॉन्स के आपस में सूचनाएं एक्सचेंज करने के मैकेनिज्म की जानकारी मिली है। इससे यह भी पता चला है कि मेमोरी हब नींद के दौरान ही प्लानिंग और तर्क करने वाले हिस्से से इन्फॉर्मेशन लेकर उसे याददाश्त में बदलता है। नींद से अल्जाइमर्स का सीधा कनेक्शन, 7.30 घंटे की नींद सबसे बेहतर इससे पहले हुई रिसर्च में यह सामने आया था कि आधी-अधूरी नींद से अल्जाइमर्स बीमारी का कनेक्शन है। याद्दाश्त घटने, भ्रम सा महसूस होने और नई चीजों को देरी से समझना अल्जाइमर्स के लक्षण हैं। शोधकर्ताओं का कहना है, अगर आप 8 घंटे की नींद ले रहे हैं।

# पंजाब सरकार ने पाक सुप्रीम कोर्ट को सौंपी गिरफ्तार लोगों की रिपोर्ट, 9 मई की हिंसा से जुड़ा है मामला

**इस्लामाबाद।**

पाकिस्तान की पंजाब सरकार ने शुक्रवार को सुप्रीम कोर्ट के समक्ष एक रिपोर्ट पेश की, जिसमें नौ मई की हिंसा के बाद पंजाब प्रांत में गिरफ्तार किए गए लोगों की संख्या के बारे में बताया गया है। इससे पहले सुप्रीम कोर्ट ने सरकार को हिरासत में लिए गए महिलाओं और पत्रकारों सहित सैकड़ों हिंसा में शामिल लोगों के विवरण देने का आदेश दिया था। एक मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, शुक्रवार को सुप्रीम कोर्ट में पेश की गई रिपोर्ट से पता चला कि हिंसा के बाद 2,258 लोगों के लिए हिरासत के आदेश जारी किए गए थे, जिसमें 21 लोग जेल में हैं। पंजाब सरकार के अधिवक्ता द्वारा पेश रिपोर्ट से यह भी पता चला है कि आतंकवाद के मामलों में 1,888 लोगों को गिरफ्तार किया गया था, जिसमें 500 को बरी कर दिया गया था जबकि 232 जमानत पर थे। पाकिस्तान के मुख्य न्यायाधीश उमर अता बंदियाल के नेतृत्व वाली सात सदस्यीय पीठ सैन्य कार्रवाईयों के खिलाफ याचिकाओं पर सुनवाई कर रही है। रिपोर्ट में आगे कहा गया कि 247 अन्य मामलों में 4,119 लोगों को गिरफ्तार किया गया था, 1,201 लोगों को बरी कर दिया गया था जबकि 3,012 लोग

जमानत पर थे। हालाँकि, पंजाब सरकार की रिपोर्ट में हिरासत में लिए गए नाबालिगों, पत्रकारों, वकीलों का डेटा शामिल नहीं है। पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की गिरफ्तारी के बाद पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) पार्टी से जुड़े गुस्साए प्रदर्शनकारियों ने सैन्य प्रतिष्ठानों पर हमला कर काफी तोड़फोड़ की। जिसके बाद सरकार ने सेना अधिनियम के तहत नागरिकों पर मुकदमा चलाने का फैसला किया। इमरान खान की गिरफ्तारी के बाद हुए हिंसक विरोध प्रदर्शन में रावलपिंडी में सैन्य मुख्यालय सहित 20 से अधिक सैन्य प्रतिष्ठान और राज्य भवन क्षतिग्रस्त हो गए जिसमें आग लगा दी गई। पूरे पाकिस्तान में पीटीआई कार्यकर्ताओं द्वारा हुई हिंसा के बाद 10,000 से अधिक लोगों को गिरफ्तार किया गया था, जिनमें से 4,000 केवल पंजाब प्रांत से थे। ग्रीस के पास डूबी प्रवासी नाव पर लगभग 350 पाकिस्तानी सवार थे- पाक मंत्री पाकिस्तान ने शुक्रवार को पुष्टि की कि पिछले हफ्ते ग्रीस के तट पर डूबने वाली मछली पकड़ने वाली एक खचाखच भरी नाव पर लगभग 350 पाकिस्तानी सवार थे। इस घटना में कई यात्रियों की मौत हो गई थी।

# भारतीय मूल के व्यक्ति और उसके भतीजे को 14 साल की सजा, कोकीन और हेरोइन की आपूर्ति के लिए चला रहे थे गिरोह

**लंदन।**

**ब्रिटेन की एक अदालत ने भारतीय मूल एक व्यक्ति और उसके भतीजे को सजा सुनाई है। उन्हें वेस्ट मिडलैंड्स क्षेत्र में 100 किलोग्राम से ज्यादा के ड्रग्स की आपूर्ति करने का दोषी पाया गया है। दोनों एक ड्रग आपूर्ति करने वाले गिरोह का नेतृत्व कर रहे थे। लीस्टर की अदालत ने कमलजीत सिंह चहल (52 वर्षीय) और भीपन चहल (25 वर्षीय) को 14 साल की सजा सुनाई है। अदालत ने गिरोह के आठ अन्य सदस्यों को भी सजा सुनाई है, जो 2020 के दौरान कोकीन और हेरोइन की आपूर्ति कर रहे थे।**

भारतीय मूल के तीसरे व्यक्ति संदीप जोहल (32 वर्षीय) को 11 साल की सजा सुनाई गई है। वह भी इस गिरोह में शामिल था। गिरोह के इन सदस्यों ने कोविड महामारी के दौरान राष्ट्रीय स्वास्थ्य सेवा (एनएचएस) के प्रतीक के साथ एक वाहन का भी इस्तेमाल किया था। इस प्रतीक में थैंक यू एनएचएस लिखा हुआ था। गिरोह ने इस प्रतीक का इस्तेमाल किया ताकि ड्रग्स की पहचान न हो सके।

वेस्ट मिडलैंड्स पुलिस क्षेत्रीय संगठित अपराध इकाई के मुख्य निरीक्षक पीटर कुक ने कहा, यह ए श्रेणी का एक महत्वपूर्ण ड्रग अभियान था जिसे कोविड-19 महामारी के दौरान संचालित किया जा रहा था। उन्होंने कहा, यह वेस्ट मिडलैंड्स में ड्रग नेटवर्क को खत्म करने के लिए चल रहे हमारे काम का हिस्सा है, और यह अभियानआगे भी जारी रहेगा।

उन्होंने कहा, हम उन लोगों पर फोकस कर रहे हैं जिन्हें हमारे क्षेत्र में संगठित अपराध के उच्चतम स्तर में शामिल माना जाता है। ये लोग अब कुल मिलाकर 100 साल सलाखों के पीछे बिताएंगे। यह क्लास ए ड्रग्स की आपूर्ति करने के वाले अन्य लोगों को भी स्पष्ट चेतावनी है। हम इसे बर्दाश्त नहीं करेंगे।

# कोर्ट ने पाकिस्तान के पूर्व मंत्री फवाद चौधरी के देशद्रोह मामले को किया स्थगित, 4 जुलाई को होगी सुनवाई

**इस्लामाबाद।**

इस्लामाबाद की एक जिला और सत्र अदालत ने शनिवार को देशद्रोह मामले में पूर्व सूचना और प्रसारण मंत्री फवाद चौधरी के मुकदमे को स्थगित कर दिया। न्यायाधीश ने फवाद चौधरी की छूट याचिका स्वीकार कर ली और उन्हें मुकदमे के लिए 4 जुलाई को अदालत में पेश होने का निर्देश दिया।

### कोर्ट में पेश नहीं हुए फवाद चौधरी

अदालत का यह फैसला पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के अध्यक्ष इमरान खान के पूर्व सहयोगी फवाद चौधरी के कार्यवाही में शामिल नहीं होने के बाद आया है। अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश ताहिर अब्बास सिप्रा ने शनिवार को सुनवाई फिर से शुरू की।

### वकील ने बताया बीमार है फवाद

सुनवाई के दौरान फवाद चौधरी के वकील ने कहा कि उनके मुवक्किल बीमारी के कारण अदालत में पेश नहीं हो सके और उन्होंने आज की सुनवाई से छूट मांगी। फवाद चौधरी के वकीलों की बात सुनने के बाद जज ने पूछा कि क्या पूर्व मंत्री लू की चपेट में आए हैं।

### देशद्रोह का मामला दर्ज

इससे पहले जनवरी में, इस्लामाबाद पुलिस ने पाकिस्तान चुनाव आयोग के सदस्यों को धमकी देने के आरोप में फवाद चौधरी को उनके घर से गिरफ्तार किया था। फवाद चौधरी के खिलाफ इस्लामाबाद के कोहसर पुलिस स्टेशन में मामला

दर्ज किया गया है।

### कई धाराओं के तहत केस दर्ज

यह मामला पाकिस्तान चुनाव आयोग (ईसीपी) के सचिव उमर हामिद खान की शिकायत के बाद दर्ज किया गया था। पूर्व मंत्री फवाद चौधरी पर पाकिस्तान दंड संहिता की धारा 153-ए, 506, 505 और 124-ए (देशद्रोह) के तहत मामला दर्ज किया गया था।

### 9 मई की घटना की निंदा

मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, इससे पहले मई में, फवाद चौधरी ने कहा था कि पाकिस्तान के लोगों को पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज (पीएमएल-एन) सुप्रीमो नवाज शरीफ और पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी (पीपीपी) के सह-अध्यक्ष आसिफ अली जरदारी की दया पर नहीं छोड़ा जा सकता है।

चौधरी ने हाल ही में पीटीआई से अलग हुए इमरान इस्माइल और महमूद मौलवी के साथ एक संयुक्त संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि हम सभी ने 9 मई की घटनाओं की निंदा की है और जिम्मेदार लोगों को कानून के अनुसार दंडित किया जाना चाहिए।

### राजनीतिक और आर्थिक अनिश्चितता के लिए पीडीएम को ठहराया जिम्मेदार

जानकारी के मुताबिक, पाकिस्तान में राजनीतिक और आर्थिक अनिश्चितता के लिए पाकिस्तान डेमोक्रेटिक मूवमेंट के नेतृत्व वाली (पीडीएम) सरकार को जिम्मेदार ठहराते हुए फवाद चौधरी ने कहा कि पाकिस्तान की 250 मिलियन आबादी को आसिफ अली जरदारी और नवाज शरीफ के भरोसे नहीं छोड़ा जा सकता है। चौधरी ने कहा, पाकिस्तान की स्थिति को देखते हुए, यह किसी भी कीमत पर संभव नहीं होगा कि विपक्ष की स्थिति खाली छोड़ दी जाए और पीडीएम को खेलने के लिए खुला मैदान दिया जाए।

# विपक्ष ने माना, तीसरी बार प्रधानमंत्री बनेंगे मोदी : दलाल

**भिवानी ।** भिवानी पहुंचे हरियाणा के कृषि मंत्री जेपी दलाल ने कहा कि इस समय विपक्ष घबराया हुआ है और राहुल गांधी मुंगेरीलाल के हसीन सपने ले रहे हैं। उन्होंने साफ किया कि हरियाणा गठबंधन में कोई खटास नहीं। बता दें कि हरियाणा के कृषि मंत्री जेपी दलाल भिवानी में अपने आवास पर जनता दरबार लगाकर लोगों की समस्याएं सुन रहे थे। इस दौरान वो मीडिया से मुखातिब हुए और देश प्रदेश के राजनीतिक हालातों पर अपनी राय रखी। सबसे पहले जेपी दलाल ने पटना में एकजुट हुए विपक्ष को लेकर कहा कि ये विपक्ष की घबराया है, जिसने दिखा दिया है विपक्ष ने मान लिया है कि मोदी तीसरी बार

पीएम बनेगा। इसलिए वो मोदी को रोकने के लिए बेमेल गठजोड़ कर रहे है। साथ ही राहुल गांधी द्वारा राजस्थान व मध्यप्रदेश सहित चार राज्यों के चुनावों में बीजेपी के दिखाई न देने के दावे पर चुटकी लेते हुए कहा कि राहुल गांधी मुंगेरीलाल के हसीन सपने ले रहे हैं। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी जब विदेश जाकर मोदी व बीजेपी को लेकर भ्रामक प्रचार करते हैं। जिसको लेकर देश के लोग उनसे नाराज हैं। वहीं हरियाणा में गठबंधन में आई खटास को लेकर जेपी दलाल ने साफ किया कि गठबंधन में कोई खटास नहीं गठबंधन पूरे पांच साल चलेगा। सरकार सही काम कर रही है और दोनों पार्टियां अपने प्रचार में जुटी हैं। वहीं लोकसभा सीटों पर अलग-अलग पार्टी के अलग-अलग नेताओं द्वारा दावे पर कहा कि दावे का हक़ सभी को है पर भाजपा में केन्द्रीय नेतृत्व ही फैंसला लेगा।

## प्रदेश के 6250 दिव्यांगजनों को मिलेगी स्कूटियां

**जयपुर ।** दिव्यांगजनों का आवागमन आसान कर उन्हें सम्बल प्रदान करने के लिए राज्य सरकार द्वारा स्कूटियां वितरित की जाएंगी। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने स्कूटियां खरीदने के लिए 54.33 करोड़ रुपए के वित्तीय प्रस्ताव को मंजूरी दी है। इस राशि से वर्ष 2023-24 के लिए 5 हजार और गत वर्ष वितरण में शेष 1250 स्कूटियों सहित कुल 6250 स्कूटियां क्रय की जाएंगी। ये स्कूटियां रेट्रोफिटेड होंगी, जिससे दिव्यांगजनों को बाद में अतिरिक्त खर्च वहन नहीं करना पड़ेगा। उल्लेखनीय है मुख्यमंत्री द्वारा वर्ष 2023-24 के बजट में 5 हजार स्कूटी वितरण के संबंध में घोषणा की गई थी।

## राजस्थान उच्च न्यायालय की पत्रावलियां होंगी पेपरलेस

**जयपुर ।** राज्य सरकार पर्यावरण संरक्षण और पेपरलेस कार्यों के लिए अहम निर्णय ले रही है। इसी क्रम में राजस्थान उच्च न्यायालय को पेपरलेस कोर्ट बनाने का कार्य किया जा रहा है। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने उच्च न्यायालय के आपराधिक प्रकरणों से संबंधित पत्रावलियों के अलावा शेष समस्त नवीन व लंबित पत्रावलियों की स्केनिंग एवं डिजिटाइजेशन के लिए 1.13 करोड़ रुपए की मंजूरी दी है। इन कार्यों से कोर्ट के कार्यों में सुगमता आएगी। उल्लेखनीय है कि इस कार्य के प्रथम फेज के तहत क्रिमिनल प्रकरणों की पत्रावलियों के स्केनिंग एवं डिजिटाइजेशन का कार्य जारी है।

# एनएचएआई ने पंजाब सरकार का प्रस्ताव किया रद्द

## *कर्मचारियों को देना होगा टोल*

**चंडीगढ़ ।** नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया (एनएचएआई) ने पंजाब सरकार को झटका देते हुए कर्मचारियों व अधिकारियों का टोल फ्री करने से इनकार कर दिया है। पंजाब सरकार विधानसभा के विशेष सत्र में भी इस प्रस्ताव को पारित कर चुकी है। सरकार ने बीते आठ जून को एनएचएआई को भेजे अपने आदेश में कहा था कि एग्जीक्यूटिव इंजीनियर, एसडीओ, जेई, पटवारी, जिलेदार, डिप्टी कलेक्टर वाटर रिसोर्स जो अपनी ड्यूटी के लिए टोल बैरियर पार करते हैं, उन्हें टोल टैक्स फ्री किया जाए। प्रिंसिपल सेक्रेटरी वाटर रिसोर्स ने इस बारे में हरियाणा के पंचकूला में नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया के रीजनल ऑफिस को भी पत्र लिखा था। उन्होंने एनएचएआई को लिखा कि बताए गए सभी अधिकारियों-कर्मचारियों जिनकी कैटेगरी के बारे में सूचित किया गया है, को टोल टैक्स से मुक्त किया जाए। एनएचएआई के क्षेत्रीय अधिकारी विपनेश शर्मा ने जल स्रोत विभाग के प्रमुख सचिव को पत्र लिखकर कहा है कि जल स्रोत विभाग के अधिकारियों व कर्मचारियों की श्रेणियां नेशनल हाइवे फील रूल 2008 के पहरा 11 में बताए गए व्यक्तियों, अधिकारियों आदि की सूची में नहीं आते हैं। जिसके चलते पंजाब सरकार के इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं कर सकता। एनएचएआई के पत्र के बाद अब इन अधिकारियों को पंजाब सरकार के टोल पर तो छूट मिलेगी, लेकिन नेशनल हाइवे के टोल पर पैसे देने होंगे।

# शॉपिंग कांप्लेक्स में लगी आग, एक अग्निशामक और एक सेल्समैन घायल

**श्रीनगर ।** श्रीनगर के लाल चौक के अंतर्गत पड़ते रीगल लेन पर स्थित एक शॉपिंग कॉम्प्लेक्स में शनिवार को आग लग गई। इस आगजनी की घटना में एक अग्निशामक और एक सेल्समैन घायल हो गए। घायलों को पास के अस्पताल इलाज के लिए भेजा गया है। जानकारी के अनुसार दो मंजिला शॉपिंग कॉम्प्लेक्स में शनिवार सुबह आग लग गई जिससे दुकानदारों और ग्राहकों में दहशत फैल गई। स्थानीय अधिकारियों ने तुरंत अग्निशमन और आपातकालीन सेवा (एफ एंड ईएस) विभाग को सूचित किया। कुछ ही देर बाद दमकल विभाग की गाड़ियां घटनास्थल पर पहुंच गई। अग्निशमन कर्मियों ने आग बुझाने के प्रयास शुरू किए। हालांकि बचाव अभियान के दौरान एक एफएंडईएस फायर फाइटर जिसकी पहचान गुलड़ार अहमद और एक सेल्समैन को चोटें आईं। दोनों को तुरंत मौके से निकालकर पास अस्पताल ले जाया गया, जहां पर उनका उपचार जारी है। एफएंडईएस विभाग के एक अधिकारी ने घटना की पुष्टि करते हुए कहा कि फिलहाल आग पर नियंत्रण पा लिया गया है। उन्होंने कहा कि आग लगने के कारणों का फिलहाल पता नहीं चल पाया है। उन्होंने कहा कि संबंधित अधिकारियों द्वारा इसकी जांच की जा रही है।

## डीसी ने उधमपुर टाउनशिप में यातायात प्रबंधन परिदृश्य का किया निरीक्षण

**उधमपुर ।** यातायात प्रबंधन परिदृश्य की समीक्षा करने और उधमपुर शहर और इसके बाहरी इलाकों में यातायात के सुचारू प्रवाह में रूकावट डालने वाली बाधाओं का आंकलन करने के लिए उपायुक्त सचिन कुमार वैश्य ने एसएसपी डॉ. विनोद कुमार के साथ शहर के विभिन्न हिस्सों का व्यापक दौरा किया। दौरे के दौरान डीसी ने एनएच, धार रोड, गोले मेला और दुधर नाला आदि सहित प्रमुख यातायात प्रवाह को पूरा करने वाले क्षेत्रों का दौरा किया। उन्होंने गोल मेला और दुधर नाला में मोटर वाहन विभाग द्वारा पहचाने गए ई-रिक्शा और भारी ट्रकों के लिए निष्क्रिय पार्किंग स्थल का भी निरीक्षण किया।

# अमित शाह ने शहीद जवानों के परिजनों से मुलाकात कर सौंपे नियुक्ति पत्र

**श्रीनगर ।** केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने दो दिवसीय जम्मू-कश्मीर दौरे के दूसरे दिन शनिवार को राज्य पुलिस के शहीद जवानों के परिजनों से मुलाकात कर नियुक्ति पत्र सौंपे। इसके बाद गृहमंत्री शाह दिल्ली के लिए रवाना हुए। गृहमंत्री ने अपने ट्वीट में कहा कि जम्मू-कश्मीर पुलिस के असंख्य जवान, जिन्होंने आतंकियों से लड़ते हुए निर्दोष नागरिकों की सुरक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दी, यह इस बात का प्रमाण है कि कश्मीर और वहां के लोग शांति के लिए कितने प्रतिबद्ध हैं। आज श्रीनगर में ऐसे शहीदों के परिजनों से मुलाकात की और शहीदों के परिजनों को जम्मू-कश्मीर सरकार की ओर से नियुक्ति पत्र सौंपे। इससे पहले अमित शाह ने श्रीनगर के ऐतिहासिक लाल चौक से सटे प्रताप पार्क में उप राज्यपाल मनोज सिन्हा तथा अन्य अधिकारियों की मौजूदगी में बलिदान स्तंभ का शिलान्यास किया। इसके बाद उन्होंने वरिष्ठ नेता डॉ. कर्ण सिंह से भी

मुलाकात की और पुलिस गोल्फ कोर्स में शहीद गैलरी का उद्घाटन किया। गृहमंत्री ने ट्वीट कर कहा कि जम्मू-कश्मीर देश के शौर्यवीरों के अदम्य साहस एवं वीरता की कर्मभूमि रही है। ऐसे ही वीरों के पराक्रम को चिरंजीवी बनाने के लिए आज श्रीनगर के प्रताप पार्क में बलिदान स्तंभ का शिलान्यास किया। यह स्तंभ बलिदानियों की स्मृति को अमर कर युवाओं को देशभक्ति की प्रेरणा देगा।

# निभी के ताल में मिली महिला की लाश की हुई पहचान

**धौलपुर ।** धौलपुर-जयपुर हाईवे पर स्थित निभी के ताल में मिली मृत महिला की पहचान आगरा निवासी अनीता के रूप में हुई है। पहचान होने के बाद में धौलपुर जिले की बसई डांग थाना पुलिस ने मृतका के शव का पोस्टमार्टम करा उसे परिजनों को सौंप दिया है। धौलपुर पंहुचे मृतका के देवर ने महिला के भाईयों के विरुद्ध हत्या का मामला दर्ज कराया है। बसई डांग थाना प्रभारी मोहन सिंह ने बताया कि निभी के ताल में मृत पाई गई महिला की पहचान अनीता (35) पत्नी धर्मवीर प्रजापति निवासी दयालबाग आगरा के रूप में हुई है। महिला का पीहर मधु नगर आगरा और ससुराल गणेश नगर दयाल बाग आगरा में है। मृतका अनीता के देवर लखन कुमार ने महिला की शिनाख्त करते हुए थाने में हत्या का मामला दर्ज कराया है। थाना प्रभारी ने बताया कि महिला अनीता का पति मानसिक रूप से बीमार रहता है। जिसके चलते महिला अनीता अपने पति धर्मवीर को लेकर आगरा में ही किराए के मकान पर रह रही थी। जहां, उसके दूसरे किराएदार से अवैध संबंध बन गए। पीहर पक्ष को अवैध संबंधों की जानकारी मिलने के बाद 22 जून को अनीता के भाई लोकेश, राजू और विकास अनीता को ससुराल से अपने साथ पीहर ले जाने की बात कह कर अपने साथ ले गए। ऐसी संभावना है कि आरोपियों ने अपनी बहन अनीता की हत्या कर डेड बॉडी को बसई डांग थाना इलाके में धौलपुर-जयपुर हाईवे पर स्थित निभी के ताल में रस्सी से पैर बांधकर फेंक दिया। इसके बाद में शुक्रवार सुबह अनीता की लाश पानी में तैरती हुई मिली थी। थाना प्रभारी ने बताया कि महिला के देवर ने अपने भाई के तीनों सालों पर अपनी भाभी अनीता की हत्या करने का मामला दर्ज कराया है। थाने में मामला दर्ज होने के बाद शनिवार को महिला का पोस्टमार्टम करा कर परिजनों को सुपुर्द कर दिया गया है। अवैध संबंधों के चलते महिला की हत्या के मामले में पुलिस आरोपियों की तलाश में जुटी है।

# गिरफ्तारी देने पहुंचे भीम आर्मी के नेताओं को पुलिस ने नहीं किया गिरफ्तार

## अधिकारी बोले, नए सिरे से करेंगे जांच

**हिसार ।** भीम आर्मी जिलाध्यक्ष प्रदीप भानखड़, आजाद समाज पार्टी के जिला प्रधान एडवोकेट बजरंग इंदल व प्रवक्ता संतलाल अंबेडकर को कोर्ट परिसर चौकी पुलिस ने नौ माह पुराने एक केस में हत्या प्रयास की धारा जोडकर जांच के लिए तलब किया। दोनों दलित नेताओं को कोर्ट परिसर चौकी इंचार्ज सुरेंद्र सिंह ने शनिवार को वर्ष 2022 के इस मामले में जांच के लिए बुलाया। भीम आर्मी के जिलाध्यक्ष प्रदीप भानखड़ और एडवोकेट बजरंग इंदल गिरफ्तारी देने को पहुंचे लेकिन सिविल लाइन एसएचओ विनोद कुमार मौके पर आकर गिरफ्तारी नहीं करने और इस मामले की फिर से नए सिरे से जांच करने की बात कही। भीम आर्मी और आजाद समाज पार्टी के नेताओं प्रदीप भानखड़ और बजरंग इंदल ने कोर्ट चौकी में ही कहा कि यह पुलिस की तानाशाही और सेक्टर 1-4 की दो बहनों के मामले में समझौता करवाने की रणनीति है। पूरी भीम आर्मी गिरफ्तारी देने को तैयार है, दोनों बहनें निडर और मजबूत है लेकिन आरोपित पवन कुमार एडीजीपी कार्यालय का सिपाही है। उस आरोपित सिपाही को बचाने के लिए पूरा पुलिस प्रशासन लगा हुआ है कि किसी भी तरीके से दोनों बहनों को समझौते के लिए राजी किया जा सके। बजरंग इंदल और प्रदीप भानखड ने कहा कि समाज को न्याय दिलाने के लिए वो सैंकड़ों बार जेल जाने को तैयार है। भीम आर्मी के प्रभारी विजय अठवाल, छात्र नेता अमित जाटव व जितेंद्र बेदी ने कहा की विक्रम वाल्मीकि हत्याकांड प्रदर्शन

के जिस केस में प्रदीप भानखड और बजरंग इंदल को तलब किया गया है उस केस की पुलिस खुद ही शिकायतकर्ता और जांचकर्ता है। एफआईआर में हत्या प्रयास की धारा नहीं थी और अदालत ने भी बाद में पुलिस द्वारा इजाद की गई हत्या प्रयास की धारा को नकार दिया था। इस अवसर पर मुन्ना वाल्मीकि, विकास आर्यनगर, कुनाल भुक्कल, अनिल पांचाल, महेंद्र पाल टेलर, विनोद गुरी, प्रमोद बागड़ी, प्रदीप सिंहमार, जितेंद्र बेदी, अमित जाटव, अरुण पंवार, बलराज वाल्मीकि, अशोक इंदल, शमशेर, रवि मेहरा, विशाल चांवरिया, अशोक मुजादपुर, विशाल, अमित मुवाल जींद, दीपक वाल्मीकि, कुलदीप भानखड़, रमन भूना, सुशील छात्र, सुरेन्द्र बराड़, मनोज चोपड़ा, मनीराम, अमरदीप, मनीष, भीमसिंह, रविदत, जितेन्द्र मोटा, विनोद, सुरेन्द्र, प्रमोद, सुशील आर्यनगर, जलदीप, कुलदीप बौद्ध, बिशंबर वाल्मीकि व जगमोहन सहित अन्य भी मौजूद रहे।

# अवैध कॉलोनियों को नियमित करने के लिए आरडब्ल्यूए की शर्त खत्म : मनोहर लाल

**चंडीगढ़, 24 जून (हि.स.)।** हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने घोषणा की कि अनियमित कॉलोनियों को नियमित करने के लिए अभी तक रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन (आरडब्ल्यूए) की शर्त होती थी, लेकिन अब से आरडब्ल्यूए की आवश्यकता नहीं होगी। कॉलोनी का कोई भी व्यक्ति कॉलोनी को नियमित करने के लिए आवेदन करेगा तो उसे अप्रूव कर दिया जाएगा। मनोहर लाल ने कहा कि सभी 88 शहरी स्थानीय निकायों में सर्वे के आधार पर शहरों में लगभग 46 लाख प्रॉपर्टी आईडी बनाई गई हैं। इन प्रॉपर्टी आईडी से संबंधित जो भी त्रुटियां हैं, उन्हें आगामी एक माह में अधिक से अधिक कैंप लगाकर दुरुस्त किया जाएगा। मुख्यमंत्री शनिवार को विशेष चर्चा कार्यक्रम के तहत ऑडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से प्रॉपर्टी आईडी के लाभार्थियों के साथ सीधा संवाद कर रहे थे। संवाद के दौरान लाभार्थियों ने प्रॉपर्टी आईडी से संबंधित कठिनाइयों को दूर करने और पूरी प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया। मनोहर लाल ने कहा कि लगभग 46 लाख प्रॉपर्टी आईडी बनाई गई हैं। इनमें से नियमित कॉलोनियों में 36 लाख संपत्तियां पाई गई और अन अप्रूव्ड एरिया या अनियमित कॉलोनियों में 10 लाख संपत्तियां पाई गई। इन प्रॉपर्टी आईडी को नवंबर, 2022 में पोर्टल पर अपलोड किया गया, ताकि संपत्ति मालिक स्वयं अपनी प्रॉपर्टी आईडी को सत्यापित कर सके। हालांकि केवल 1.50 लाख प्रॉपर्टी मालिकों ने ही प्रॉपर्टी आईडी को सत्यापित किया। मनोहर लाल ने कहा कि प्रॉपर्टी आईडी के विवरण में कुछ सम्पत्तियों की आईडी में त्रुटियां पाई गईं, इस कारण सम्पत्ति धारकों द्वारा आपत्तियां दर्ज करवाई गईं।

## प्रतिबंध अवधि में खुलेआम रेत का अवैध उत्खनन

**धमतरी (हि.स.)।** महानदी घाट के गांवों में रेत का अवैध उत्खनन फिर से प्रारंभ हो गया है। रेत खदानों में रात 11 बजे से सुबह पांच बजे तक मशीनों से रेत खोदी जा रही है। जिला मुख्यालय से लगे अछोटा पुल के नीचे रोज सैकड़ों ट्रेक्टर रेत का अवैध उत्खनन मानव श्रम से हो रहा है। इसके बावजूद भी जिला प्रशासन और खनिज विभाग मूकदर्शक बना हुआ है। प्रशासन के सुस्त होने से प्रतिबंध अवधि में कानून की धज्जियां उड़ाई जा रही है। जिले में रेत उत्खनन पर प्रतिबंध के नियम का कही भी पालन नहीं हो रहा है। धमतरी जिले में इन दिनों खनिज संपदा रेत को लूटने की होड़ मची हुई है।

## दो महिलाओं सहित तीन लोग गिरफ्तार

# नशा तस्करों के एक गिरोह का भंडाफोड़

**बारामूला ।** बारामूला जिले के सोपोर इलाके से पुलिस ने दो महिलाओं सहित तीन लोगों की गिरफ्तारी के साथ नशा तस्करों के एक गिरोह का भंडाफोड़ किया है। पुलिस

ने एक बयान में कहा कि तारडू पुलिस स्टेशन की एक पार्टी ने संग्रामा चौक पर तीन नशा तस्करों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार किए गए नशा तस्करों की पहचान अब्दुल लतीफ गोजर पुत्र नूर मुहम्मद गोजर निवासी गांडू, परवीन कौंसर पुत्री मीर हुसैन निवासी सिदडा बाईपास जम्मू और शबनम बेगम पुत्री मोहम्मद अकबर खान निवासी अखेरवानी वुलुत्रा रफियाबाद के रूप में हुई है। अधिकारी ने बताया कि तीनों को संदिग्ध तरीके से घूमते हुए गश्ती दल ने देखा। पुलिस को देखकर तीनों ने भागने की कोशिश की लेकिन सतर्क पुलिस ने उन्हें नायलॉन बैग के साथ पकड़ लिया। उन्होंने बताया कि बैग की तलाशी के दौरान हेरोइन जैसा पदार्थ बरामद किया गया। तीनों तस्करों को पुलिस ने तुरंत गिरफ्तार कर लिया और पुलिस स्टेशन टाडू में कानून की संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया है।

## भरतपुर में खुलेगा होम्योपैथिक महाविद्यालय

**जयपुर ।** मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने भरतपुर में नवीन होम्योपैथिक महाविद्यालय खोले जाने के प्रस्ताव को मंजूरी दी है। साथ ही, महाविद्यालय के संचालन के लिए नवीन पदों के सृजन की भी स्वीकृति प्रदान की है। इस होम्योपैथिक महाविद्यालय का संचालन विभाग द्वारा नवस्थापित आयुष शिक्षण सोसायटी के माध्यम से किया जाएगा। महाविद्यालय संचालन के लिए 12 शैक्षणिक एवं 18 अशैक्षणिक/चिकित्सकीय/पैरा मेडिकल के पद सृजित होंगे। शैक्षणिक पदों में सह आचार्य एवं सहायक आचार्य के 6-6 पदों के सृजन की स्वीकृति प्रदान की गई है। अशैक्षणिक/चिकित्सकीय/पैरा मेडिकल में मेडिकल सुपरिन्टेंडेंट, सीनियर मेडिकल ऑफिसर, मेडिकल ऑफिसर, रेजीडेंट मेडिकल ऑफिसर, फार्मासिस्ट/जूनियर नर्स, नर्सिंग सुपरिन्टेंडेंट, सीनियर असिस्टेंट एवं लाइब्रेरियन के 1-1 पद, हाउस फिजिशियन एवं नर्सिंग स्टाफ के 2-2 पद तथा लेबोरेट्री टेक्नीशियन एवं लेबोरेट्री असिस्टेंट के 3-3 पद सृजित होंगे। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री द्वारा बजट वर्ष 2023-24 में भरतपुर में होम्योपैथिक महाविद्यालय खोलने की घोषणा की गई थी।

## तरनतारन में बीएसएफ ने पाकिस्तान का ड्रोन किया ढेर

**चंडीगढ़, 24 जून (हि.स.)।** बीएसएफ ने शनिवार सुबह भारतीय सीमा में प्रवेश करने पर पाकिस्तान के एक ड्रोन को मार गिराया। यह वाकया पंजाब के तरनतारन के सरहदी गांव लखना का है। बीएसएफ के अधिकारियों के मुताबिक के जवान गश्त पर थे। इसी दौरान उन्हें ड्रोन की आवाज सुनाई दी। जवानों ने फायरिंग शुरू की। कुछ समय बाद आवाज आनी बंद हो गई। जवानों ने इलाके को सील कर सर्च अभियान शुरू किया। यह ड्रोन खेतों में गिरा मिला। जल्द ही इसे फॉरेंसिक जांच के लिए भेजा जाएगा।

# डीसी ने विभाग के कामकाज की समीक्षा की

**उधमपुर ।** उपायुक्त उधमपुर सचिन कुमार वैश्य ने स्वास्थ्य विभाग के कामकाज की समीक्षा के लिए मिनी कॉन्फ्रेंस हॉल डीसी कार्यालय परिसर में एक बैठक की अध्यक्षता की। शुरुआत में मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. अनिल मन्हास ने डीसी को स्वास्थ्य विभाग की कार्यप्रणाली और सूचकवार उपलब्धियों के बारे में जानकारी दी। डीसी ने विभिन्न स्वास्थ्य योजनाओं के तहत दर्ज उपलब्धियों, स्वास्थ्य संस्थानों के कामकाज, बुनियादी ढांचे के उन्नयन और मरीजों को प्रदान की जा रही स्वास्थ्य सुविधाओं की व्यापक समीक्षा की। डीसी ने जनता की सुविधा के लिए सभी स्वास्थ्य संस्थानों में स्वास्थ्य सेवाओं की कुशल डिलीवरी पर ध्यान केंद्रित करने को कहा। उन्होंने जिले के सभी स्वास्थ्य संस्थानों में नैदानिक सुविधाओं और सामान्य रोगी देखभाल सहित बुनियादी ढांचे के उन्नयन पर जोर दिया। उन्होंने मानव संसाधनों के अधिकतम उपयोग पर जोर दिया। उन्होंने सभी को पूरी लगन और ईमानदारी से मरीजों की सेवा करने पर जोर दिया।

# उदयपुर में रामभक्त हनुमान की 151 फीट की विशाल प्रतिमा का शिलान्यास

**उदयपुर ।** उदयपुर शहर से 30 किलोमीटर दूर कुराबड़ मार्ग स्थित शिशवी गांव में सबसे ऊंची 151 फीट की रामभक्त हनुमान की विशाल प्रतिमा के निर्माण का कार्य अब जमीनी स्तर पर शुरू हो गया है। यह प्रतिमा पंचमुखी हनुमान की बैठी हुई मुद्रा में होगी। श्री 108 पंचमुखी बालाजी विकास समिति के तत्वावधान में इसका शिलान्यास शनिवार को महंत मनोहर गिरधारी दास महात्यागी, मेवाड़ के पूर्व राजपरिवार के सदस्य डॉ. लक्ष्यराज सिंह मेवाड़, वल्लभनगर विधायक प्रीति शक्तावत आदि ने किया। इस अवसर पर डॉ. लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ ने कहा कि मेवाड़ धर्म-संस्कृति के संरक्षण के लिए हमेशा तत्पर रहा है और आगे भी रहेगा। हनुमानजी की 151 फीट की विशाल प्रतिमा मेवाड़ के लिए गौरव की बात है। सनातन धर्म के संरक्षण और संवर्धन के लिए अन्य संगठनों के युवाओं को भी आगे आकर इस तरह की पुनीत पहल करनी होगी। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने प्रथम फेज के कार्यों के लिए 5 करोड़

रुपए की मंजूरी दी है। इस राशि के उपयोग के बाद अतिरिक्त बजट प्रावधान की भी सहमति दी गई है। यूनिवर्सिटी की स्थापना पर चरणों में 499.86 करोड़ रुपए व्यय किए जाएंगे।

# मल्टीबैगर स्टॉक ने दिया 300प्रतिशत रिटर्न : कोचीन मिनरल्स का शेयर 9 महीने में 103 से 405 पर पहुंचा

**मुंबई।**

कोचीन मिनरल्स एंड रूटाइल लिमिटेड के शेयर ने पिछले कुछ महीनों में अपने निवेशकों को बंपर रिटर्न दिया है। इस मल्टीबैगर स्टॉक ने अपने निवेशकों को पिछले 9 महीने में करीब 300प्रतिशत का शानदार रिटर्न दिया है। स्पेशियलिटी केमिकल्स बनाने वाली दिग्गज कंपनी कोचीन मिनरल्स के शेयर इस हफ्ते करीब 2.5प्रतिशत कमजोर हुए हैं। पिछले महीने यह रिकॉर्ड ऊंचाई पर था और इस ऊंचाई से यह करीब 25प्रतिशत फिसल चुका है। हालांकि, लॉन्ग टर्म की बात करें तो इसने अपने निवेशकों को करोड़पति बनाया है। शेयरों के मौजूदा हालत की बात करें तो शुक्रवार (23 जून) को बीएसई पर यह 1.23प्रतिशत की गिरावट के साथ 304.20 रुपए पर बंद हुआ। इसका टोटल मार्केट कैप 238.19 करोड़ रुपए है।

**9 महीने में 103 से 405 पर पहुंचा शेयर** - पिछले साल 4 जुलाई 2022 को कोचीन मिनरल्स का शेयर एक साल के निचले स्तर 103 रुपए पर था। इसके बाद करीब 9 महीने में यह 293प्रतिशत चढ़कर 23 मई 2023 को 405 रुपए पर पहुंच गया था। यह इसके शेयरों का रिकॉर्ड हाई लेवल है। हालांकि, शेयरों की तेजी यहीं थम गई और तब से अब तक यह रिकॉर्ड हाई से करीब 25प्रतिशत फिसल चुका है।

**22 साल में 1 लाख का बनाया 1 करोड़** - कोचीन मिनरल्स का शेयर 30 मार्च 2001 को सिर्फ 2.80 रुपए का था। तब की तुलना में यह 10,764प्रतिशत बढ़कर 304.20 रुपए के भाव में मिल रहा है। यानी 22 साल में इस शेयर ने अपने निवेशकों के 1 लाख रुपए को 1.08 करोड़ रुपए कर दिया है। कोचीन मिनरल्स ने लॉन्ग टर्म के अलावा शॉर्ट टर्म में भी अपने निवेशकों को अच्छा रिटर्न दिया है।

**क्या काम करती है कोचीन मिनरल्स** - कोचीन मिनरल्स एंड रूटाइल लिमिटेड अच्छी क्वालिटी की सिंथेटिक रूटील बनाने वाली दुनिया की दिग्गज कंपनियों में से एक है। यह टाइटेनियम ऑक्साइड होता है, जिसका इस्तेमाल ग्लास, चीनी के बर्तन (पोर्सलिन) और मिट्टी के बर्तन (सैरैमिक्स) जैसी चीजों में होता है। कंपनी की साइट पर मौजूद डिटेल्स के मुताबिक, यह एक्का फेरिकक्लोराइड बनाने वाली देश की सबसे बड़ी कंपनी है, जिसका इस्तेमाल पानी को शुद्ध करने में किया जाता है। इसका प्लांट कोचीन बंदरगाह से दूर एडायार इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट एरिया में है। कंपनी की फाइनेंशियल कंडिशन की बात करें तो जनवरी-मार्च 2023 में इसका नेट प्रॉफिट तिमाही आधार पर करीब 23प्रतिशत घटकर 16.81 करोड़ रुपए से 13 करोड़ रुपए पर आ गया है।

## न्यूज ब्रीफ

### इस हफ्ते सोने-चांदी में बड़ी गिरावट: 58 हजार के करीब आया सोना, चांदी 4 हजार रुपए से ज्यादा फिसली

**नई दिल्ली।** इस हफ्ते सोने-चांदी के दामों में बड़ी गिरावट देखने को मिली है। इंडिया बुलियन एंड ज्वैलर्स एसोसिएशन की वेबसाइट के अनुसार सर्राफा बाजार में इस हफ्ते की शुरुआत, यानी 19 जून को सोना 59370 रुपए पर था, जो अब, यानी 24 जून को 58,395 रुपए प्रति 10 ग्राम पर आ गया है। यानी इस हफ्ते इसकी कीमत 985 रुपए कम हुई है। वेबसाइट के अनुसार इस हफ्ते चांदी में 4 हजार रुपए से ज्यादा की गिरावट देखने को मिली है। इस हफ्ते की शुरुआत में ये 72,626 रुपए पर थी जो अब 68,304 रुपए प्रति किलोग्राम पर आ गई है। यानी इस हफ्ते इसकी कीमत 4,322 रुपए कम हुई है। इस महीने यानी जून में अब तक सोने में गिरावट देखने को मिली है। इस महीने की शुरुआत यानी 1 जून को ये 60,113 रुपए प्रति 10 ग्राम पर था, जो अब 58,395 रुपए पर है। यानी इसके दाम में 1,718 रुपए की गिरावट आई है। सिक्योरिटीज के वाइस प्रेसिडेंट अनुज गुप्ता कहते हैं कि सोने में ये गिरावट स्थाई नहीं हैं। आने वाले दिनों में इसकी कीमत में फिर बढ़त देखने को मिल सकती है। अनुज गुप्ता के अनुसार साल के आखिर तक सोना फिर 62 हजार तक जा सकता है। अगर आप इन दिनों सोना खरीदने का प्लान बना रहे हैं तो, ब्यूरो ऑफ इंडियन स्टैंडर्ड का हॉलमार्क लगा हुआ सर्टिफाइड गोल्ड ही खरीदें। नए नियम के तहत एक अप्रैल से छह डिजिट वाले अल्फान्यूमेरिक हॉलमार्किंग के बिना सोना बेचने पर रोक लगा दी गई है। जैसे आधार कार्ड पर 12 अंकों का कोड होता है, उसी तरह से सोने पर 6 अंकों का हॉलमार्क कोड होगा। इसे हॉलमार्क यूनीक आइडेंटिफिकेशन नंबर कहते हैं।

### जीई-एचएएल के बीच करार, विशेषज्ञ बोले- जेट इंजन तकनीक में आत्मनिर्भरता की दिशा में सबसे अहम कदम

**नई दिल्ली।** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अमेरिका यात्रा के दौरान रक्षा, अंतरिक्ष, जलवायु परिवर्तन, स्वच्छ ऊर्जा, प्रौद्योगिकी समेत अन्य कई क्षेत्रों में महत्वपूर्ण समझौते हुए हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि इन समझौतों से दोनों देशों के संबंधों को बढ़ावा मिलेगा। पूर्व उप राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार पंकज सरन ने कहा कि रक्षा सौदों से भारत की रक्षा क्षमता को बढ़ेगी ही, दोनों देशों के संबंध भी प्रगाढ़ होंगे। उन्होंने इस रक्षा समझौते को भारत-अमेरिका रिश्तों में एक नए युग का प्रतीक बताया। उन्होंने कहा कि पहले भी शिखर बैठकें हुई हैं लेकिन इस विशेष शिखर बैठक में दोनों पक्षों ने रणनीतिक क्षेत्रों में अपने संबंधों को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाने के लिए बहुत ही सचेत निर्णय किया है। भारतीय वायु सेना के पूर्व उप प्रमुख एयर मार्शल रवि कांत शर्मा (सेवानिवृत्त) जनरल इलेक्ट्रिकल्स और हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लि. के बीच हुआ समझौता भारत और उसके जेट इंजन कार्यक्रम की दिशा में बहुत ही अहम कदम है। इससे जेट इंजन तकनीक में भारत की आत्मनिर्भरता के प्रयासों को गति मिलेगी।

### कनाडा में फेसबुक-इंस्टाग्राम पर नहीं दिखेंगी न्यूज: मेटा ने कहा- ऑनलाइन न्यूज एक्ट प्रभावी होने से पहले खत्म होगी न्यूज अवेलिबिलिटी

**कनाडा।** कनाडा में फेसबुक और इंस्टाग्राम पर यूजर्स जल्द ही न्यूज फीड नहीं देख पाएंगे। दरअसल, कनाडा की सरकार ने अप्रैल 2022 में बिल सी-18 पेश किया है। बिल के लागू होने के बाद गूगल, मेटा जैसी टेक कंपनियों को न्यूज पब्लिशर्स के कंटेंट के लिए पेमेंट करना होगा। इसी के चलते मेटा ने कहा, हम पुष्टि कर रहे हैं कि ऑनलाइन न्यूज एक्ट (बिल सी-18) के प्रभावी होने से पहले कनाडा में सभी यूजर्स के लिए फेसबुक और इंस्टाग्राम पर न्यूज अवेलिबिलिटी खत्म हो जाएगी। इसके साथ ही, मेटा ने कहा है कि न्यूज कंटेंट को प्रभावित करने वाले परिवर्तन के बाद कनाडा में मेटा के उत्पादों और सर्विस को प्रभावित नहीं करेंगे। ऑनलाइन न्यूज एक्ट (बिल सी-18) के रूप में जाने जाना वाला यह कानून कनाडा के मीडिया इंडस्ट्री की शिकायतों के बाद प्रस्तावित किया गया था।



# एच-1बी वीजा क्या है जिस पर पीएम के एलान से रीगन सेंटर में गूंज उठी तालियां

**नई दिल्ली ।**

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वाशिंगटन स्थित रीगन सेंटर में प्रवासी भारतीयों को संबोधित करते हुए भारत की उपलब्धियों को गिनाया। पीएम मोदी ने कहा कि यह फैसला लिया गया है कि एच-1बी वीजा को रिन्यू करने के लिए आपको अमेरिका से बाहर नहीं जाना पड़ेगा। अमेरिका में रहते हुए ही अब एच-1बी वीजा रिन्यू हो जाएगा। प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत इस साल सिएटल में एक नया वाणिज्य दूतावास खोलने जा रहा है। इसके अलावा अमेरिका के दो और शहरों में भारतीय वाणिज्य दूतावास खोले जाएंगे। जहां एच-1बी वीजा के नवीकरण के लिए स्टाम्पिंग की सुविधा मिलेगी। पीएम मोदी के इस एलान के बाद रोनाल्ड रीगन सेंटर में तालियां गूंज उठीं।

### एच-1बी वीजा का नवीकरण अब अमेरिका में रहते हुए ही किया जा सकेगा

भारतीय प्रधानमंत्री ने एच-1बी वीजा पर जो एलान किया है उसका प्रभाव में आना अमेरिका में रह रहे भारतीय मूल के लोगों के लिए बड़ी राहत है। दरअसल एच-1बी वीजा पर नए अमेरिकी नियमों के हिसाब से अब वहां रहने वाले भारतीय मूल के लोगों को नवीकरण के समय स्टाम्पिंग के लिए भारत आने की जरूरत नहीं रहेगी। वहीं अमेरिका में रहते हुए इसकी स्टाम्पिंग करवा सकेंगे। पीएम ने कहा, अब यह निर्णय लिया गया है कि एच-1बी वीजा नवीनीकरण अमेरिका में ही किया जा सकता है। अमेरिकी सरकार के इस फैसले से भारतीयों के लिए अमेरिका में रहना और काम करना पहले की तुलना में आसान हो जाएगा। यही कारण है कि पीएम मोदी की इस घोषणा के बाद रीगन सेंटर में मौजूद लोग खुशी से झूम उठे।

### क्या है एच-1बी वीजा

बता दें कि अमेरिका की सरकार हर साल विभिन्न कंपनियों को 65-85 हजार एच-1बी वीजा उपलब्ध कराती है। जिनकी मदद से कंपनियां विदेशों से स्किल्ड कामगारों को नौकरी दे सकती हैं। इनके अतिरिक्त एडवांस डिग्रीधारकों के लिए अमेरिकी सरकार की ओर से 20 हजार अतिरिक्त वीजा कंपनियों को दिए जाते हैं। यह वीजा 3 साल के लिए मान्य होता है और इसे अगले तीन सालों के लिए रिन्यू कराया जा सकता है। एच-1बी वीजा का इस्तेमाल करने वाली कंपनियों में इंफोसिस, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज, अमेजन, अल्फाबेट और मेटा जैसी बड़ी-बड़ी कंपनियां शामिल हैं।

### एच-1बी वीजा के लिए कौन पात्र है

एच-1बी वीजा नियोक्ता प्रायोजित होता है और धारक को गैर-आव्रजक का दर्जा देता है। यह अस्थायी है, आमतौर पर तीन साल तक मान्य रहता है।

नियोक्ता को कर्मचारी की ओर से वीजा के लिए आवेदन करना होता है, उसे यह साबित करना होता है कि उनके व्यवसाय और स्थिति के लिए विशेष ज्ञान और कौशल की आवश्यकता है।

इंजीनियरिंग, जीव विज्ञान, भौतिक विज्ञान, गणित और बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन से जुड़े व्यवसायों को आमतौर पर एच-1 बी वीजा दिया जाता है

यह एक अस्थायी वीजा है, इसलिए हमेशा इस बात की अनिश्चितता रहती है कि आपका नियोक्ता इसे नवीनीकृत करेगा या नहीं। अब तक नवीनीकरण के लिए स्टॉम्पिंग के लिए वीजा धारकों को भारत आना पड़ता था। यही कारण है कि अमेरिका में भारतीय पेशेवरों के लिए यह तनाव का एक बड़ा कारण बना रहता था।

### कैसे नए वीजा नियमों से भारतीयों को ही होगा सबसे ज्यादा फायदा

जानकारों के अनुसार अमेरिका अभी पायलट प्रोजेक्ट के तहत एच-1बी वीजाधारकों को राहत देने जा रहा है। आने वाले सालों में इस सेवा में विस्तार किया जा सकता है। अमेरिकी सरकार की इस योजना से सबसे ज्यादा भारतीयों को फायदा होगा क्योंकि एच-1बी वीजा लेकर अमेरिका में काम करने वाले लोगों में सबसे ज्यादा तादाद भारतीयों की ही है। वित्तीय वर्ष 2022 में अमेरिका सरकार की ओर से आंकड़ों के अनुसार वहां के कुल एच-1बी वीजाधारकों में से 73 प्रतिशत यानी लगभग 4,42,000 वीजा भारतीयों मूल के लोगों को ही जारी किए गए हैं। हालांकि ये भी खबरें आई थी कि अमेरिकी विदेश विभाग इस प्रोजेक्ट में बदलाव भी कर सकता है। लेकिन अब रीगन सेंटर में पीएम मोदी के एलान के बाद यह तय हो गया है कि एच-1बी वीजाधारकों को अब राहत मिलेगी।

# पेट्रोल-डीजल की कीमतों में बदलाव नहीं, राजस्थान और मध्यप्रदेश सहित 16 राज्यों में पेट्रोल 100 रुपए लीटर के ऊपर

**नई दिल्ली।**

पेट्रोल-डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। फिलहाल दिल्ली में पेट्रोल 96.72 रुपए लीटर है तो डीजल 89.62 रुपए लीटर के हिसाब से बिक रहा है। वहीं मुंबई में पेट्रोल 106.31 रुपए और डीजल 94.27 रुपए प्रति लीटर मिल रहा है। देश के 16 राज्यों में पेट्रोल 100 रुपए लीटर के ऊपर बना हुआ है।

**साल से ज्यादा समय से नहीं बदले पेट्रोल-डीजल के दाम** - आखिरी बार 21 मई 2022 में पेट्रोल-डीजल की कीमतों में बदलाव किया गया था। तब पेट्रोल पर 8 रुपए और डीजल पर 6 रुपए प्रति लीटर उत्पाद शुल्क घटाया गया था। इससे पेट्रोल और डीजल के दाम 9.5 रुपए और 7 रुपए कम हो गए थे। हालांकि इसी महीने 10 जून को पंजाब सरकार ने पेट्रोल वैट दर में करीब 1.08प्रतिशत की बढ़ोतरी की गई है। इससे पेट्रोल प्रति लीटर 92 पैसे प्रति लीटर महंगा हो गया। जबकि डीजल वैट दर में 1.13प्रतिशत बढ़ोतरी होने से यह 90 पैसे प्रति लीटर महंगा हो गया। वहीं जुलाई 2022 में, महाराष्ट्र सरकार ने पेट्रोल और डीजल पर 5 रुपए और 3 रुपए प्रति लीटर की कटौती की थी।

**16 राज्यों में पेट्रोल 100 के ऊपर** - देश के 16 राज्यों में पेट्रोल 100 रुपए प्रति लीटर के ऊपर है। मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र, कर्नाटक, मणिपुर, तेलंगाना, पंजाब, झारखंड, सिक्किम, ओडिशा, केरल, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल, छत्तीसगढ़ और राजस्थान के सभी जिलों में पेट्रोल 100 रुपए के ऊपर बिक रहा है। वहीं डीजल भी ओडिशा, राजस्थान और मध्य प्रदेश में 100 रुपए से ऊपर है।

**राजस्थान में सबसे महंगा पेट्रोल-डीजल** - भारत में सबसे महंगा फ्यूल राजस्थान के श्रीगंगानगर में बिक रहा है। यहां एक लीटर पेट्रोल की कीमत 113.30 रुपए प्रति लीटर और डीजल की कीमत 98.07 रुपए प्रति लीटर पर पहुंच गई है। वहीं महाराष्ट्र के परभणी में पेट्रोल 109.26 रुपए प्रति लीटर और डीजल 95.66 रुपए प्रति लीटर बिक रहा है। वहीं पोर्ट ब्लेयर में सबसे सस्ता पेट्रोल-डीजल बिक रहा है। यहां पेट्रोल की कीमत 84.10 रुपए प्रति लीटर और डीजल का भाव 79.74 रुपए प्रति लीटर है।

# 2000 के 72प्रतिशत नोट बैंकों में वापस आए: इनकी कुल वैल्यू 2.62 लाख करोड़, 30 सितंबर तक बदल या जमा कर सकेंगे नोट

**नई दिल्ली।**

आरबीआई की ओर से 2000 रुपए के नोट वापस लेने के ऐलान के बाद 2000 रुपए के 72प्रतिशत नोट बैंकों में जमा हो चुके हैं या बदले जा चुके हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार इन नोटों की कुल कीमत 2.62 लाख करोड़ रुपए है। आरबीआई ने 19 मई को नोट वापस लेने की घोषणा करते हुए बताया था कि 31 मार्च तक 2,000 रुपए के नोटों का कुल मूल्य 3.62 लाख करोड़ रुपए था।

### 30 सितंबर तक बदलने या अकाउंट में जमा करने हैं नोट

आरबीआई ने 30 सितंबर तक 2000 के नोट बैंकों में बदलने या अकाउंट में जमा करने को कहा है, लेकिन यह भी कहा है कि यह इसके बाद भी लीगल रहेगा। ऐसा सिर्फ लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए है, ताकि वे यह नोट बैंकों को वापस करें।

### नोट बदलने के लिए डॉक्यूमेंट की जरूरत नहीं

सरकार द्वारा जारी गाइडलाइन के अनुसार बैंक में नोट बदलने के लिए किसी तरह के कोई डॉक्यूमेंट नहीं देने होंगे। एक बार में 20,000 की सीमा तक 2000 के नोट बदलवा यानी दूसरे डिनॉमिनेशन में एक्सचेंज करवा सकते हैं। वहीं अगर आपका अकाउंट है तो आप कितने भी 2000 के नोट डिपॉजिट (अकाउंट में जमा) कर सकते हैं।

### 30 सितंबर तक नोट जमा नहीं किए तो क्या होगा

लेन-देन के लिए 2000 के नोटों का इस्तेमाल जारी रख सकते हैं और उन्हें पेमेंट के रूप में रिसीव भी कर सकते हैं। हालांकि आरबीआई ने 30 सितंबर 2023 तक या उससे पहले इन बैंक नोटों को जमा करने या बदलने की सलाह दी है।

### 2016 में आया था 2000 का नोट

2 हजार का नोट नवंबर 2016 में मार्केट में आया था। तब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 500 और 1000 के नोट बंद कर दिए थे। इसकी जगह नए पैटर्न में 500 का नया नोट और 2000 का नोट जारी किया गया था। आरबीआई साल 2018-19 से 2000 के नोटों की छपाई बंद कर चुका है।

# एयरलाइन को फिर से उड़ान भरने के लिए चाहिए 425 करोड़ रुपये, दावा- कर्जदाताओं की मंजूरी का है इंतजार

**नई दिल्ली ।**

गो फर्स्ट के समाधान पेशेवर शैलेंद्र अजमेरा ने एयरलाइंस फाइनेंसरों से अंतरिम वित्त में 425 करोड़ रुपये की मांग की है, ताकि एक पुनरुद्धार योजना बनाई जा सके और एयरलाइन का परिचालन फिर से शुरू करने में मदद मिल सके। बता दें कि गो फर्स्ट के दिवालिया मामले में शैलेंद्र अजमेरा को समाधान पेशेवर (आरपी) के रूप में नियुक्त किया गया है। संकट में फंसी विमानन कंपनी के कर्जदाताओं की समिति (सीओसी) ने यह फैसला किया है। ऋणदाताओं ने उन्हें गो फर्स्ट के लिए आरपी (समाधान पेशवर) बनाने के लिए एनसीएलटी से मंजूरी ली है। सूत्रों ने हवाले से मीडिया रिपोर्ट्स में दावा किया गया है कि भविष्य में विमानों के लिए दुरुस्त इंजनों की उपलब्धता और टिकट रद्द होने जैसी कुछ आकस्मिकताओं के आधार पर वित्तपोषण की जरूरत और बढ़ सकती है। बताया गया है कि सप्ताह की शुरुआत में हुई एक बैठक में

गो फर्स्ट के लेनदारों की समिति के समक्ष वित्त पोषण से जुड़ा यह प्रस्ताव रखा गया।

**एयरलाइन के कर्जदाताओं की समिति में ये बैंक शामिल** - बता दें कि गो फर्स्ट के कर्जदाताओं की समिति में सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, बैंक ऑफ बड़ौदा, आईडीबीआई बैंक और ड्यूश बैंक शामिल हैं। अजमेरा जो कर्जदाताओं की समति की ओर से समर्थित है ने अब तक इस मामले में आधिकारिक तौर पर कोई टिप्पणी नहीं है। सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया समेत अन्य बैंकों ने भी इस पर फिलहाल कोई टिप्पणी नहीं की है। गो फर्स्ट को देश के विमानन क्षेत्र के नियामक नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (डीजीसीए) से एयरलाइन का परिचालन फिर से शुरू करने के लिए अपनी मंजूरी लेनी है। पर यह मंजूरी एयरलाइन के लिए वित्तपोषण की उपलब्धता सुनिश्चित होने के बाद ही मिल पाएगी। गो फर्स्ट को फिर से परिचालन शुरू करने के लिए नियामक की सहमति हासिल करने से पहले लेनदारों से वित्तपोषण प्रस्ताव पर मंजूरी लेना है। मीडिया रिपोर्ट्स में दावा किया गया है कि एयरलाइंस के लेनदारों ने वित्तपोषण के लिए अपनी सैद्धांतिक मंजूरी दे दी है, जबकि कुछ लेनदारों का कहना है कि वे अंतरिम वित्त प्रस्ताव को मंजूरी देने से पहले विमानन नियामक से स्पष्टता हासिल करने का इंतजार कर रहे हैं। बता दें गो फर्स्ट ने दिवाला व ऋणशोधन अक्षमता संहिता (आईबीसी) की धारा 10 के तहत दिवाला प्रक्रिया के लिए याचिका दायर की है, जो किसी कंपनी को कर्ज समाधान के लिए स्वेच्छा से अदालती प्रक्रिया में पेश होने की अनुमति देता है।

## भारत में अमेजन-गूगल 2.9 लाख करोड़ का निवेश करेंगी

# गुजरात में ग्लोबल सेंटर बनाएगी गूगल; अमेजन देगी ज्यादा नौकरियां, छोटे बिजनेस को सपोर्ट करेगी

**वॉशिंगटन।**

गूगल भारत में डिजिटाइजेशन के लिए 10 बिलियन डॉलर (करीब 82 हजार करोड़ रुपए) का निवेश करेगी। गूगल के सीईओ सुंदर पिचाई ने शुक्रवार को प्रधानमंत्री मोदी से मुलाकात के बाद यह जानकारी दी। वहीं, अमेजन के सीईओ ने भी पीएम से मिलने के बाद भारत में 26 बिलियन डॉलर (करीब 2.1 लाख करोड़ रुपए) के निवेश की बात कही।

सुंदर पिचाई ने कहा, प्रधानमंत्री से मिलना मेरे लिए सम्मान की बात है। गूगल भारत के डिजिटलीकरण के लिए 10 अरब डॉलर का निवेश करेगा। गुजरात में अपना ग्लोबल फिनटेक ऑपरेशन सेंटर खोलने की घोषणा कर रहे हैं।

दोनों कंपनी के इन इन्वेस्टमेंट्स का उद्देश्य डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन को बढ़ावा देना, लोकल लैंग्वेज कंटेंट को प्रमोट करना, रोजगार के अवसर पैदा करना और ग्लोबल लेवल पर भारतीय प्रोडक्ट्स के एक्सपोर्ट को बढ़ावा देना है।

पीएमओ ने ट्वीट कर बताया कि पीएम और पिचाई के बीच आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, फिनटेक और रिसर्च एंड डेवलपमेंट को बढ़ावा देने के उपायों पर चर्चा हुई।

### भारत में अमेजन 26 बिलियन डॉलर निवेश करेगा

अमेजन के सीईओ एंडी जैसी ने भी प्रधानमंत्री मोदी से मुलाकात की। मीटिंग के बाद उन्होंने कहा, अमेजन भारत में दुनिया के सबसे बड़े निवेशकों में से एक है। हमने अब तक 11 बिलियन डॉलर का निवेश किया है और 15 बिलियन डॉलर का और निवेश करने का इरादा है, जिससे टोटल राशि 26 बिलियन हो जाएगी।

उन्होंने कहा कि इसके जरिए कंपनी अधिक नौकरियों पैदा करने, अधिक छोटे और मीडियम बिजनेस को डिजिटल बनाने में मदद करेगी। इसके साथ ही भारतीय कंपनियों के प्रोडक्ट्स को दुनिया भर में निर्यात करने में मदद करेंगे।

### पिचाई ने डिजिटल इंडिया के लिए पीएम के नजरिए की सराहना की

सुंदर पिचाई ने डिजिटल इंडिया के लिए

प्रधानमंत्री मोदी के नजरिया की सराहना की। उन्होंने कहा, डिजिटल इंडिया के लिए प्रधानमंत्री का दृष्टिकोण उनके समय से कहीं आगे है। मैं अब इसे एक ब्लूप्रिंट के रूप में देखता हूं, जिसे अन्य देश करना चाह रहे हैं।

### अधिक भारतीय भाषाओं को सपोर्ट करेगा बार्ड

पिचाई ने कहा कि हम बहुत जल्द बार्ड में और अधिक भारतीय भाषाओं का सपोर्ट पेश करने वाले हैं। बार्ड गूगल का एआई चैटबॉट है, जिसे कंपनी ने गूगल 2023 इवेंट के दौरान भारत सहित 180 देशों में लॉन्च किया है।

गूगल भारत में एक सिंगल यूनिफाइड एआई मॉडल बनाना चाहती है। यह 100 से ज्यादा भारतीय भाषाओं को हैंडल करने में सक्षम होगा। यह कंपनी के ग्लोबल प्रयास का हिस्सा है। कंपनी दुनिया में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली 1000 भाषाओं को ऑनलाइन लाना चाहती है। इस तरह लोगों को अपनी पसंदीदा भाषा में जानकारी मिलेगी। कंपनी आईटी मद्रास में रिस्पॉन्सिबल एआई के लिए एक नए सेंटर को भी सपोर्ट कर रही है।

### गूगल ने जुलाई 2020 में 10 बिलियन डॉलर के निवेश का ऐलान किया था

जुलाई 2020 में गूगल ने अगले पांच से सात सालों में भारत में 10 बिलियन डॉलर निवेश करने के प्लान की अनाउंसमेंट की थी। इसके अलावा पिछले साल दिसंबर में पिचाई ने घोषणा की थी कि गूगल अपने इंडिया डिजिटाइजेशन फंड का एक हिस्सा भारतीय स्टार्टअप्स में लगाएगा। कंपनी ने यह भी कहा था कि इस फंड में से 300 मिलियन डॉलर की एक-चौथाई राशि उन संस्थाओं में निवेश की जाएगी, जिनका नेतृत्व महिलाएं करती हैं।

### एलन मस्क से भी मिले थे प्रधानमंत्री मोदी

इससे पहले 21 जून को प्रधानमंत्री मोदी और टेस्ला के सीईओ एलन मस्क की मुलाकात हुई थी। मीटिंग के बाद मस्क ने कहा था, मैं भारत के भविष्य को लेकर उत्साहित हूं। मैं मोदी का फैन हूं। यह एक शानदार मुलाकात थी और मैं उन्हें काफी पसंद करता हूं।

टेस्ला के भारत आने की टाइमलाइन के बारे में पूछे जाने पर मस्क ने कहा, मुझे विश्वास है कि टेस्ला जल्द भारत में होगी। वो अगले साल यानी 2024 में भारत भी आने का प्लान कर रहे हैं।

प्रधानमंत्री मोदी ने मस्क से मुलाकात के बाद तस्वीर ट्वीट करते हुए लिखा था, आज आपसे शानदार मुलाकात हुई एलन मस्क। हमने ऊर्जा से लेकर आध्यात्मिकता तक के इश्यूज पर बातचीत की। मीटिंग से पहले कयास लगाए जा रहे थे कि एलन मस्क और पीएम मोदी मुलाकात के दौरान भारत में टेस्ला की एंट्री पर बात कर सकते हैं।

# सीता के किरदार में कंगना को देखना चाहते हैं सुनील लहरी

**नई दिल्ली (ईएमएस)।** डायरेक्टर ओम राउत की फिल्म आदिपुरुष को लेकर भले ही घमासान मचा हुआ है। लेकिन अगली फिल्म रामायन पर ही बनने वाली है। आने वाली फिल्म पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए रामानंद सागर की रामायन में लक्ष्मण का किरदार करने वाले सुनील लहरी ने बताया कि कंगना रनौत का सीता के लिए बहुत बढिया किरदार है। ऐसे में अब कंगना रनोट को लेकर सुनील लहरी ने जो कहा उस बात को लेकर खास उम्मीद है। बता दें कि कंगना रनोट अपनी आने वाली फिल्म द इनकार्नेशन ऑफ सीता में सीता का किरदार निभाती नजर आएंगी। हाल ही सुनील लहरी ने एक इंटरव्यू में कहा कि सीता का किरदार निभाने के मामले में आलिया भट्ट से भी कोई खास उम्मीद नहीं है, लेकिन मुझे कंगना रनोट से पूरी उम्मीद है कि वह आदिपुरुष जैसी गलती अपनी फिल्म



में नहीं करेंगी। मेरे हिसाब से वह कंगना, सीता के किरदार को बहुत ही अच्छे से पेश करेंगी। साथ ही सुनील ने यह भी चेतावनी दी, कि लोग उनके संस्कृति के साथ छेड़छाड़ ना करें। वहीं सुनील लहरी के बयान के बाद कंगना रनोट ने भी अपना रिएक्शन दिया है। उन्होंने अपनी इंस्टा स्टोरी पर शेयर किया और हाथ जोड़ने वाले कई इमोजी बनाया है। उन्होंने सुनील को टैग किया है। गौरतलब है कि कंगना निर्देशक अलौकिक देसाई के निर्देशन में बन रही फिल्म द इनकार्नेशन ऑफ सीता में काम कर रही हैं। इस फिल्म में वह सीता का किरदार निभा रही हैं। रामायन पर आधारित इस फिल्म का ऐलान साल 2021 में किया गया था। फिल्म की पटकथा केवी विजयेंद्र प्रसाद ने लिखी है।

# लस्ट स्टोरीज 2 का ट्रेलर हुआ लांच, फिल्म में चार दिलचस्प कहानियां शामिल

**मुंबई (ईएमएस)।** हाल ही में लस्ट स्टोरिज 2 का ट्रेलर जारी हो गया है। पहले भाग की तरह इसमें भी कुछ रोचक कहानियों को दर्शकों के सामने लाया जा रहा है। बताया जा हा है कि दूसरे भाग में चार कहानियां हैं, जिनको चार नए निर्देशकों अमित रविंद्रनाथ शर्मा, कोंकणा सेन शर्मा, आर बाल्की और सुजॉय घोष ने निर्देशित किया है। अभिनेताओं में नीना गुप्ता, काजोल, अमृता सुभाष, अंगद बेदी, कुमुद मिश्रा, मृणाल ठाकुर, तमन्ना भाटिया, तिलोत्तमा शोम और विजय वर्मा शामिल हैं। टीजर से दर्शकों की दिलचस्पी जगाने के बाद लस्ट स्टोरीज 2 का ट्रेलर रिलीज हो गया है। यह एमी-नॉमिनेटेड एंथोलॉजी, लस्ट स्टोरीज का बहुप्रतीक्षित दूसरा संस्करण है। यह फिल्म हवस के कई रंगों को दिखाएगी। हालांकि लांच हुए ट्रेलर में कई हल्के-फुल्के पल दिखाए गए हैं, इसमें नीना गुप्ता के संवाद सबसे भारी हैं। वह सिर्फ डिलीवरी के साथ इसे पूरा करती है। दूसरा पहलू जिसने हमारा ध्यान खींचा वह था तमन्ना भाटिया और विजय वर्मा की जबरदस्त केमिस्ट्री को जो इसकी खास पहचान है। निर्देशक आर बाल्की ने लस्ट स्टोरीज के दूसरे एंथोलॉजी के बारे में बात करते हुए कहा, वासना स्वाभाविक है और एक रिश्ते में सबसे महत्वपूर्ण है। इसे पहचानना सभी के लिए महत्वपूर्ण है। मैं एक लस्ट स्टोरी



बनाना चाहता था जिसे एक परिवार एक साथ देख सके। जब परिवार प्रेम और वासना से बने होते हैं, तो वासना की कहानी को हमेशा रोमांचक एकल दृश्य के लिए और परिवार के देखने के लिए असुविधाजनक क्यों होना चाहिए? नीना गुप्ता, मृणाल और अंगद ने इस सरल, प्रफुल्लित करने वाली कहानी को सबसे आकर्षक तरीके से जीवंत किया है। नेटफ्लिक्स, आरएसवीपी और फ्लाइंग यूनिकॉर्न जैसे भागीदारों के साथ इस प्रतिष्ठित एंथोलॉजी के लिए एक फिल्म बनाने के लिए मुझ पर भरोसा करना बेहद संतुष्टिदायक रहा है। मुझे उम्मीद है कि यह एक ऐसी कहानी है जो लोगों को पसंद आएगी। अमित रवींद्रनाथ शर्मा ने कहा कि जब नेटफ्लिक्स, रॉनी और आशी ने एमी नॉमिनेटेड एंथोलॉजी लस्ट स्टोरीज का हिस्सा बनने के लिए मुझसे संपर्क किया, तो मैंने तुरंत हां कर दी। काजोल और कुमुद मिश्रा जैसे अभिनेताओं के साथ काम करना वास्तव में एक असाधारण अनुभव था, ताकि दर्शकों के लिए वासना की इस जटिल और नुकीली दृष्टि को लाया जा सके।

# हॉट योगा है सनी लियोनी का फेवरेट

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर एक्ट्रेस सनी लियोनी ने अपना योगा रुटीन शेयर किया। बिग बॉस सीजन 5 में आने के बाद भारतीय शोबिज में अपनी जर्नी शुरू करने वाली एक्ट्रेस ने अपने योगा रुटीन के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि वह अपने फिटनेस प्रोग्राम में योग को शामिल करना पसंद करती हैं। यह सभी हानिकारक पदार्थों को दूर कर शरीर को साफ करने में मदद करता है। उन्होंने कहा, मैं हमेशा हॉट योगा को चुनती हूं। मुझे हॉट योगा पसंद है, इसका कारण यह है कि यह मेरी मांसपेशियों को मजबूत करने और



टोन करने के अलावा मेरे शरीर से हानिकारक पदार्थों को बाहर निकालता है। उन्होंने कहा, मौजूदा समय में न सिर्फ अपने बारे में सजग होना जरूरी है, बल्कि हमारे आस-पास की सभी चीजों और लोगों के प्रति सजग होना बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने माइंडफुलनेस के बारे में अपनी राय भी साझा की, जो योग से निकटता से जुड़ी हुई है, और बताया कि वर्तमान समय में यह कैसे महत्वपूर्ण है!

# फिल्म के प्रमोशन में जुटी अवनीत कौर

टीवी एक्ट्रेस अवनीत कौर एक्टर नवाजुद्दीन सिद्दीकी के साथ स्क्रीन शेयर करेंगी। उनकी अपमकिंग फिल्म टीकू वेड्स शेरू बहुत जल्द ही रिलीज होगी। इससे पहले ही वह फिल्म के प्रमोशन में जुट गई हैं। इसी बीच एक्ट्रेस को फिल्म का प्रमोशन करते हुए बांद्रा में स्पॉट किया गया।लुक की बात करें तो इस दौरान अवनीत कौर ब्लू और स्काइ ब्लू कलर के डॉटेड आउटफिट में नजर आईं। रिबन वाले क्रॉप टॉप के साथ एक्ट्रेस ने मैचिंग ट्राउजर टीम-अप किया। इस लुक को अवनीत ने न्यूड मेकअप और खुले बालों के साथ कंप्लीट किया है और ओवरऑल लुक में बेहद गॉर्जियस लग रही हैं। प्रमोशन के दौरान एक्ट्रेस कैमरे के सामने एक से बढ़कर एक पोज देती दिखीं। इतना ही नहीं अवनीत ने अपने को-स्टार नवाजुद्दीन के साथ भी पोज दिए। एक्ट्रेस की ये तस्वीरें अब इंटरनेट काफी वायरल हो रही हैं। वहीं बात करें अवनीत कौर की टीकू वेड्स शेरू पर की तो यह फिल्म कंगना रनौत के प्रोडक्शन में बनकर तैयार हुई है, जिसमें वह नवाजुद्दीन सिद्दीकी के साथ रोमांस करती नजर आएंगी। बता दें कि 21 वर्षीय अवनीत कौर इन दिनों अपनी डेब्यू फिल्म टीकू वेड्स शेरू को लेकर काफी चर्चा में बनी हुई हैं। इस फिल्म में वह पहली बार लीड एक्ट्रेस के तौर पर नजर आएंगी।

# रामायण को आधार बनाकर कई फिल्में

**– राम, प्रभास से पहले जितेंद्र बने थे राघव**

**मुंबई (ईएमएस)।** मनोरंजन की दुनिया में रामायण को आधार बनाकर कई फिल्में और टीवी शोज बने हैं। आपको उस फिल्म के बारे में बताते हैं, जो आदिपुरुष से 26 साल पहले आई थी और उसमें जितेंद्र ने भगवान राम की भूमिका निभाई थी। जानकारी के अनुसार, रामायण पर अलग अलग भाषाओं में 50 के करीब फिल्में बन चुकी हैं। इनमें हिंदी में 17 फिल्में रामायण को आधार मानकर बनी हैं। इन 17 में से 5 फिल्मों को लेकर कोई सही जानकारी नहीं है बाकी बची 11 फिल्मों में से 8 फिल्में हिट साबित हुई थीं। वहीं, 3 फिल्में बड़े पर्दे पर कोई कमाल नहीं दिखा सकी थीं। आदिपुरुष से पहले साल 1997 में फिल्म लवकुश रिलीज हुई थी।फिल्म लव कुश 25 जुलाई 1997 को रिलीज हुई थी। इस फिल्म का साउथ से एक बड़ा कनेक्शन है। फिल्म को वी। मधुसूदन राव ने निर्देशित किया था, जो तमिल फिल्म इंडस्ट्री के बड़े निर्देशक हैं। तेलुगु फिल्म इंडस्ट्री में उन्हें विक्ट्री मधुसदून राव के नाम से भी पहचाना जाता है।

हिंदी की उन्होंने 4 फिल्में निर्देशित की, जिसमें लव कुश उनकी आखिरी फिल्म थी। फिल्म में जितेंद्र ने प्रभु राम और जया प्रदा ने सीता मां का किरदार निभाया था। फिल्म में लव कुश के एंगल से कहानी को गढ़ा गया था। टीवी की दुनिया के राम यानी अरुण गोविल ने इस फिल्म में लक्ष्मण की भूमिका निभाई थी। दारा सिंह ने हनुमान और प्राण ने वाल्मिकी की भूमिका अदा की थी। फिल्म ने बड़े पर्दे पर औसत व्यवसाय किया था। बता दें, रामानंद सागर साल 1987 में टीवी सीरीज रामायण लेकर आए थे, जिसे खूब पसंद किया गया था। इसमें अरुण गोविल राम बने थे और दीपिका चिखलिया मां सीता की भूमिका में थीं। बता दें कि आदिपुरुष में ओम राउत ने दर्शकों को आकर्षित करने के लिए खूबसूरत विषय चुना था। प्रभास, कृति सेनन और सैफ अली खान जैसे सितारे लेकर कास्टिंग भी खास की लेकिन कहानी पर फोकस नहीं कर पाए। खूब हंगामे के बाद जब फिल्म दर्शकों के सामने आई तो लोगों को समझ ही नहीं आया कि रामायण को किस अंदाज में पेश किया गया है। यह कोई धार्मिक कहानी है या एक्शन ड्रामा? खैर, फिल्म के डायलॉग, वीएफएक्स और प्रजेंटेशन को लेकर बहस अभी जारी रहेगी।

# आनंद ने की धनुष के साथ अगली फिल्म की घोषणा

बालीवुड के फिल्म निमार्ता आनंद एल राय एक्टर धनुष के साथ अगली फिल्म की घोषणा कर दी है। फिल्म का नाम है तेरे इश्क में। आनंदअपनी फिल्म रांझणा की 10वीं सालगिरह मना रहे हैं। इस मौके पर उन्होंने धनुष के साथ अपनी अगली फिल्म बनाने की घोषणा की। साथ ही अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर उन्होंने इसका एक छोटा टीजर भी जारी किया। रांझणा की 10वीं सालगिरह पर की गई इस भव्य घोषणा पर आनंद एल राय ने कहा, धनुष के साथ हमारी अगली फिल्म तेरे इश्क में, का अनावरण करने के लिए इससे बेहतर दिन नहीं हो सकता। रांझणा मेरे दिल में एक विशेष स्थान रखती है और यह प्यार और आराधना जारी है। दुनिया भर के प्रशंसकों ने इस फिल्म को जो प्यार दिया वास्तव में दिल को छू लेने वाला है। लेखक हिमांशु शर्मा, गीतकार इरशाद कामिल और संगीत



उस्ताद एआर रहमान के साथ धनुष और आनंद एल राय की जोड़ी ने 2013 में रांझणा के साथ सिल्वर स्क्रीन पर जादू पैदा किया था। अब, एक दशक के बाद, पंचक तेरे इश्क में के साथ उस मंत्रमुग्ध करने वाले अनुभव को फिर से बनाने के लिए तैयार है।

# बवाल फिल्म से टीम को काफी उम्मीदें

**-जुलाई में अमेजन प्राइम पर होगी यह प्रदर्शित**

**मुंबई (ईएमएस)।** बालीवुड फिल्म निर्देशक नितेश तिवारी के निर्देशन में बनी बवाल फिल्म से टीम को काफी उम्मीदें हैं। इस फिल्म में एक्ट्रेस जान्हवी कपूर और वरुण धवन मुख्य भूमिका में हैं। गौरतलब है कि कुछ दिन पूर्व निमार्ता साजिद नाडियाडवाला ने कमर्शियल एंटरटेनर को अमेजन प्राइम वीडियो को बेच दिया था। उसी की पुष्टि करते हुए, अमेजॅन प्राइम वीडियो ने नाडियाडवालास के सहयोग से फिल्म का पहला लुक जारी किया है और साथ ही यह भी घोषणा की है कि फिल्म का प्रीमियर जुलाई 2023 में होगा। छोटे शहर के लड़के के लुक के साथ कैप्शन में लिखा है, हर प्रेम कहानी का अपना युद्ध होता है। प्राइम में कंटेंट लाइसेंसिंग के निदेशक मनीष मेंघानी ने कहा, प्राइम वीडियो देश के सबसे प्रसिद्ध निर्देशकों में से एक, नितेश तिवारी के प्यार बवाल के श्रम को 200 से अधिक देशों और क्षेत्रों में दर्शकों तक ले जाने के अवसर से पूरी तरह से खुश है। यह नाडियाडवाला ग्रैंडसन एंटरटेनमेंट की पहली फिल्म है जिसका विश्व स्तर पर सीधे प्राइम वीडियो पर प्रीमियर किया गया है, और हम साजिद को इस विशेष फिल्म के साथ हम पर भरोसा करने के लिए धन्यवाद देते हैं। यह सार्वभौमिक अपील के साथ एक असाधारण कहानी है, जो वरुण और जान्हवी द्वारा शानदार प्रदर्शन द्वारा संचालित है। सेट भारत के केंद्र में, मनोरंजक कथा दर्शकों को यूरोप के माध्यम से पहले कभी नहीं देखी गई यात्रा पर ले जाती है। हमारा मानना है कि एक फिल्म जो भारत में निहित है, लेकिन एक वैश्विक अपील है, न केवल भारत में बल्कि पूरे दुनिया में ग्राहकों तक पहुंचने की हकदार है।




हम इस खूबसूरत फिल्म का आनंद लेने के लिए प्राइम वीडियो दर्शकों का इंतजार नहीं कर सकते। निमार्ता साजिद नाडियाडवाला ने कहा, बवाल मेरे लिए एक बहुत ही खास फिल्म है, और मेरी सबसे महत्वाकांक्षी परियोजनाओं में से एक है। इस फिल्म का निर्माण करना एक परम आनंद की बात है, जिसे मेरे सबसे पसंदीदा फिल्म निमार्ता नितेश तिवारी ने निर्देशित किया है, जिसमें वरुण और जान्हवी अपना योगदान दे रहे हैं। मुझे इस पर बहुत गर्व है, और मैं इसे जुलाई में प्राइम वीडियो पर इसके विश्वव्यापी प्रीमियर की घोषणा करने के लिए रोमांचित हूं। मैं इस फिल्म की भौगोलिक बाधाओं को तोड़कर दर्शकों तक पहुंचने की संभावना से उत्साहित हूं। 200 से अधिक देशों और क्षेत्रों में एक साथ। यह कहानी एक भव्य विश्वव्यापी प्रीमियर की हकदार है और मुझे प्राइम वीडियो के साथ जुड़ने की खुशी है, जिसकी अविश्वसनीय वैश्विक पहुंच है। निर्देशक नितेश तिवारी ने कहा, तीन भारतीय स्थानों और पांच यूरोपीय देशों में शूट की गई, बवाल में एक आकर्षक कहानी, नाटकीय दृश्य और मुख्य प्रतिभा वरुण और जान्हवी के बीच बिल्कुल अद्भुत केमिस्ट्री है। मेरा मानना है कि प्राइम वीडियो पर विश्वव्यापी प्रीमियर हमें बवाल लेने में मदद करेगा। हमने इस फिल्म को अपने दर्शकों तक पहुंचाने के लिए बहुत जुनून और प्रतिबद्धता के साथ काम किया है और अब हम उनकी प्रतिक्रिया सुनने के लिए इंतजार नहीं कर सकते। बता दें कि साजिद नाडियाडवाला द्वारा निर्मित, फिल्म पर नवीनतम अपडेट यह है कि इसे जुलाई 2023 में विशेष रूप से अमेजॅन प्राइम वीडियो पर रिलीज किया जाएगा।

# मुझे शराब पीने की आदत थीः पूजा भट्ट

**- एक्ट्रेस ने बिग बॉस ओटीटी 2ः शो में किया बड़ा खुलासा**

**मुंबई (ईएमएस)।** विवादित रियलिटी शो बिग बॉस ओटीटी 2 में एक्ट्रेस पूजा भट्ट ने स्वयं यह खुलासा किया कि उन्हें शराब पीने की आदत थी, और इसलिए मैंने इसे सबके सामने माना और लत को छोड़ने का फैसला किया। फिल्म निमार्ता-एक्ट्रेस पूजा भट्ट ने बताया कि कैसे उन्होंने 44 साल की उम्र में शराब पीने की लत से छुटकारा पाया। पूजा को को-कंटेस्टेंट साइरस ब्रोचा से बात करते हुए देखा गया। उन्होंने बताया कि कैसे लोगों द्वारा उन्हें शराबी का लेबल दिया गया और उन्होंने कैसे इन सब से छुटकारा पाया। पूजा को यह कहते हुए सुना गया कि समाज पुरुषों को शराब पीने का लाइसेंस देता है और इस तरह वे खुले तौर



पर नशे की लत और शराब से उबरने के बारे में बात कर सकते हैं। महिलाएं खुले तौर पर शराब नहीं पीती हैं और इसलिए वे खुले तौर पर इसे छोड़ भी नहीं सकती हैं। उन्होंने कहा, औरतें खुलेआम नहीं पीती हैं और इसलिए वो लोगों के सामने शराब छोड़ने की बात नहीं करती हैं। मैं खुले तौर पर पीती थी, इसलिए जब मैंने सोचा कि अब मुझे शराब छोड़नी है, तो मुझे एहसास हुआ कि मुझे यह छिपकर क्यों करना चाहिए? लोग मुझे शराबी कहते थे। फिर मैंने कहा कि मैं ठीक हो रही शराबी हूं। बता दें बिग बॉस ओटीटी 2 जियो सिनेमा पर प्रसारित होता है।

बिग बॉस ओटीटी 2ः को शुरू हुए कुछ ही दिन हुए हैं और कंटेस्टेंट्स अपने जीवन के बारे में राज खोलने लगे हैं।

## सूडोकु नवताल- 6472

★☆☆☆☆ सरल

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 7 | 8 | | | | 2 | 6 | | 3 |
| | | | 4 | | | | | |
| 1 | 3 | 5 | | 8 | | | | |
| | 2 | | | 1 | | | 7 | 8 |
| | | | | | | | | |
| 6 | 7 | | | 9 | | | 2 | |
| | | | | 6 | | 5 | 9 | 2 |
| | | | | | 3 | | | |
| 2 | | 8 | 5 | | | | 6 | 1 |

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते .
- पहेली का केवल एक ही हल है.

### सूडोकु नवताल -6471 का हल

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 4 | 3 | 2 | 9 | 5 | 6 | 1 | 7 | 8 |
| 6 | 8 | 5 | 7 | 1 | 4 | 9 | 2 | 3 |
| 9 | 1 | 7 | 3 | 8 | 2 | 4 | 5 | 6 |
| 3 | 4 | 8 | 6 | 2 | 7 | 5 | 1 | 9 |
| 5 | 6 | 1 | 8 | 4 | 9 | 2 | 3 | 7 |
| 2 | 7 | 9 | 5 | 3 | 1 | 6 | 8 | 4 |
| 1 | 9 | 3 | 4 | 7 | 5 | 8 | 6 | 2 |
| 8 | 2 | 4 | 1 | 6 | 3 | 7 | 9 | 5 |
| 7 | 5 | 6 | 2 | 9 | 8 | 3 | 4 | 1 |

## शब्दजाल - 7219

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| श | रा | ज | क | ट | ई | ह | ट | झ | क | चि |
| अं | च | र | ठि | रिं | लै | ता | दि | शा | को | क |
| ग | र | ह | ना | दा | चि | सिं | बे | ला | ल | ना |
| ड़ | स | गा | ई | ल | क | आ | ह | ऊं | र | ह |
| ई | रा | र | ष | हा | मि | श | च | स | चा | ट |
| ह | ह | प | व | दा | ह | ना | त | उ | न | ई |
| म | ट | बु | अ | म | रा | ई | ह | त | ह | क |
| हं | जी | वा | उ | क | छ | सौ | न | रा | जू | ट |
| गा | थो | तें | ब | ह | ज | दा | ने | ई | र | द |
| ई | ल | प | का | रं | ट | ऐ | बें | न | रु | थो |
| त | ड़ | पा | ई | ट | ख | बौ | ख | ला | ह | ट |

*शब्द जाल में ऐसे 10 शब्द ढूंढिए जिनके अंत में 'ई' आता हो.शब्द ऊपर से नीचे एवं तिरछे भी हैं.*

अमराई, कठिनाई, सगाई, महंगाई, उतराई, आशनाई, उबकाई, ऊंचाई, अंगड़ाई, कटाई

### शब्दजाल - 7218 का हल

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प्र | अ | मे | बॉ | क्सा | इ | ट | मैं | र | प | गो |
| न | का | क | अ | भ्र | क | ने | ग | ति | मा | यू |
| डो | दा | र | ला | मा | ग | अं | नी | ह | प | रे |
| ज | लो | ल | का | को | न | स | ज | ह | लि | नि |
| त | अ | मा | र | न | य | मे | ह | तां | न | य |
| अ | ना | का | इ | व | प | ला | त | बा | र | म |
| ग | ही | लौ | मा | ट | अ | ला | को | मा | न | ग |
| र | रा | भा | ह | न | प | स | र | ल | वि | ला |
| क | न | बा | अ | अ | का | र | ण्ड | न | जू | दे |
| र | का | ति | मा | न | य | क | म | का | प | श |
| बां | र | ल | प | रु | स | स्क | त्ता | प | र | र |

Jagrutidaur.com, Bangalore

## अष्टयोग-6172

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | 7 | 1 | | | 4 |
| 2 | 39 | | 29 | 6 | 26 | |
| | 6 | 5 | | 3 | 2 | |
| 4 | 30 | | 27 | 1 | 31 | 6 |
| | 2 | | 4 | | | 7 |
| 6 | 30 | | 39 | 4 | 35 | 3 |
| | 5 | 4 | | | 1 | |

*प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है.खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं.गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी.सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.*

### अष्टयोग 6171 का हल

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 7 | 6 | 5 | 4 | 3 | 2 | 1 |
| 2 | 39 | 1 | 29 | 6 | 26 | 5 |
| 5 | 6 | 7 | 1 | 2 | 3 | 4 |
| 4 | 30 | 2 | 25 | 1 | 34 | 6 |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 |
| 6 | 30 | 6 | 39 | 4 | 35 | 3 |
| 3 | 5 | 4 | 6 | 7 | 1 | 2 |

Jagrutidaur.com, Bangalore

# 36 साल के हुए लियोनल मेसी; 17 वर्षों में नौ ट्रॉफी जीतने से चूके, फिर दो साल में जीत ली दुनिया

**नई दिल्ली ।**

बात 17 अक्तूबर 2004 की है। स्पेन में बार्सिलोना और एस्पेनयोल क्लब के बीच ला लिगा (स्पेन में फुटबॉल लीग का नाम) का मैच चल रहा था। मुकाबले के 82वें मिनट में दिग्गज खिलाड़ी डेको को सब्सीट्यूट करने का फैसला किया गया। उनके स्थान पर बार्सिलोना ने एक 17 वर्षीय फुटबॉलर को मैदान पर भेजा। उस समय किसी को हैरानी नहीं हुई। यह खिलाड़ी बार्सिलोना की जूनियर टीमों में तहलका मचा चुका था। सबको यह देखना था कि पहले सीनियर मैच में वह कैसा प्रदर्शन करता है। उसे कुछ ही मिनट खेलने को मिले, लेकिन सबने यह देख लिया कि फुटबॉल को एक नया सितारा मिल गया है। उसने बार्सिलोना क्लब के इतिहास में ही नहीं, बल्कि फुटबॉल इतिहास में अपने नाम को सुनहरे अक्षरों में लिख दिया। वह आज सर्वकालिक महान खिलाड़ियों में एक माना जाता है। उसका नाम लियोनल आंद्रेस मेसी है। मेसी शनिवार (24 जून) को 36 साल के हो गए।

**शुरुआत की कहानी** – अर्जेंटीना के महान क्रांतिकारी नेता चे ग्वेरा के शहर रोजारियो में जन्मे मेसी के फुटबॉलर बनने की कहानी भी रोचक है। जब मेसी 13 साल के थे तब बार्सिलोना की नजरों में आए। दरअसल, बार्सिलोना फुटबॉल क्लब प्रतिभावान खिलाड़ियों के लिए टैलेंट हंट प्रोग्राम चला रहा था। तभी मेसी के पिता को कहीं से इस बात की खबर लगी और उन्होंने बार्सिलोना एफसी से संपर्क किया। फुटबॉल क्लब बार्सिलोना के स्पोर्टिंग निदेशक कार्लेस रेक्सैक ने मेसी की प्रतिभा के चर्चे सुन रखे थे। उन्होंने लियोनेल मेसी के साथ इस शर्त पर कॉन्ट्रैक्ट साइन किया कि वह अपने परिवार के साथ स्पेन में ही आकर रहेंगे। सबसे खास बात यह रही कि मेसी के साथ करार साइन करते वक्त जब कार्लेस रेक्सैक को आस-पास कोई कागज नहीं मिला, तो उन्होंने मेसी से नैपकिन पर ही कॉन्ट्रैक्ट साइन करवा लिया।

**मेसी थे बौनेपन के शिकार** – परिवार की हालत उतनी अच्छी नहीं थी। उनके पिता कारखाने में काम करते थे और मां क्लीनर थी। मेसी बौनेपन के भी शिकार थे। हालत इतनी गंभीर थी कि इलाज के लिए पैसे नहीं थे। यहां तक कि जब वो ट्रायल देने गए थे तब भी लोगों ने उनका मजाक उड़ाया था। इसके बावजूद उन्होंने खुद को कम नहीं आंका और अपनी प्रतिभा के दम पर नाम कमाया।

**बार्सिलोना के लिए सबकुछ जीता** – मेसी को बार्सिलोना क्लब से बहुत प्यार है। वह 2004 से 2021 तक इस टीम के साथ खेले। 2021 में भी क्लब नहीं छोड़ना चाहते थे, लेकिन अंत समय में जब बार्सिलोना आर्थिक रूप से कोई रास्ता नहीं निकाल पाया तो मेसी को रोते हुए क्लब से बाहर जाना पड़ा। मेसी ने बार्सिलोना के लिए रिकॉर्ड का अंबार लगा दिया। उन्होंने 778 मैच में 672 गोल दागे। मेसी ने बार्सिलोना के साथ 34 प्रमुख ट्रॉफियां जीतीं, लेकिन उनके दिल में अंतरराष्ट्रीय खिताब नहीं जीतने की टीस थी।

## न्यूज ब्रीफ

### पाकिस्तान के वर्ल्ड-कप पार्टिसिपेशन पर फैसला जल्द: उनके विदेश मंत्रालय ने सुरक्षा व्यवस्था की जांच शुरू की; 5 अक्टूबर से होना है टूर्नामेंट

**नई दिल्ली ।** पाकिस्तानी विदेश मंत्रालय ने अपनी टीम के वर्ल्ड कप पार्टिसिपेशन की प्रोसेस शुरू कर दी है। पाकिस्तान सरकार ने गुरुवार को ऑफिशियल स्टेटमेंट जारी कर कहा कि उनकी टीम वर्ल्ड कप खेलने भारत जाएगी या नहीं इस बात का फैसला जल्द ही ले लिया जाएगा। पाकिस्तान के अलावा बाकी टीमें भारत जाकर वर्ल्ड कप खेलने को तैयार हैं, लेकिन पाकिस्तान का स्टैंड क्लीयर नहीं होने के चलते आईसीसी टूर्नामेंट का शेड्यूल जारी करने में देरी कर रहा है। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल को लिखित में कहा कि उनकी टीम अभी ड्राफ्ट शेड्यूल को कन्फर्म नहीं कर सकती। क्योंकि उन्हें भारत जाने के लिए सरकार से क्लीयरेंस नहीं मिली है। सरकार से अप्रूवल मिलते ही टीम का वर्ल्ड कप खेलना कन्फर्म हो पाएगा। बीसीसीआई ने पिछले दिनों वनडे वर्ल्ड कप का ड्राफ्ट शेड्यूल आईसीसी को शेयर किया था। पाकिस्तान को छोड़ बाकी देशों ने शेड्यूल पर सहमति जता दी है, लेकिन पाकिस्तान के अप्रूवल नहीं मिलने के कारण ऑफिशियल शेड्यूल जारी नहीं किया जा रहा। पाकिस्तान विदेश मंत्रालय की मुमताज जहरा बलोच ने मीडिया रिलीज में कहा, भारत के प्रधानमंत्री ने हमारे पीएम को वर्चुअल मीटिंग के लिए ऑफिशियल इन्विटेशन भेजा है। यह मीटिंग 4 जुलाई राजनीतिक मुद्दे को लेकर होगी। रिपोर्ट्स के अनुसार, 4 जुलाई की मीटिंग के आसपास पाकिस्तान टीम के वर्ल्ड कप पार्टिसिपेशन को लेकर फैसला आ सकता है। बलोच बोले, पाकिस्तान सरकार को लगता है कि क्रिकेट के बीच राजनीति को नहीं आना चाहिए। भारतीय टीम का पाकिस्तान में क्रिकेट नहीं खेलना निराशाजनक है। मंत्रालय पाकिस्तानी क्रिकेटर्स की सुरक्षा व्यवस्था की जांच कर रहा है। जांच पूरी होते ही पीसीबी को बता दिया जाएगा। बीसीसीआई के ड्राफ्ट शेड्यूल अनुसार, वनडे वर्ल्ड कप 5 अक्टूबर से इंग्लैंड और न्यूजीलैंड के बीच मैच से शुरू होगा। भारत और पाकिस्तान के बीच हाई-वोल्टेज मुकाबला 15 अक्टूबर को अहमदाबाद में खेला जाएगा। सभी 10 टीमें टूर्नामेंट में लीग स्टेज के 9-9 मैच खेलेगी। पाकिस्तान को इन 9 में से 2 मुकाबलों के वेन्यू को लेकर आपत्ति हुई थी। टीम ने अफगानिस्तान के खिलाफ चेन्नई और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ बेंगलुरु में नहीं खेलने की इच्छा जताई। उन्होंने दोनों वेन्यू के अदला-बदली की मांग की थी, लेकिन वेन्यू बदलने का कोई खास कारण नहीं मिलने पर बीसीसीआई और आईसीसी ने इसे खारिज कर दिया। राजनीतिक कारणों से भारत और पाकिस्तान की टीमों में 2012 के बाद से द्विपक्षीय सीरीज नहीं खेली गई। टीम इंडिया 2006 के बाद से पाकिस्तान नहीं गई। वहीं पाकिस्तान टीम भी 2016 में टी-20 वर्ल्ड कप के दौरान ही आखिरी बार भारत आई थी। दोनों टीमों के बीच आखिरी मुकाबला 2022 के टी-20 वर्ल्ड कप में खेला गया, जिसे भारत ने जीता था। 2016 में जब पाकिस्तान टीम वर्ल्ड कप खेलने भारत आई थी, तब भारत के खिलाफ उनके मैच का वेन्यू बदला गया था। 19 मार्च को धर्मशाला में मैच होना था, लेकिन भारत सरकार की ओर से कड़ी सुरक्षा का आश्वासन नहीं दिया गया। इस कारण मैच का वेन्यू ट्रांसफर कर कोलकाता कर दिया गया। ऐसे में पाकिस्तान सरकार इस बार सुरक्षा को लेकर पूरी तरह निश्चिंत रहना चाहती है। बेंगलुरु में 21 जून से साउथ एशियन फुटबॉल फेडरेशन चैंपियनशिप शुरू हुई।

### विमेंस एशेज... मैच का तीसरा दिन: टैमी ब्यूमोंट का शतक; लंच तक इंग्लैंड का स्कोर 308/3

**नई दिल्ली ।** इंग्लैंड के नॉटिंघम में ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड विमेंस टीम के बीच विमेंस एशेज का टेस्ट मैच

खेला जा रहा है। शनिवार को मैच के तीसरे दिन लंच तक इंग्लैंड ने तीन विकेट के नुकसान पर 308 बना लिए। इंग्लैंड की टैमी ब्यूमोंट (144) और सोफिया डंकली (7) क्रीज पर हैं। ऑस्ट्रेलिया की टीम पहली पारी में 473 में ऑलआउट हो गई थी। तीसरे दिन इंग्लैंड ने पहली पारी में 218/2 के स्कोर से आगे खेलना शुरू किया। तीसरे दिन की शुरुआत टैमी ब्यूमोंट (100) और नेट सीवर (41) ने की। इंग्लैंड को दिन का पहला झटका नेट सीवर के रूप में लगा। नेट सीवर 78 रन बनाकर ऑस्ट्रेलिया की एश्ले गार्डनर का शिकार बनी। गार्डनर ने उन्हें कप्तान एलिसा हिली के हाथों कैच कराया। मेंस एशेज शुरू होने के 52 साल बाद 1934 में विमेंस एशेज शुरू हुई। 2005 तक सीरीज कभी 3 तो कभी 8 साल के गैप में होती थी, तब ज्यादातर सीरीज में 3 मैच होते थे। लेकिन 2008 से मेंस एशेज के साथ ही विमेंस एशेज होने लगी और टेस्ट मैच की संख्या को एक पर निर्धारित कर दिया। दोनों के बीच अब तक 25 सीरीज हुई हैं, 6 बार इंग्लैंड और 8 बार ऑस्ट्रेलिया को जीत मिली। बाकी सीरीज ड्रॉ रहीं।

### पेसर्स की गोल्डन जनरेशन पीछे छूटी, तैयार करने होंगे युवा

# सिराज को छोड़ बाकी तेज गेंदबाजों की उम्र 30 से ज्यादा

**नई दिल्ली ।**

भारत दो बार आईसीसी वर्ल्ड टेस्ट चैम्पियनशिप का फाइनल हार चुका है। हालांकि, इसके बावजूद शायद ही कोई इस बात से इंकार कर पाएगा कि हमने चैम्पियनशिप के दोनों साइकल में सबसे बेहतरीन प्रदर्शन किया। 2018 से 2022 के दौरान हमने न सिर्फ ऑस्ट्रेलिया को ऑस्ट्रेलिया में हराया बल्कि इंग्लैंड में 2-2 से सीरीज ड्रॉ की। भारत ने विदेशी दौरों पर जीतने की आदत डाली। कोहली की कप्तानी में टेस्ट में भारतीय तेज गेंदबाजी में क्रांति आई। इस दौरान हमारे पास ऐसे पेसर थे, जो विरोधी को उनके मैदान पर आउट करने की काबिलियत रखते थे। 2018 से 2022 के बीच हमारे पेसर्स ने 23.96 की औसत से कुल 506 विकेट लिए। इस दौरान टीम का औसत अन्य टीमों की तुलना में सर्वश्रेष्ठ रहा। हालांकि, बुमराह के चोटिल होने के बाद तेज गेंदबाजी की धार में कुछ कमी आई। साथ ही, इशांत उम्र के कारण सलेक्शन की सूची से बाहर हो गए। उमेश भी 35 साल के हो चुके हैं। शमी (32 साल) 2022 के बाद भारतीय पेस यूनिट के लीडर बन गए। उनका साथ सिराज (29) दे रहे हैं। ऐसे में भारतीय टीम को भविष्य के मद्देनजर तेज गेंदबाजों की नई टुकड़ी तैयार करनी होगी।

**2018 में बुमराह के डेब्यू से आया बदलाव** – आईपीएल और सफेद गेंद की क्रिकेट में कमाल दिखाने के बाद 2018 में जसप्रीत बुमराह को टेस्ट कैप मिली। उनके डेब्यू के साथ ही वो भारतीय गेंदबाजी यूनिट के लीडर बन गए। बुमराह ने खासकर विदेशी मैदानों पर अच्छा प्रदर्शन किया। बुमराह ने अपने टेस्ट करियर में 128 विकेट लिए हैं, जिसमें से 101 विकेट उन्होंने केवल (दक्षिण अफ्रीका, इंग्लैंड, न्यूजीलैंड, ऑस्ट्रेलिया) देशों में हासिल किए हैं। 2018-22 के बीच बुमराह ने ऑस्ट्रेलिया में 21.25 की औसत से 32 विकेट चटकाए। ऑस्ट्रेलिया में 10 या उससे ज्यादा विकेट लेने वाले गैर ऑस्ट्रेलियाई की तुलना में ये बेस्ट औसत है। औसत के मामले में केवल स्कॉट बोलैंड (12.21) और पैट कमिंस (18.89) उनसे बेहतर हैं। इशांत शर्मा 23.81 की औसत के साथ टॉप-10 की सूची में है। वहीं, इंग्लैंड में इस दौरान 30 से ज्यादा विकेट लेने वाले खिलाड़ियों की सूची में इंग्लिश गेंदबाजों के अलावा केवल बुमराह और शमी का नाम शामिल है। दक्षिण अफ्रीका में मोहम्मद शमी 18.96 की औसत से विकेट लेते हैं। वे उस देश में सबसे अच्छी औसत से विकेट लेने वाले गैर अफ्रीकी गेंदबाज हैं।

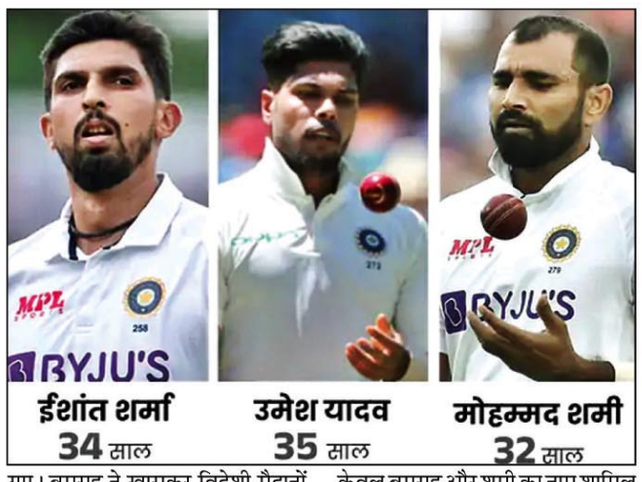


**रणजी में चार साल में 14 खिलाड़ियों ने 30+ विकेट लिए** – रणजी में 2019 से अब तक 27 साल की उम्र तक के 14 खिलाड़ियों ने 30 या उससे ज्यादा विकेट लिए हैं। इन खिलाड़ियों को भारतीय तेज गेंदबाजी के भविष्य के लिए तैयार किया जा सकता है। इस दौरान आकाश दीप ने सबसे ज्यादा विकेट (90) लिए हैं। 26 साल के आकाश आईपीएल में आरसीबी से खेलते हैं और लगातार 140 की रफ्तार से गेंद फेंक सकते हैं। 26 साल के आवेश खान और 27 साल के केवी शशिकांत ने 70 विकेट हासिल किए हैं। इशान पोरेल इस सूची में सबसे युवा (24 साल) हैं। उन्होंने इस दौरान 66 विकेट हासिल किए हैं। पोरेल अपनी सटीक गेंदबाजी और पिच से मिलने वाले अतिरिक्त उछाल के लिए जाने जाते हैं। ऐसे में भारत अगर लगातार इन्हें ग्रूम करता है तो बेहतर प्रदर्शन देखने को मिल सकता है। 54 विकेट लेने वाले 25 वर्षीय वैभव अरोड़ा ने आईपीएल में भी केकेआर से खेलते हुए सबका ध्यान आकर्षित किया था। हिमांशु सांगवान ने इस सूची में सबसे कम 19.13 की औसत के साथ 37 विकेट लिए हैं। वहीं, अतीत सेठ और सिमरजीत ने 35-35 विकेट हासिल किए हैं। सिमरजीत तेज गेंदबाजी करते हैं और सेठ एक बॉलिंग ऑलराउंडर हो सकते हैं। इन युवाओं को लाल गेंद के सेटअप में शामिल कर जल्द से जल्द तैयार किया जा सकता है। ऐसे भी कई गेंदबाज हैं, जो टीम के साथ टी20 और वनडे में रहे हैं। इन खिलाड़ियों को भी रेड बॉल सेटअप के लिए तैयार किया जा सकता है। हालांकि, ये युवा तेज गेंदबाज अभी तक अपनी छाप छोड़ने में असफल रहे हैं। प्रसिद्ध कृष्ण चोट के कारण टीम से बाहर हैं। उन्होंने वनडे में 14 मैच में 25 विकेट लिए हैं। अर्शदीप सिंह भारत की ओर से टी20 वर्ल्ड कप भी खेल चुके हैं। कुल 26 टी20 मैच में 41 विकेट ले चुके हैं। उमरान भारत के सबसे तेज गेंदबाज है। वो लगातार 145+ की रफ्तार से गेंद डालते हैं।

### वर्ल्ड -कप क्वालिफायर...ओमान 98 पर ऑलआउट

# हसरंगा को 5 विकेट, श्रीलंका 15 ओवर में जीता; स्कॉटलैंड ने यूएई को 111 रन से हराया

**बुलवायो।**

वनडे वर्ल्ड कप क्वालिफायर में श्रीलंका का अच्छा फॉर्म जारी है। टीम ने ग्रुप स्टेज में अपने दूसरे मैच में ओमान को 10 विकेट से हरा दिया। वनिंदु हसरंगा ने 5 विकेट लिए और ओमान 98 रन पर ही ऑलआउट हो गई। जवाब में श्रीलंका ने बगैर विकेट गंवाए 15 ओवर में ही टारगेट हासिल कर लिया। क्वालिफायर में शुक्रवार को एक अन्य मैच में स्कॉटलैंड ने यूएई को 111 रन से हरा दिया। इन नतीजों के बाद श्रीलंका और स्कॉटलैंड दोनों ग्रुप ए में 4-4 पॉइंट्स लेकर पहले और दूसरे नंबर पर पहुंच गई। जिम्बाब्वे में 18 जून से क्वालिफायर जारी है। 23 जून को बुलवायो के क्रीस स्पोर्ट्स क्लब में ओमान और श्रीलंका के बीच मैच हुआ। श्रीलंका ने टॉस जीतकर पहले बॉलिंग चुनी और ओमान को 20 रन के स्कोर पर ही 4 झटके दे दिए। कश्यप 1, आकीब इलियास 6, कप्तान जीशान मकसूद 1 और मोहम्मद नदीम 0 रन बनाकर पवेलियन लौट गए। जतिंदर सिंह ने फिर अयान खान के साथ 52 रन की पार्टनरशिप कर टीम को संभाला जतिंदर सिंह 21 रन बनाकर हसरंगा का शिकार हुए। हसरंगा के बॉलिंग पर आते ही ओमान के बैटर्स बिखर गए। अयान खान 41 रन बनाकर आउट हुए। उनके अलावा शोएब खान, जय ओडेड्रा और बिलाल खान खाता भी नहीं खोल सके। नसीम खुशीम एक रन बनाकर रन आउट हुए। 72 रन पर पांचवां विकेट गंवाने के बाद ओमान अपने स्कोर में 16 ही रन जोड़ सकी और सभी 6 विकेट गंवा दिए। हसरंगा ने

ओमान के आखिरी 6 में से 5 विकेट लिए। वहीं लहिरु कुमारा ने 3 और कसुन रजिथा ने एक विकेट लिया। 99 रन के टारगेट का पीछा करने उतरी श्रीलंका को ओपनर्स ने अच्छी शुरुआत दिलाई। दोनों ने 15 ओवर में बगैर विकेट गंवाए टारगेट हासिल कर लिया। पथुम निसांका ने 37 और दिमुथ करुणारत्ने ने 61 रन बनाए। 5 विकेट लेने वाले हसरंगा को प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया। उन्होंने टीम के पहले मैच में यूएई के खिलाफ 6 विकेट लिए थे। 11 विकेट के साथ वह टूर्नामेंट के टॉप विकेट टेकर हैं। शुक्रवार के एक अन्य मैच में स्कॉटलैंड ने यूएई को ग्रुप-बी के मैच में 111 रन से हरा दिया। बुलवायो एथलेटिक क्लब में टॉस हारकर पहले बैटिंग करने उतरी स्कॉटलैंड की शुरुआत खराब रही। टीम ने 48 रन पर ही 4 विकेट गंवा दिए। यहां से कप्तान रिची बैरिंगटन ने पारी संभाली। बैरिंगटन ने एक एंड संभाले रखा और साथी खिलाड़ियों के साथ पार्टनरशिप कर टीम का स्कोर 282 तक पहुंचा दिया। बैरिंगटन 127 रन बनाकर रनआउट हुए, मार्क वॉट 44 रन बनाकर नॉटआउट रहे। टीम से माइकल लीस्क ने 41, मैथ्यू क्रॉस ने 13, क्रिस ग्रीव्स ने 22 और टोमस मैकइंटोश ने 11 रन बनाए।

## 27 जून को जारी हो सकता है वर्ल्ड कप शेड्यूल: मुंबई में आईसीसी ने रखा इवेंट; इस दिन बाकी रहेंगे टूर्नामेंट के 100 दिन

**नई दिल्ली ।**

**भारत में इस साल अक्टूबर-नवंबर में होने वाले 2023 वनडे वर्ल्ड कप के शेड्यूल का ऐलान 27 जून को हो सकता है। आईसीसी ने इस दिन मुंबई में एक इवेंट रखा है। रिपोर्ट्स के अनुसार, इस दिन वर्ल्ड कप का शेड्यूल जारी होगा।**

टूर्नामेंट 5 अक्टूबर से होना है, ऐसे में इस दिन के बाद वर्ल्ड कप में सिर्फ 100 दिन बाकी रह जाएंगे। जिसे देखते हुए टूर्नामेंट शेड्यूल जारी करने के लिए यही दिन बेस्ट नजर आ रहा है। बता दें, बीसीसीआई ने इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल को काफी समय पहले वनडे वर्ल्ड के शेड्यूल का ड्राफ्ट भेज दिया है।

### पाकिस्तान ने वर्ल्डकप के 2 वेन्यू को बदलवाने की मांग की थी

पाकिस्तान 2023 वनडे वर्ल्ड कप में अपने दो लीग मैच की जगह बदलवाना चाहता था। लेकिन, रिपोर्ट्स के मुताबिक आईसीसी और बीसीसीआई ने उसकी ये मांग खारिज कर दी थी। मांग खारिज करने का आधार यह थे कि पाकिस्तान ने यह नहीं बताया था कि वह वेन्यू क्यों बदलवाना चाहता है।

पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल से जिन दो मैचों की जगह बदलने की गुजारिश की थी उनमें संभावित शेड्यूल के मुताबिक 20 अक्टूबर को बेंगलुरु में ऑस्ट्रेलिया से मुकाबला होना था। दूसरा मैच 23 अक्टूबर को अफगानिस्तान के साथ चेन्नई में होना था। पाकिस्तान बेंगलुरु में अफगानिस्तान और चेन्नई में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ खेलना चाहता था।

### पहली बार वर्ल्ड कप की फुल मेजबानी

भारत पहली बार पूरे वर्ल्ड कप की मेजबानी कर रहा है। इससे पहले, भारत अपने पड़ोसी देशों के साथ मिलकर इस मेगा टूर्नामेंट की मेजबानी कर चुका है।

### 10 टीमें ले रही हैं हिस्सा

टूर्नामेंट 46 दिनों तक चलेगा और तीन नॉकआउट सहित 48 मैच खेले जाएंगे। इस बार वर्ल्ड कप में 10 टीमें भाग लेंगी।

## ट्रायल छूट पर थोड़ी देर में जवाब देंगे प्रदर्शनकारी पहलवान: बजरंग बोले- गलत बातें फैलाई; खेलमंत्री ने कहा- विशेष छूट का फैसला हमारा नहीं

**पानीपत।**

भारतीय कुश्ती संघ के पूर्व अध्यक्ष बृजभूषण के खिलाफ प्रदर्शन करने वाले पहलवान विनेश फोगाट, बजरंग पूनिया, साक्षी मलिक, संगीता फोगाट और सत्यव्रत कादियान थोड़ी देर में लाइव होंगे। उन्होंने शाम 7 बजे का समय दिया था। इस बारे में बजरंग पूनिया ने ट्वीट कर लिखा, हमारे बारे में समाज में जो गलत बातें फैलाई जा रही हैं, कुछ चुनिंदा राजनेताओं द्वारा अपने निजी स्वार्थ के लिए, उसी के मद्देनजर लाइव बात करेंगे। प्रदर्शनकारी पहलवानों का ये कदम बबीता फोगाट और योगेश्वर दत्त के उन बयानों के बाद माना जा रहा है, जिसमें उन्हें कांग्रेस की शह और फेडरेशन में मनमानी करने के लिए प्रदर्शन करने का दावा किया गया था। इसके अलावा एशियाई गेम्स के लिए ट्रायल से छूट, प्रैक्टिस के

लिए अमेरिका जाने की मंजूरी पर भी पहलवान अपना पक्ष रखेंगे। वहीं पानीपत पहुंचे केंद्रीय खेल मंत्री अनुराग ठाकुर ने 6 पहलवानों को विशेष छूट दिए जाने के मामले में कहा कि यह फैसला इंडियन ओलिंपिक संघ की एडहॉक कमेटी का है। सभी निर्णय उन्हीं के हैं। भारत सरकार का इसमें कोई रोल नहीं है। इसी बीच विनेश फोगाट और योगेश्वर दत्त के बीच खूब जुबानी जंग चली। ये तब शुरू हुआ, जब विनेश-साक्षी समेत सभी प्रदर्शनकारी पहलवानों को ट्रायल से छूट दी गई। उन्हें एशियाई गेम्स के लिए सिर्फ ट्रायल विजेता से लड़ने की परमिशन दी गई। इस पर योगेश्वर दत्त ने कहा कि पहलवानों का धरना क्या इसी के लिए था। ये कुश्ती का काला दिन है। दूसरे पहलवानों को इसके खिलाफ आवाज उठानी चाहिए। इसके जवाब में विनेश ने कहा था कि योगेश्वर, बृजभूषण की थाली का झूठा खा रहा है। जांच कमेटी के मेंबर रहे दत्त ने यौन शोषण की शिकायत करने वाले पहलवानों के नाम बृजभूषण और मीडिया को लीक किए। जब जांच कमेटी में महिला पहलवान यौन शोषण की आपबीती सुना रही थी तो योगेश्वर घटिया तरीके से हंस रहा था। इसके जवाब में योगेश्वर फिर शुक्रवार रात को सोशल मीडिया पर आए और विनेश पर कई तरह के आरोप लगाए। यहां तक कहा कि विनेश के कोच उसके चाचा महावीर फोगाट हैं, लेकिन विनेश ने अपने पति के मामा ओमप्रकाश दहिया को कोच बताकर हरियाणा सरकार से 25-30 लाख की ग्रांट दिलाई। ये भी कहा कि इन्होंने मुझे धरना लीड करने को कहा।

### सरफराज को टेस्ट में मौका क्यों नहीं

# फर्स्ट-क्लास क्रिकेट में 80 का औसत; उनसे आधा एवरेज रखने वाले ईशान-ऋतुराज टीम में शामिल

**नई दिल्ली ।**

डब्लूटीसी फाइनल में हार के बाद अब 12 जुलाई से भारतीय टीम वेस्टइंडीज का दौरा करेगी। इस बीच शुक्रवार को भारत की टेस्ट और वनडे टीम की घोषणा हुई। टीम में टेस्ट के बेस्ट प्लेयर चेतेश्वर पुजारा ड्रॉप कर दिए गए। उनकी जगह मुंबई के ओपनर यशस्वी जायसवाल और महाराष्ट्र के ऋतुराज गायकवाड को मौका मिला। नंबर-3 पोजिशन के खाली होते हुए भी घरेलू क्रिकेट के टॉप बैटर सरफराज खान को टीम में शामिल नहीं किया गया। 25 साल के सरफराज पिछले 3 साल रणजी ट्रॉफी और घरेलू क्रिकेट में शानदार परफॉर्म कर रहे हैं। घरेलू क्रिकेट में उनका औसत 80 का है, जबकि 38 का औसत रखने वाले ईशान किशन और 42 के एवरेज वाले ऋतुराज को उनसे पहले टेस्ट टीम में मौका मिल गया। ऐसे में सवाल उठता है कि आखिर सरफराज खान को मौका क्यों नहीं दिया जा रहा

**फर्स्ट क्लास में शानदार प्रदर्शन** – सरफराज खान ने फर्स्ट क्लास क्रिकेट में शानदार प्रदर्शन किया है। उन्होंने पिछले रणजी सीजन के 6 मैचों में 92.66 की औसत से रन बनाए। पिछले तीन रणजी सीजन में भी उन्होंने शानदार परफॉर्म किया। 2019-20 के सीजन में सरफराज सिर्फ 6 मैच खेल कर सीजन के टॉप-5 स्कोरर रहे। वहीं, 2021-22 के सीजन में वह रणजी ट्रॉफी के टॉप स्कोरर बने। फर्स्ट क्लास क्रिकेट में अच्छा प्रदर्शन करने के चलते उन्हें इंडिया-ए में मौका मिला, लेकिन टीम इंडिया में शामिल होने के लिए उनका इंतजार लगातार बढ़ता ही जा रहा है।

**टेस्ट में ऋतुराज गायकवाड से हर पैमाने में आगे** – टेस्ट टीम में महाराष्ट्र के ओपनर ऋतुराज गायकवाड को शामिल किया गया, आकड़ों के हिसाब से सरफराज खान उनसे कई गुना बेहतर हैं। जहां ऋतुराज गायकवाड़ का फर्स्ट क्लास क्रिकेट में औसत 42.19 का है। वहीं, सरफराज का उनसे दोगुना 79.65 का है। दूसरी ओर दिसंबर 2022 में बांग्लादेश भेजी गई भारत की ए टीम में गायकवाड को मौका तक नहीं दिया गया था। इसके बावजूद उन्हें टीम में शामिल किया गया और सरफराज जैसे प्लेयर को जगह नहीं मिली।

**ईशान किशन तक को टीम में जगह** – टेस्ट टीम के रेगुलर विकेटकीपर ऋषभ पंत कार एक्सीडेंट में घायल होने के बाद क्रिकेट से दूर हैं। उनकी जगह केएस भरत को विकेटकीपिंग की जिम्मेदारी मिली। लेकिन भरत के साथ ही ईशान किशन को भी लगातार टीम में शामिल किया जा रहा है। सरफराज की तुलना में ईशान कहीं भी नहीं टिकते। ईशान ने 48 फर्स्ट क्लास मैचों में महज 38.76 की औसत से 2985 रन बनाए हैं। इनमें 6 शतक और 16 फिफ्टी शामिल हैं। उनकी तुलना में सरफराज खान 37 फर्स्ट क्लास मैचों में ही 13 शतक के सहारे 3505 रन बना चुके हैं। उनका औसत भी ईशान से दोगुना है।

**यशस्वी और सरफराज का प्रदर्शन एक जैसा, पर यशस्वी को ही जगह** – टेस्ट और वनडे टीम में गायकवाड के अलावा मुंबई के यशस्वी जायसवाल को भी मौका मिला है। यशस्वी घरेलू क्रिकेट के साथ आईपीएल में भी ओपनिंग करते हैं, उन्होंने दोनों ही जगह बेहतरीन परफॉर्म किया। पिछले रणजी सीजन के 5 मैचों में उन्होंने 315 रन बनाए। वह पिछले साल दिसंबर में इंडिया-ए की ओर से बांग्लादेश के खिलाफ टेस्ट खेलने भी गए थे, यहां उन्होंने एक शतक भी लगाया था। जायसवाल युवा हैं और उन्हें रणजी के साथ आईपीएल में अच्छे प्रदर्शन का फायदा मिला। इस कारण उन्हें वेस्टइंडीज दौरे पर टेस्ट टीम में जगह मिली। हालांकि घरेलू क्रिकेट के पिछले एक सीजन में जायसवाल ने जैसा प्रदर्शन किया, सरफराज खान पिछले 3 सीजन से उनसे बेहतर परफॉर्म कर रहे हैं। इसके बावजूद सरफराज को टीम में शामिल नहीं करना समझ से परे हैं।

**नंबर 3 की जगह खाली, सिलेक्ट हुए 4 ओपनर** – वेस्टइंडीज के खिलाफ खेलने वाली टेस्ट टीम में चेतेश्वर पुजारा का नाम नहीं है। इसका मतलब है कि टीम इंडिया में तीसरे नंबर की जगह खाली हो चुकी है। इसे भरने के लिए टेस्ट टीम रोहित शर्मा और शुभमन गिल के होते हुए ओपनर्स यशस्वी और गायकवाड को जगह मिली। टेस्ट टीम को मिडिल आर्डर बैटर की जरूरत है।

# बच्चों को सुलाने के आसान तरीके

आमतौर पर बच्चों को जब नींद नहीं आती है तो वो चिड़चिड़े हो जाते हैं। फिर उन्हें किसी भी तरह बहलाने फुसलाने की कोशिशें बेकार साबित होती हैं। उस समय उन्हें जरूरत होती हैं प्यारी सी लोरी के साथ शांत माहौल और मां के गोद की। लोरी सुनाकर बच्चों को सुलाने का चलन बरसों से चला आ रहा है। आज भी मां अपने बच्चों को लोरी सुनाकर ही सुलाती हैं। धीरे-धीरे और मीठे स्वर में गाई गई लोरी का बच्चे के दिमाग पर काफी असर होता है इसको सुनते-सुनते वे धीरे-धीरे मीठी नींद की ओर बढ़ने लगते हैं।

**लोरी ही जरूरी नहीं:** लोरी बच्चे को सुलाने का सबसे प्यारा तरीका समझा जाता है। लेकिन सिर्फ लोरी ही जरूरी नहीं है इसके साथ बच्चे के शरीर पर हल्की-हल्की थपकी और गोद में उसे धीरे-धीरे झुलाना भी काफी मददगार साबित होते हैं। और यह प्रक्रिया आपको तब तक करनी चाहिए जब तक बच्चा गहरी नींद में ना सो जाए।

**लोरी सुनते ही क्यों सो जाते हैं बच्चे:** लोरी की मीठी आवाज से बच्चे का ध्यान आस-पास की आवाजों से हटने लगता है। बच्चों को लगातार गोद में झुलाते रहने से उसकी नजर किसी भी चीज पर नहीं टिक पाती। और थोड़ी ही देर में उसकी आखों में नींद आने लगती है। और वह धीरे-धीरे अपनी आंखों को बंद करने लगता है।

**स्तनपान करते हुए:** आमतौर पर देखा जाता है कि बच्चें मां की गोद में स्तनपान करते हुए भी सो जाते हैं। ऐसे में उनके सिर पर धीरे-धीरे हाथ से सहलाएं जिससे उनकी आंखों में नींद आने लगे। और जब वह पूरी नींद में सो जाए तो उसे धीरे से बिस्तर पर लेटा दें।

**गोद में लेकर झुलाएं:** बच्चो को जब नींद आती है तो वो आपकी गोद में झुलना चाहते हैं। ऐसे में बच्चे को अपनी गोद में लेकर दाएं से बाएं झुलाएं। धीरे-धीरे उसकी आंखे भारी होने लगती है और वह थकवाट के कारण अपनी आंखे बंद करने पर मजबूर हो जाता है। ध्यान रहे कि ज्यादा से जोर से झुलाने पर बच्चा डर भी सकता है।

## मौजूद है टिंबकटू शहर...

**आपने** अक्सर किस्से कहानियों में टिंबकटू जैसी चीजों का नाम सुना होगा। आज हम आपको एक ऐसे शहर के बारे में बताने जा रहे हैं जिसका नाम टिंबकटू है। यह शहर अफ्रीका के माली देश में बसा हुआ है। यह शहर किसी समय एजुकेशन के लिहाज से यह बहुत आगे हुआ करता था। इसे 333 संतो का नगर भी कहा जाता था।अफ्रीका इस्लाम की पढ़ाई के लिए यह शहर एक केन्द्र हुआ करता था। आज भी इसका विश्वविद्यालय इस्लामिक पढ़ाई के लिए लोगों को अपनी ओर एटरेक्ट करता है। टिंबकटू माली के समृद्ध सांस्कृतिक और अध्यात्मिक विरासत वाला शहर है। इस शहर की अमूल्य विरासत के कारण संयुक्त राष्ट्र की सांस्कृतिक इकाई यूनेस्को ने इसे विश्व विरासत की सूची में दर्ज रखा है। यह शहर 5वीं सदी में बना था और लगभग 15वीं सदी तक व्यापारिक नगर से जाना जाने लगा था। यहां पर ऊंटो के सहारे सोने का बिजनेस चलता था। मुस्लिम व्यापारी इसी शहर से पश्चिमी अफ्रीका और यूरोप से सोने की मार्केटिंग करते थे। बदले में उन्हें अपनी जरूरतों की चीजें मिलती थी। कहा जाता है कि उस समय सोने की कीमत नमक के बराबर थी। लगभग 17वी सदी के आसपास अंटलानटिक महासागर के व्यापारिक नगर बनने के साथ ही यह अमीर विरासत वाला शहर पतन की ओर चल पड़ा।इस शहर में आवाजाही के साधन आसानी से नही मिलते लेकिन फिर भी यह आकर्षण का केन्द्र है। यहां 350 साल पुरानी जिंगरेबर मस्जिद आज भी यहां मौजूद है। लेकिन यह शहर आतंकी हमले की वजह से तबाही की कगार पर पहुंच गया। आतंक के साए से जूझ रहे टिंबकटू निवासी आज भी इसे बचाने की हर कोशिश कर रहे हैं।

## स्किन की रंगत पर भारी आदतें...

जहां स्किन का ध्यान रखना बहुत जरूरी होता है वहीं कहीं ऐसा तो नहीं है कि आपकी आदतें ही स्किन को बेजान कर रही हों। स्किन रूखी होने पर अपनी सुंदरता खो देती है, सनलाइट के अलावा और भी ऐसी चीजें है जो आपकी स्किन को नुकसान पहुंचा सकती हैं। कुछ आदतों में बदलाव करकेअपनी स्किन को बेजान होने से बचा सकते हैं। घंटों एसी में बैठे रहने से भी त्वचा की नमी कम हो जाती है। इस कारण त्वचा रूखी होने लगती है। लगातार गर्मी से ठंडक और ठंडक से गर्मी में आने से भी त्वचा खराब होती है।अगर इस्तेमाल करते भी हैं तो तापमान बहुत कम न रखें। गर्मियों में गाड़ी के शीशे खोल कर या बाइक पर रफ्तार में, तेज हवा में ड्राइव पर जाने से मूड फ्रेश हो जाएगा तो हां, ऐसा हो सकता है लेकिन इससे आपकी त्वचा का क्या हाल होगा आप सोच भी नहीं सकते। यह तेज हवा त्वचा के सेल्स को बर्बाद कर सकती है।

वास्तव में ईरान हमारी और आपकी कल्पना से एकदम अलग देश है। जैसा दिखाया जाता है वैसा नहीं है ईरान। वहां भी आजादी है, हंसी है, खुशी है और जिंदगी जीने वाले जिंदादिल लोग हैं। ईरान में रह रहे लोगों की लाइफस्टाइल उस धारणा से बिल्कुल दूर है, जो यहां के कट्टरपंथियों ने दुनिया को दिखाने की कोशिश की है। बाकी देशों की तरह जुर्म और हिंसा यहां रोजाना की जिंदगी का सच है, लेकिन कुल मिलाकर ईरान एक ऐसा देश है, जो कट्टर परंपरा और आधुनिक संवेदनशीलता के बीच का रास्ता निकालने की कोशिश में लगा है।

अफगानिस्तान के लिए पाकिस्तान को छोड़कर एक नया मार्ग खोलने के प्रयासों के तहत प्रधानमंत्री ईरान यात्रा के दौरान चाबहार बंदरगाह के पहले चरण के विकास के लिए उसके साथ एक अनुबंध पर हस्ताक्षर करेंगे। मोदी की शिया मुसलमानों के देश ईरान की यह पहली यात्रा है। ईरान का नाम जेहन में आते ही एक ऐसे इस्लामिक देश की छवि उभरती है, जहां नियम-कायदे बहुत सख्त हैं। हालांकि, इस छवि के पीछे काफी हद तक ईरान और अमेरिका के कट्टरपंथी हैं।

इन्होंने ईरान की ऐसी छवि दिखाने की कोशिश की, जो पश्चिमी सभ्यता और आधुनिकता का विरोध करती है। इस्लामिक क्रांति के बाद ईरान में काफी बदलाव आया है, लेकिन फिर भी इस देश की असल तस्वीर इस राजनीतिक दिखावे से काफी अलग है। ईरान में रह रहे लोगों की लाइफस्टाइल उस धारणा से बिल्कुल दूर है, जो यहां के कट्टरपंथियों ने दुनिया को दिखाने की कोशिश की है। बाकी देशों की तरह जुर्म और हिंसा यहां रोजाना की जिंदगी का सच है, लेकिन कुल मिलाकर ईरान एक ऐसा देश है, जो कट्टर परंपरा और आधुनिक संवेदनशीलता के बीच का रास्ता निकालने की कोशिश में लगा है। इस कोशिश का सबसे ज्यादा असर ईरान की सांस्कृतिक और औद्योगिक राजधानी तेहरान में देखने को मिलता है। यहां के लोगों की जिंदगी अन्य देशों के लोगों की ही तरह एकदम सामान्य है, बात चाहे पहनावे की हो या फिर अपने शौक पूरे करने की। महिलाएं और लड़कियां बराबरी में यहां बाहर काम करती दिखाई दे जाएंगी। महिलाओं को जिम से लेकर हुक्का बार और पार्टीज में आसानी से देखा जा सकता है। जाहिर है किसी भी देश के बारे में कोई भी राय वहां की सरकार और वहां के राजनीतिक परिदृश्य को देखकर नहीं बनानी चाहिए।

## युवाओं में हुक्का

हुक्का वैसे तो बहुत समय से ईरान और अन्य एशियाई देशों में इस्तेमाल किया जाता है। आजकल ईरान में हुक्का यहां के युवा वर्ग की पहली पसंद बन गया है। तेहरान सहित कई अन्य शहरों में आप हुक्का बार में यहां के युवाओं को हुक्के का लुत्फ उठाते देख सकते हैं। ईरान की खूबसूरती किसी के भी दिल को जीत सकती है। इराक, तुर्कमेनिस्तान, पाकिस्तान और अफगानिस्तान से घिरा हुआ ये देश इरान आए-दिन सुर्खियों में बना रहता है। पर अगर आप इस बड़े से देश की सुंदरता पर गौर करें, तो ये आपका दिल जीतने के लिए काफी है। टूरिज्म की नजर से इरान किसी के लिए भी एक मस्ट-विजिट नेशन के तौर पर देखा जा सकता है। यहां की प्राचीन इमारतें, मॉडर्न लाइफस्टाइल के बीच भी पुराना-सा अहसास और यहां की संस्कृति, सभी कुछ सुंदर है। इरान युनेस्को के 19 रेजिस्टर्ड साइटों में से एक है। इस देश में 1300 प्रोजेक्ट्स का इंवेस्टमेंट पैकेज हो रखा है। स्कीइंग के लिए इरान का नाम आपके जेहन में नहीं आता होगा।

## मधुर संबंधों का इतिहास

ईरान के साथ भारत के संबंध सदैव मधुर रहे हैं। ईरान और भारत का अपना साझा इतिहास भी रहा है। भारत और ईरान दोनों की प्राचीन सभ्यताएं हैं। संयुक्त भारत के विभाजन से पूर्व दोनों पड़ोसी मुल्क थे। ईरान में कई भारतीय परिवार रहते थे जो 1920 से ईरान में बस रहे थे उनमें सबसे बड़ी संख्या सिख और गुजरातियों की थी। वे 1950 से ईरान की राजधानी में आकर बसने लगे। ईरान प्राचीन सिल्क रूट का मार्ग भी है जो योरोप तक जाता है। गुरु नानक देव इसी मार्ग से मक्का गए थे। सिख इस स्थान का बहुत सम्मान करते हैं कहते हैं जब संयुक्त भारत का बंटवारा हुआ सन 1947 में जाहदान के आसपास रहने वाले पंजाब के बाशिंदे यह नहीं जानते थे हिन्दोस्तान किधर है ईरान की सीमा उनके क्षेत्र से जुडी थी इसलिए वे वहीं बस गए और वहीं के हो गए। कहते हैं ईरान और पाकिस्तान की सीमावर्ती शहर जाहदान का नाम एक सिख के नाम पर रखा गया था पहले इस शहर का नाम दूजद आब था। जाहदान एक सूखा क्षेत्र है। एक बार ईरान के शाह दुजद आब प्रदेश गए वहां उन्हें एक नेक दिल सिख को सबके साथ रहते देख कर हैरानी हुई उन्होंने इस प्रदेश का नाम उस सिख के नाम पर रख दिया जिन्हें वहां के बाशिंदे जहेदस पायस कह कर पुकारते थे। अतः प्रदेश का नाम ही जाहदान हो गया।

## उतनी बंदिशें नहीं

ईरान के राजनेताओं और मौलाना मौलवियों को टीवी या इंटरनेट पर बोलते देख लगता है कि ईरान में भी और इस्लामिक देशों की तरह हर चीज बैन होगी लेकिन ऐसा नहीं है। यहां हर वो चीज है जो किसी और देश में होती है। शराब, नाईट क्लब, हसीनाएं और आजादी। ईरान में इस्लामिक क्रांति के बाद हालात काफी बदले हैं लेकिन फिर भी ईरान में उतनी बंदिशें नहीं हैं। ईरान की राजधानी तेहरान किसी पश्चिमी देश से कम नहीं है। नाईट क्लब, शराब, जगमगाती लाइट्स सब कुछ है तेहरान में। कभी तेहरान में जाकर देखिये वहां के निगह क्लब,वहां का संगीत और वहां की हसीनाएं देखकर आप पेरिस और लास वेगास को भी भूल जाएंगे। फैशन की दुनिया में भी ईरानी मॉडल्स का काफी नाम है। यह मत सोचिये कि ये मॉडल्स हिजाब पहन कर रैंप पर आती हैं। रैंप पर इनके जलवे ही कुछ और होते हैं।

## महिलाओं की लड़ाई

ईरान की महिलाएं न सिर्फ खूबसूरती में सबसे आगे हैं अपितु अपने अधिकारों के लिए लड़ने में भी आगे हैं। क्रांति के बाद महिला राजनीतिज्ञों की संख्या में कमी तो आई है पर आज भी इनका राजनीति में पूरा दखल है। ईरान में महिलाओं को वोट देने का अधिकार भी है और विरोध प्रदर्शन का भी। समय समय पर सरकार के ऊल जुलूल फैसलों पर यहां की महिलाएं अपने अपने तरीके से विरोध प्रदर्शन करती हैं। मिसीह एलीनेजाद ईरानी महिला पत्रकार और सामाजिक कार्यकर्ता हैं। महिलाओं के अधिकार को ले कर ईरान में इन्होंने एक अलग ही तरह का विद्रोह छेड़ रखा है। 1979 से ईरान में महिलाओं के लिए पब्लिक में हिजाब पहनना अनिवार्य है। इसको न पहनने पर यहां कानूनी कार्रवाई की जाती है। 2009 में ईरान की लगभग 30 लाख महिलाओं पर या तो मुकदमे चलाए गए या जुर्माना लगा। इसे ले कर एक तरह से लोगों में विद्रोह की आग धीरे-धीरे सुलग रही है। लेकिन रूढ़िवादी लोगों की सोच भी इसमें आड़े आ रही है। ईरान में बिना हिजाब के महिलाओं का घूमना एक तरह से अपवाद ही है, लेकिन मिसीह एलीनेजाद जैसी कुछ बहादुर महिलाओं ने इस अपवाद को नकार के रख दिया।

# सोच से जुदा है ईरान की जिंदगी...

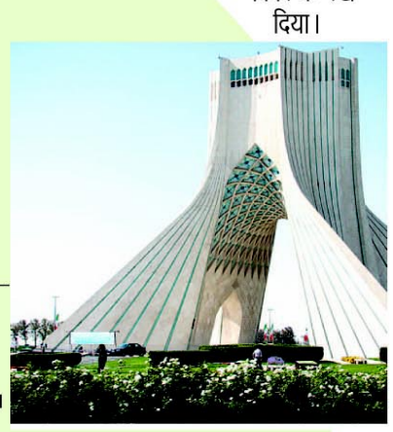

## हिजाब की पाबंदी

ईरान के शाह मोहम्मद रजा पहलवी, पहलवी डायनेस्टी के आखिरी शाह थे उन्होंने आर्य मिहिर की उपाधि धारण की थी। वे प्रगति शील थे और धार्मिक सम भाव में विश्वास करते थे लेकिन शाह के खिलाफ क्रांति का माहौल बना। काफी खून खराबे के बाद इस्लामिक सरकार सत्ता में आई। अब ईरान में डाक्टरों की जरूरत थी ईराक के साथ युद्ध भी हो रहा था। अतः मुख्यतया भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश से डाक्टर ईरान में काम करने आए। यह नए सिरे से बदलाव का समय था। अचानक वहां सब कुछ बदल गया। सबसे अधिक महिलाओं के अधिकारों का हनन हुआ। वहां की महिलाएं प्रगतिशील थीं उन पर किसी भी तरह की पाबंदी नहीं थी। वे योरोपियन लिबास पहनती थीं अब उनको चादर में अपने आप को लपेटना पड़ा। हिजाब की पाबंदी को विदेशियों पर भी लागू किया गया। ईरानी स्वभाव से मेहमान नवाज हैं। उन्होंने कभी सोचा नहीं था उन्हें ऐसी आजादी मिलेगी सब कुछ बदल जाएगा।

## तेहरान में गुरुद्वारा

तेहरान में सिखों का गुरुद्वारा है। यहीं एम्बेसी का स्कूल है। यहां भारतीय बच्चे पढ़ते हैं। ईरान में सात वर्ष का बच्चा स्कूल जाता है। भारतीयों के बच्चों के लिए एम्बेसी के स्कूल के साथ गुरूद्वारे में भी क्लासेस लगती हैं। स्कूल में सीबीएसई का कोर्स पढ़ाया जाता है और परीक्षा रे पेपर भारत से जाते हैं। सिख समुदाय के लोग वहां अपने देश की तरह रहते हैं। इस समय प्रवासियों की चौथी और पांचवी पीढ़ी रहती है लेकिन अभी तक वे भारतीय नागरिक हैं। इससे ईरानियों को मिलने वाले अधिकारों से वे वंचित हैं। वे ईरान की नागरिकता चाहते हैं। वहां प्रवासियों को सम्पति खरीदने का अधिकार नहीं है। व्यापार में भी निवेश करने के लिए ईरानी पार्टनर चाहिए। भारतीय कंपनियां ईरान में कोल, गैस, रेल की पटरियां बिछाने, शिपिंग और खेती बाड़ी के काम में निवेश की इच्छुक हैं जिसके अवसर भी कम नहीं हैं। तेल की कीमतें घटने के बाद ईरान अन्य क्षेत्रों में विकास के अवसर खोज रहा है।

## बालों को लहराने के लिए

फिलहाल मिसीह एलीनेजाद अमेरिका में रहती हैं अपने आस-पास महिलाओं को बिना हिजाब के, बिना किसी शिकंजे के और एक आजाद सोच के साथ जीते देखना उन्हें रोमांचित करता है। मिसीह एलीनेजाद ने अपनी बिना हिजाब वाली तस्वीरें फेसबुक पर पोस्ट करनी शुरू कीं। लोग देखते, कमेंट करते। कुछ अच्छे कमेंट करते, तो कुछ अपनी गंदी सोच को भी लिख कर जाहिर करते, लेकिन उन्होंने जवाब देना बंद नहीं किया। एक महिला का ईरान में बाल खुले रखना कानूनी जुर्म है। आज भी कई महिलाएं अपनी आजादी के लिए एक दूसरे का हाथ थामे खड़ी हैं। हिजाब से लोगों को नफरत नहीं लेकिन उसकी अनिवार्यता एक तरह से बंधन बन जाती है। मिसीह एलीनेजाद ने उन लोगों के साथ काफी तस्वीरें खिंचवाई हैं, जो महिलाओं के लिए आजादी के इस आंदोलन को समर्थन कर रहे हैं। इस फेसबुक ग्रुप को कई महिलाओं ने अपना औपचारिक समर्थन भी दिया है। खुली हवा में अपने बालों को लहराते देखना उन्हें काफी अच्छा लगता है।

# फिल्म देखने का जुदा अंदाज...

**दुनिया** के किसी भी कोने में चले जाएं हमें थिएटर यानी की सिनेमा हॉल तो देखने को मिल ही जाएंगे। सिनेमा हॉल में लोग मूवीज देखने जाते हैं लेकिन जिन थिएटर की बात हम कर रहे हैं वहां मूवीज के साथ-साथ लोगों के कंफर्ट का भी खास ध्यान रखा गया है। इन थिएटर के अंदर लोग बोट पर, कार पर, बाथ टब या आरामदायक सोफे पर बैठकर फिल्में देखते हैं।

## ग्रीस का ओलिंपिया थिएटर

ग्रीस के ओलिंपिया थिएटर की खास बात यह है कि यहां पर लोग बैठ कर नहीं बल्कि लेटकर फिल्म का लुत्फ उठा सकते हैं। इसकी सीट को आरामदायक बिस्तर का आकार दिया गया है। इस पर लेट कर लोग मूवी का लुत्फ उठा सकते हैं। ओलिंपिया थिएटर का डिजाइन आर्किटेक्ट स्टैवरोस क्रिस्टिडिस ने किया था।

## साई-फाई डाइन-इन थिएटर

अमेरिका के ओरलैंडो के साई-फाई डाइन-इन थिएटर में जो कुर्सीयां लगी हैं,वे कार के आकार की हैं। इसमें बैठकर आप न सिर्फ मूवी देख सकते हैं, बल्कि सीट पर ही लंच या डिनर भी ऑर्डर कर सकते हैं।

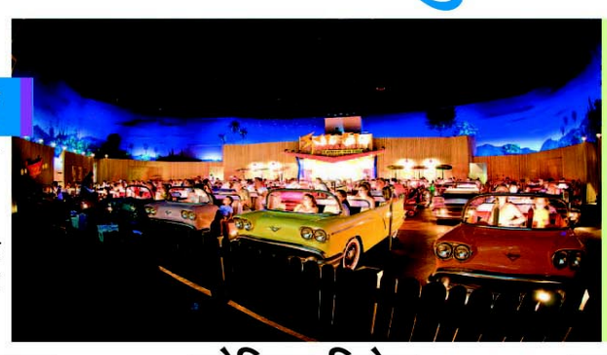

## आइनॉक्स थिएटर

वडोदरा का आइनॉक्स थिएटर दर्शकों को आलीशान बिस्तर पर लेटकर फिल्में देखने का मौका मिलता है। इसकी प्रत्येक बिस्तरनुमा सीट पर दो लोग लेटकर फिल्में देख सकते हैं। यह थिएटर गुजरात के वड़ोदरा स्थित रिलायंस मॉल में हैं।

## पेरिस का मूवी थिएटर

यह मूवी थिएटर सबसे अलग है। इसमें सिटिंग अरेंजमेंट सबसे अनोखा है क्योंकि इसमें नाव के आकार की सीटें है। मूवी देखने से पहले सभी को चश्मा पहनना होता है।

## इलेक्ट्रिक सिनेमा

लंदन के नॉटिंग हिल का इलेक्ट्रिक सिनेमा हॉल अपनी खूबसूरती के कारण दुनिया भर में मशहूर है। इसमें महरून रंग के सोफे लगे हुए है। इनके सामने बहुत ही एटरेक्टीव लैंप लगे हुए हैं।

## न्यूपोर्ट अल्ट्रा सिनेमा

न्यूपोर्ट सिटी का न्यूपोर्ट अल्ट्रा सिनेमा 3डी टेक्नोलॉजी पर पूरी तरह आधारित है। इसमें प्राइवेसी का भी पूरा ख्याल रखा जाता है। इस सिनेमा हाल में ज्यादातर कपल्स जाते हैं।

## हॉट ट्यूब सिनेमा

लंदन का हॉट ट्यूब सिनेमा घर अपने अनोखें अंदाज के कारण दुनियाभर में मशहूर है। इसमें आरामदायक टब लगे हुए हैं, जो पानी से भरे हुए हैं। यहां आप अपने परिवार या दोस्तों के साथ मूवी देख सकते हैं। यहां मूवी देखते वक्त ड्रिंक्स पर भी कोई पाबंदी नहीं है।

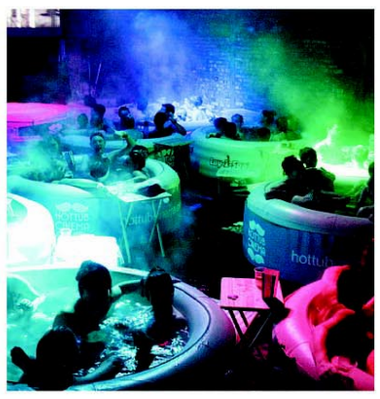

मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश शर्मा द्वारा अजय त्यागी के लिए पी.जी. इंडिया लिमिटेड एमआईई, कालापहाड़, गुवाहाटी-16 से मुद्रित एवं **गुड लक पब्लिकेशंस, हाउस नं. 30, डी. नेउग पथ, डोना प्लैनेट के नजदीक, एबीसी, जीएस रोड गुवाहाटी-5 से प्रकाशित।**
**संपादक : राकेश शर्मा,** मोबाइल : 94350-14771, 97070-14771 ● **कार्यकारी संपादक : डॉ. आसमां बेगम ● फोन : 0361-2960054 ( संपादकीय )** e-mail : viksitbharatsamacharghy@gmail.com, **( सभी विवाद सिर्फ गुवाहाटी न्याय क्षेत्र के अधीन )**